"स्वर्गारोहഁ"

ज्ञ

दाक्६र साध' हो गया, गा¤व में खबर सन्न से फैल गयी । स्वारथ दास अजोधा जी से ३ूम के आये हैं, दँक्६र उनके ग'रु भाई से कंछी ले रहे थे । वे अपने नितर से देख के आये है । ....मर१ीया कह रही है, दँक्६र भी ख'ब आदमी थे । जब मोह माया में रहे तो उसी तरह, त्याग दिया तो उसी तरह । हमारे और उनके बारे में लोगों ने क्या(क्या कहा पर जानते हम और वे ही हैं.....हा¤ दँक्६री मैं उन्हीं से कराती थी, पर लोगन को तो सब धान बाइस पसेरी । दँक्६र तो सन्यासी उसी समय हो गये थे । अभी तो खाली अजोधा जी गये हैं । ....हा¤१ स'नयनवा कह रही थी, म'¤ह देख कर तो साचो दया आ जाती थी । कैसे लमहर लमहर दा१ी ब९ा लिए थे, आ¤खें हरदम लाल लाल जैसे द'निया¤ भर की रंजिस अपने ही अन्दर पी लिया हो, नीलकं७ की तरह भीतर जहर उतार लिया हो । जब खेलने खाने के दिन थे, मैं ही उन पर रीझ गयी थी । जब वे दरवाजे पर प९ते थे, मैं उनके सामने जाकर बै७ जाती थी । कोई भी ५ावारीक मेंरी आ¤खों पर मोहित ह'ए बिना नहीं रहा । वे कहते थे कि त'म्हारे नयनों में और म'खम०८ल पर ऐसी आभा हैं कि भगवान भी मोहित हो जायेगा । स'रसती जी को भगवान ने बनाया और अपने ही मोहित हो गये । एक दिन जब अकेले में मैं ही आगे ब९ना चाहती थी तो म'झे ७क'आ मार दिया । मेंरा ३ू¤३६ सरका कर दिन्दू नारी की महत्ता बतलाने लगे । अचरज से उनका म'¤ह ताकते रह गयी । आ¤खों में आ¤सू आ गये थे मेंरी, अपनी नीचता पर । कैसा महाप'रुष है यह, कितने दिनों से हमको बहलाता रहा है । ऐसा प्यार कही स'ना है कोई ? कमला अगर होती तो अपने सारे पत्र खोलकर बतला देती । जीवन के बू¤द ब¤ूद दर्द को उ९ेल कर रख दिया था ।

बिमला स'नी तो कोई अचरज नहीं ह'आ । उसको सब क'५ मालूम था । उदास आ¤खों से उत्तर की ओर देखा । उत्तर दिशा की ओर पा०८व स्वर्गारोह० करने गये थे । दाक्६र स्वर्गारोहഁ करने गया है । उसको मालूम है, दँक्६र हमेंशा स्वर्गारोह० की बातें करता था, देखना करु० एक दिन मैं दाक्६री ५ो८ दू¤गा । इन भ'ख से विलविलाते लोगों की दँक्६री कौन कर सकता है ? इस दाक्६री के लिए पश्चिम का दँलर चाहिये ।

दँक्६र सन्यासी हो गया । वही दँक्६र जिसकी प्रेम चर्चायें हर ल८की के साथ होती थी । जो सदा ल८की और औरतों के वीच में रहता था । हर औरत उसे पसन्द करती थी । अगर सचम'च दँक्६र द'स्चरित्र था तो यह असम्भव था कि हर ल८की उसे पसन्द करे । औरतों की यही सबसे ब९ी प्रकृति है कि वह द'स्चरित्र होकर भी द'स्चरित्रता पसन्द नहीं करती । दँक्६र कदापी द'स्चरित्र नहीं था, पर औरतों को पसन्द करता था । वह कहा करता था कि औरतों को भगवान ने दया, करुഁ, प्रेम स्नेह और मातृत्व का अवतार बनाकर भेजा है । मर्द संसार में हाहाकार मचा रखा है, औरत उस हाहाकार को करुഁमयी होकर पी रही है ।

प'लिस इन्सपेक्६र एक ल८की से नाम पता पू५ रहा था । अखवार में ५पा है । कुर्मिनपुरवा शहर के नजदीक है, सब खबर मिलती रहती है । अखवार भी प९ते हैं लोग, राष्ट्रवादी(विद्यार्थी म०८ल वाले । बाकी लोग रे९ियो स'नते हैं । कुर्मिनपुरवा में अधिकांश ३र में एक भैंस और एक रे९ियो है । लोग भैंस का द'ध बेचते हैं और एक रे९ियो किनते हैं । लेदी का६ रहे हैं और झूमका गिरा रे स'न रहे हैं । परन्त' मंतीरी ` का भाई खाली वी.वी.सी. स'नते हैं, अंग्रजी प९ लिखे है, गाना नहीं स'नते हैं । लोग कहते हैं अन्तरमूखी आदमी हैं, किसी से बोलते नहीं हैं, गाना(वाना नहीं स'नते हैं । ब९े भले आदमी हैं, परन्त' जनता बहू से पक९ा

DO NOT COPY

गये तो मंतीरी ने द’सरी शादी कर दी, सेमरी में, बह’त बदनामी करवाना नहीं चाहते थे । मोजफरप’र की रंDी आयी थी । स’नते है इसीलिए उन्हें रात को कोहवर में जाने में लेɘ हो गया था । जब लोग खोजने लगे तो सामियाना में ये राउɖी से जल्दी से निकल आये । कहने लगे पैखाना गये थे । बेचारे कितने दिनों तक पहली बीवी का गम ९ँते रहते, भले आदमी है ।

इन्ɘरभीयू में ५पा था:(अखवार में लिखा था :(“ऐ ɤँकरी, कौन है वे ୨ नाम पता लिखवाओ हम त’म्हारा चालान करेंगे । का७मा०Dू में आकर धन्धा करती हो, बालाजू के जंगलों में जाती हो? जानती नहीं कि नेपाल में धन्धा(वन्धा नहीं होता ?”

नाम पता पू५कर क्या करोगे बाबू जी, चलान करना है, कर दो, पकD कर तो ले ही आये है । परन्त’ का७मा०Dू में जो धन्धा होता है वह तो मैंने कही नहीं देखा ।”

“बगैर नाम पता का चलान कैसे बनेगा वे, धन्धेवाली, र०Dी ।”

“हाȸ, नाम जानकर करोगे क्या बाबू जी ୨ कलकता में रहती हूȸ, धन्धा करती हूȸ । ये नेपाली बाबू बDे भले मान’स थे, बोले का७मा०Dू दिखला दूȸगा, चली आयी ।” “कैसे बदचाल औरत है ୨ ओ र०Dी मैं पता पू५ रहा हूȸ बोलोगी कि इस द’खहर०ँ झा को पी७ पर ....जहाȸȸ रोल लगेगा तो सीधी हो जायेगी, मदेशिया रा०ी ।”

“तो मेरा पता लिखो बाबू जी,

मोती मसजिद, लाल किला, दिल्ली ”

“बिल्क’ल पागल है क्या, मोती मसजिद लाल किला में स’रक्षित है, औरंगजेव का परसनल मसजिद है, उसी में वे नेवाज प९ते थे ।”

“ठीक बोला बाबू जी, मोती मसजिद स’रक्षित है, वह स’रक्षित रखने की चीज है, लेकिन मैं त’म्हारे हाथो चलान हो रही हूȸ । वह स’रक्षिंत रखने की चीज है, उस में म’गलकलाकारी है, मुगलों का इतिहास है ,पर्यɘकों से Dँलर आता है । म’झ में कौन सी म’गलकलाकारी ɩपी ह’ई है, म’गलों का इतिहास कहाȸȸ है म’झ में, म’झसे Dालर आयेगा देश को कि मैं स’रक्षित रखी जाउȸ । पागल नहीं हूȸ बाबू जी लेकिन मेंरी बहनें पागल हो गयी हैं । क्या करोगे बाबू जी जानकर ? जयप्रकाश नाराय०ँ को त’म्हारे नेपाल का जेल तोD कर निकालने वाले ग’लाली को लकवा मार दिया है । एम.पी.एम.एल.ए. कहते हैं कि पेन्सन तो मिल ही रहा है । ....और क्या कोई पैगम्वर, पीर हैं कि कंधे पर उठाकर नाचे ? तेरह बरस की नव दम्पति को जेल में ७ूस दिया गया था । पति को फȸासी की सजा हो गयी थी । औरत भी थोDी चालू होगी, पति के साथ स’रागी हो गयी थी । महतमा गाȸधी गये थे फाȸसी रोकवाने, परन्त’ अंग्रेजों ने फȸासी दे ही दी । औरत भी ठी७ थी, Dȸɖी रही । स’राज आया तो जेल से ५’ɘ गयी और हिन्दूस्तान के इतने लम्बे चौDे जेल में इस तरह ग’म हो गयी कि कही पता नहीं चला । ......कितने स’रागियों के अDDे तृप्त हो गये । प’लिस की चौकी दर चौकी ɜमती रही । पता नहीं कितने प’लिस वालों के हाहाकार को पी Dँला उसने, अब बूɖी हो गयी है, पागल हो गयी है, फूɘपाथों पर सोती है, जू७ पत्तल चाɖती है, पɘना में देखा था । ....जिन्होंने ने अंग्रेजों का साथ दिया वे मंत्री है, माउंबेɖेन के दोस्त, साथी । आपके नेपाल में भी रा०ाओं से ब९कर कोई थोDे है ।सब क’५ तो वे ही हैं ।

इनसपेक्ɘर मैं ऐसा स’राज नहीं चाहती । इसीलिए धंधा करती हूȸ कलकत्ते में । त’म को जो क’५ करना है करो, मैं बहाद’र शाह जफर की पोती हूȸ । दिने इलाही म’गले आजम का खून जिसने अनारकली को दीवाल में जीन्दा च’नवा दीया था ।”

इन्सपेक्ɘर को जैसे का७ मार गया “क्या बकती हो त’म” “हाȸ इन्सपेक्ɘर मैं बकती हूȸ, परन्त’ मैं उसी बहाद’र शाह जफर की पोती हूȸ जिसने लिखा है ।

DRAFT COPY

"दो गज जमीन भी न मिली कूचे यार में"

अब मैं उनके कूचे यार में स'राज बा¤६ती हू¤ । कलकत्ता से बा¤६ते बा¤६ते का७मा०ड्ू चली आयी हू¤ । पता नहीं इस स'न्दरी ने स'रा के कितने ही पेग कितने ही स'राजियों को अपने हाथों से बा¤६ा है । कलकत्ते से शुरु होकर दिल्ली लखनउ और अब का७मा०ड्ू में भी हर जगह मेंरे स'राज ब¤६ च'के है । लोग इस स'राज को बड्ा पसन्द करते है । मरुभूमि में पैदा ह'इ यह नस्ल, बबूल की तरह शख्त और कसी ह'इ है । लोग इसे इतने चाव से ??..........हमारी इज्जत बचायी थी । जब ज्ञण दिन उनके खन्दक में लड्ती रही तो उन्होंने हमारी रक्षा कर दी, कलकत्ता पह'चा दिया । गजव होते हैं ये फौजी भी, इनका बस चलता तो इन्दिरा गा¤धी का सर का६ कर और हमको लेकर कही भाग जाते । परन्त' इनको कोई मजबूरी होती होगी । मैं बंगला देश में भी जा च'की हू¤ म'जिवुर रहमान के समय, जब सातवा¤ वेड्ा आ चुका था वड्ी मुसीवत में फ¤स गयी थी । मुक्तिवाहीनी ने हमारी इज्जत वचायी थी । जव ज्ञण दिनो. तक उनके खन्दक में लड्ती रही तो उन्होने हमारी रक्षा कर दी ,कलकत्ता पहु¤चा दिया । गजव होते हैं ये फौजी भी । इनका वस चलता तो ये इन्दिरा गांधी का सर का६ कर हमको लेकर कही भाग जाते । परन्तू इनको कोइ मजवूरी होती होगी । कू५ लोग लड्ते रहे ,कू५ लोग अपने सुराज में ड्ुवकी लगाते रहे । पुरे ज्ञण दिनों के वाद खन्दक में से् निकली तो सातवां वेड्ा जा चूका था । हिन्दुस्तान पर से खतरे का आसमान साफ हो चूका था । पाकिस्तान वं६ गया था मैं अभी भी हिन्दूस्तान में रह गयी थी हिन्दूस्तान वं६ गया तभी से हिन्दूस्तान में हु¤ । जाना तो मैं पाकिस्तान भी चाहती हु¤ लेकिन अभी नहीं जा सकी हु¤ ।

इन्सपेक्६र गस खाकर गिर पड्ँ, आगे नहीं स'न सका ।

इन्सपेक्६र नहीं होगा, प'लिस वाले को कही ऐसा होता है, नाक क६वा दिया प'लिस वालों का, कल पथलैया में सोह्ले वर्ष की लड्की बलात्कार से मर गयी, निजग९ बारा जिल्ला की । ओहपानी से एक नौजवान आया था, निजग९ में द'कान किया था । ओहपानी के लोगों को तो और क'५ भी मय्यसर नहीं होता । सब भाग भाग कर रोदी वास्ते इधर आते है । बेचारा आया, पैसा और रोदी से जीवन में भी रस का संचार हो गया । ज्योति दोकान में आती, दोनो मिलते । मिलते मिलते एक दिन नैन मिल गया । एक दिन ३र से निकल गये म'ग्लान की ओर । समाज यहा¤ मिलने नहीं देगी । तू मदेसिया हो, मैं पहाड्नी हू¤, हम वही ३ेसला बनायेंगे । .... रक्सौल प'लिस चौकि पर चार रोल मारा प'लिस ने । क'५ मार से, क'५ प'लिस वाले के कहने से यूवक भाग खड्ँ ह'आ । प'लिस चौकी पर उस रात भोज ह'आ(इन्नरभोज । द'सरे दिन लड्की यस.पी. साहब के पास पह'¤चा दी गयी । देख कर यस.पी साहब के म¤'ह में भी पानी भर आया, जैसे द'कान में प'री जलेवी देख कर होता है । उस रात वह उनके निजी हाजत में रही । तिसरे दिन एक प'लिस के हवाले किया, इसको निजग९ पह'¤चा दो । प'लिस तो सब क'५ पहले ही से देख रहा था । ....साले, हरामजादे, निजग९ पह'¤चा दे, सबके नौकर है । रसलिल्ला हो गया, पह'¤चा दे हम ? .....सो वह लेकर अपने ग९ को चला, निजग९ , अपना ग९ । उस अपना ग९ में पहले म'साफिरखाना आया, फिर पथलैथा, फिर ६रक ड्राइभर, विद्यँर्थी, और जो भी इस बात को जान लिया सो । सोरे बरस की उमर पैतालिस आदमी को कैसे सहले । बेहोस हो गयी, भेड्ीये नोचते रहे, पखेरु उड् गया, भेड्ीये नोचते रहे । इस तरह वह लड्की निजग९ पह'¤चा दी गयी । निजग९, अपना ग९, भगवान का ग९ । उसका स्वर्गारोह० हो गया ।

स्वर्गारोह० तो कल भदई बहू का भी हो गया । आज कल तो बह भीख मा¤ग कर खाती थी । रात को सोने गयी तो स'वह लोगों ने बाहर निकलते नहीं देखा । जाकर देखा तो ………… कानू लोग चिता जला कर आ गये है । वह राजपूत कन्या थी, लेकिन कानू लोग दाह(संस्कार किये है । भदई का ड्रोद्दा भाई क्रिया लिये हैं । म'ह में आगी देने वाला भी कोई नहीं था ।

जब तक देह में जान थी, तबतक भदई और भदई बहू धनेसर के खेतों में काम करते रहे । फिर एक दिन भदई रात को सोये तो उ७ ही नहीं । उसके बाद भदई बहू उसी गा¤व में भीख मा¤गती रही ।

जिस दिन से भदई साह चले गये उसी दिन से वह द'खी दिखलाई प८ती थी, नहीं तो उसके चेहरे पर का आत्मसंतोष सभी लोगों को अपनी ओर खिच लेता था । कितना सहज और स्वाभाविक तरिके से उसने जिन्दगी को स्वीकार किया था । दौलत और स्६६ चले जाने का उसको कोई गम नहीं था । लोगों ने कभी कोई शिकायत करते ह'ए नहीं स'ना ।

गा¤व(३र में द्दछ(छण वीश जमीन वाले लोग दौलत और स्६६ वाले कहलाते हैं । भदई वहू उसी स्६६ की मालकिन थी । विधवा मालकिन ।

अकेला राजपूत ३र था कुर्मिनपुरवा में । पर्दे की ओ६ उस लम्बे ५रहरे राजपूत मेंवा८ी औरत को ८¤सती थी । सोरे बरस की उमर में पति धेयानत हो गये । गौना कराके आयी और …… उसके शरीर को आज भी देखने वाले देखते रह जाते है । ऐसे ही शरिर को देख कर स'मित्रानन्दन पन्त ने लिखा होगा :(

उसका लम्बा ८ील(८ौल है,
उसकी ह८ी (का७ी चौ८ी ।
इस ख०८हर में बिजली सी,
उन्मत जवानी होगी दौ८ी ।

स'न्दरता नहीं, वह तो अव चाम भूल गया है, परन्त' उसकी कद(का७ी लोग देखते रह जाते हैं । बाप रे बाप बू९ी हो जाने के बावजूद भी सारे शरीर की ग७न कैसी है । लगता है किसी ओलम्पिक खिला८ी की तरह । न कही मांस ज्यादा न कम, न पे६ । बाल(बच्चा नहीं ह'आ पइलौ७ी में गर्भपात हो गया । इसी देह में जब राम भरोसे पू५ता है तो वह रोने लगती है -भदई के मरने के बाद वह ब८ी रोती थी -इसी देह में एक दिन जवानी अपना पूरा जोवन लेकर समा गयी थी । कैसी अल्ह८ता और मध'र संगीत होता है । परन्त' यह संगीत स'ना ही रहा गया था, जिस दिन पति का स्वर्गारोह० हो गया । कितने ही लोग हमें बहकाने की कोशिश नहीं किये । कोई कैसे अपने पर काबू करे । ऐसे(ऐसे उत्तेजक शबद और कर्मो का परदरशन होता है, चरचा होती है कि अपने पर काबू पाना दूभर हो जाता है । परन्त' जब अपने हरवाह को देखती, देखती जब भदई के जब्ब८ कंधो पर हल को तो अपने पर काबू न कर पाती ।

………और एक दिन जब ननद ने रात को चार आदमियों को मेंरे कमरे में भेजकर अपने हो हल्ला करने चली गयी तो मैं बेसहारा हो गयी । जिन लोगों का मैं हाथ पक८ लू तो ५ो८ा नहीं सकते, वे लोग मेंरी आवरु लू६ने आये थे , मेंरी ननद उन लोगों से रोज रोज अपनी आवरु लू६वँती थी, अब वे मेंरी आवरु लेने आये थे । अरे वे लोग क्या मेरी आवरु लू६ते ……परन्त' मेंरी आवरु लू६ गयी, मेरी ननद तो यही चाहती थी । हल्ला ह'आ, लोग बाहर आये, ३र से चार आदमियों को भागते ह'ए देखा, स'वह से मेंरा चलना भी म'श्किल हो गया । लोग म'भपर थ'कने लगे, बहरी जाती तो तानों का बौ५ँर प८ता ………सतवन्ती बनती है, ८ूब कर पो७िया खाती है, अब सिंढी हल गया है तो म'¤ह से बकार नहीं निकलता । मैं

DO NOT COPY

स’नकर रह जाती थी, कोई अपना नहीं था, कोई मेंरे पास नहीं आता था । एक दिन भदई ने हिम्मत करके पूू दिया, मैं जो क’ू स’नता हूµ वह क्या सच है मलकिनी, विश्वास म’झे नहीं होता ? मैंने कहा था, क्यों भदई आपने देखा नहीं मेंरे कमरे से चार आदमियों को भागते ह’ए, फिर रुआµसा होकर उनसे कहा था, आµखों से लोर ६प से चू गया था, क्या आप को भी गाµववालों पर यकिन है भदई, म’झपर नहीं ? नहीं मालकिन, आप पर यकिन है । इतने दिनों से नमक, पानी खा रहा हूµ, देख रहा हूµ । यह रमरतिया आपको ३र से निकालने के फेर में है । गाµव भर के लौंदों के साथ त’म्हे निकालने का त्रिया(चरित्तर रचती रहती है । विश्वम्भर सिंह भी मउµगा है, राजपूत का रगत नहीं लगता है । मैंने कहा था कि भदई इसी पर तो विचार कर रही हुµ । किसी का हाथ पकद लूµ तो ०ँदँ नहीं सकता । कितने दिनों से तेरे कंधो पर हल आते जाते देखती हूµ तो देखती ही रह जाती हूµ, सोचती हूµ कि क्या इस जब्बद कंधों का सहारा म’झे मिल सकता है ? जब द’नियाµ ही ऐसी है तो क्यों नहीं इस कंधे का सहारा ले लूµ ? भदई मेंरी ओर देखते रह गया था । ..... और एक दिन जब गरभ रह गया तो हम लोगों ने यही तय किया कि भाग कर मोगलान चले जायें । बदँ सोच विचार कर कदम उ७ँया था, हमने, हमें कोई पूतावा नहीं था ।

वे भाग कर मोगलान चले गये । लोगों ने कितना थूका, धिक्कारा, लेकिन आज उसके चेहरे का आत्मसंतोष सबको निरश्त्र कर देता है । जो लोग उनको कच्चा खा जाने वाले थे वे और उनके बाल(बच्चे सभी, जब भदई और भदई बहू छण वर्षो के बाद गाµव वापस आये तो तमाशा देखने आये थे । सभी लोग बदे आदर के साथ दोनों को गाµव में जगह दिया ।तव नेपोलियन के खंजर की तरह, फ्राµस के अजायब३र ३र में, कुर्मिनपुरवा में उनको जगह मिल गयी थी । परन्त’ जगह नहीं थी तो उनके ०ँदे ह’ए ३र में । उसके भाग जाने पर उसकी ननद की म’राद पूरी हो गयी थी, यही तो वह चाहती थी, वहाµµ ननद का एक ूत्तर राज्य था ।

भदई बहू ने सारी दौलत को कितनी सहजता से अस्वीकार कर दिया था, यह उसके चेहरे का आत्मसंतोष बतलाता था । फिर भी कितने हाहाकार को पीया था उसने १

जो ही रक्षक, ओ ही भक्षक १

भरतप’र में सी.दी.ओ. साहव ने एक नरस से बलात्कार किया । एक मंत्री जी गोकर० में पकदँ गये तो दो प’लिस वाले को खोस दिये । गजव बात है, कह रहे थे, ये प’लिस वाले द्यूदी पर नहीं थे इसीलिए ऐसा ह’आ , नहीं तो कौन शाला हमको पकद लेगा । आदमी है, जानवर है । दोनो के सेक्स में कोई फरक नहीं होना चाहिए । हमको सेक्समंत्री बना दो, द’नियाµ में सेक्स को फिरी कर देंगे, नहीं ऐसे ही विलेक होगा । शाला हम भी पकदँ गये । ...... पकदँ गये तो क्या ह’आ ? हमको कौन शाला क्या करेगा ? साला परधानमंत्री को तो रोज बाµस करते है । .... च’प१ स६ अप, भागो साले फिर दोनों हमको म’µह नहीं दिखलाना । सोचा साले, हमारे जिला जवार के है, इसीलिए नौकरी दिलवा दी, नमक हराम । जानते नहीं हमारे खून में प’रखों का खून वह रहा है । एक सय चार बरस तक राज किया हमारे प’रखों ने इसी तरह? हम भी वैसे ही करेंगे । साला आज का दिन ही खराब था, अच्ूा अच्ूा १ हम सबको मजा चखायेंगे, हमारा मजा किरकिरा कर दिया ।

स६ाक १ स६ाक १ सदँक १ एक....दो... तीन...सौ बार गिना शिवचर०ँ ने । उसके बाद गिनना ०ोद दिया । प’लिस उनकी पी७ पर मारती रही, कब बेहोस हो गये पता नहीं । ू’६कर आये तो कहते थे, जीव६ परसाद ने एक चर० उनपर भी लगा दिया । जीव६ का खून हो गया । खूनी तो भाग गये, भले आदमी पकदँ गये । वह तो जवानी का खेला खाया ह’आ

DO NOT COPY

था, पहलवान थे जो सब क'५ सह गये । द'सरा होता तो ਏं बोल गया होता, दर्शन नहीं होता प'त्तरों का ।

धोवीचन्द को बन्द कर दिया । पहले मारा नहीं, खिドकी से शिवचरਠ को मारते ह'ए दिखलाया जाता ताकी ब'९वा देख कर ドर जाये । खिドकी पर एक एक प'लिस वाले जाते रहे.........क'५ ले(दे कर मामला सल्ट्ँलो, नहीं मार(मार कर भ'र्ता बना दिए जाओगे । ドी.यस.पी. भी गये । पर धोवीचन, शिवचरਠ से भी ब९कर पहलवान थे । अपने जमाने में, पलथी मार कर ९ला फेंकते थे तो ताド की फ'नगी पर पह'ਬच जाता था । ५ भाइ थे और सारे गाਬव को नाच नचाते थे । शिवचरਠ को तो एक थप्प९ अभी मार देंगे तो पानी पीने लगेगा । अभी भी स'वह साम पचासों बाल्दी पानी से नाद भरते है । वे ドरे नहीं । ...... माकी के गोド से च'स च'स कर धन जमा किया है इसीलिए तो लोग मखीचूस कहते है । बैलों को आज तक खरी नहीं खिलाया, खेतों में कम्परेसर नहीं ドँला, अपनी म'ドी पर गोवर ले जाकर पद्दाता हूਬ । ये सस'रे एक ही रात में सब ले लेना चाहते है । .... एक धेला नहीं है हमारे पास । हमको भी वैसे ही पीੲ लो, लेकिन पैसा नहीं है हमारे पास । आज मरेगें या वीहने, असी बरस का हो गया हਬू, हमको क्या आज ही पीੲकर मार दो, राम नाम सत्य हो जायेगा । पैसा नहीं है, धेला भी नहीं है, ...ドी.यस.पी. साहव भ्रख मार कर लौੲ आये ....किस धातू का बना है यह ब'९ा । कल हम इसका मरम्मत करेंगे ।

मिसिर जी का पतरा उलੲ गया है । वीसों आदमी ने ३र लिया है । मिसिर जी कहते है "ल५न ीक नहीं है । जब से खरहरा दिखलाई पドँ है तब से गरह बदल गये है । नवो गरह जमा हो गये है । ऐसा महाभारत के समय ह'आ था । महाभारत होगा । अभी त खाली जीवੲ मरा है । इ त जैसे किसन जी गाय चराते चराते भैंसास'र को मार दिया वैसा है । महाभारत तो अभी बाकी है । गाਬव में कोई निमन आदमी नहीं रहेगा । सिरिस मर गया, गोपाल बाब' का हवाइ जहाज का दूर३ੲना हो गया, मास्ੲर साहब को शराव ने पकド लिया, आधी रात को कौवाली गाते ह'ए ३र पर आते है । ले दे कर एक ドाक्ੲर था, वह भी साधू हो जायेगा । अजोधा धाम चला जायेगा, स'र धाम । .... एक मंतीरी बच गया है, उसमें क'५ स'भहा है । वह अच्छा वच्छा है नहीं । अच्छा आदमी को इस गाਬव में उपर ब९ने का गरह नहीं है, तो वह कैसे ब९ गया । वह अच्छा नहीं है, वह मੲ'किया गाह है समझना म'श्किल । ....इसीलिए मैं कहता हਬू, कि गाਬव में एक जग कराना होगा । गरह शान्ति का । कोई उपाय नहीं ।

"जग काहे का पंドी जी" शिवनाथ बोला "इ जो वीस हिन्दू समलात हो रहा है, वह क्या है ? बドँ जग तो हो रहा है, अब इ ਪੰੲका मोੲका से क्या होगा ? इस सब पंドी जी का अपने खाने का रास्ता है ।"

ही ही ही, हे हे हे, खी खी खी

"विस हिन्दू समलात नहीं भाई, विश्व हिन्दू सम्मेंलन बोलो" सत्यनारायਠ ने कहा । वह प९ँ लिखा राष्ट्रवादी विद्यार्थी है । "देखा नहीं विश्व भर के हिन्दू लोग आ रहे है । राजा प्रत्यक्ष् उद्३ੲन करने आये थे । उतना बドँ य१ कहाਬਬ होगा ? विश्व भर में एक ही तो हिन्दू देश है।"

"अरे हम तो कहते है वीस बन्दूक सम्मेंलन" राम भरोसे बोला "देखा नहीं वीसों मलेੲरी बन्दूक लेकर खドे थे । जब हम गये तो ५ँती पर रख कर कहा "ऐ उधर जाओ, नहीं तो सूੲ कर देगा । राजा का सवारी है ।"लगता था अंगरेजी मलेੲरी से ५ੲकर नेपाली मलेੲरी में भरती हो गया है । भाइ क'५ भी कहो, हम तो वीस बन्दूक सम्मेंलन ही कहते है । वीरगंज

Do Not Copy

के वीस मारवाडी मीलकर वीस बन्दूक सम्मेंलन करा दिया, बाकी क'५ नहीं । जग (ओग हम नहीं मानते ।"

गजब, अलवत्त बोलता है पे६'आ भी । जब से लीवर सिरोसिस हो गया तब से इसकी जीभ भी गजब गजव की बात निकालती है । लीवर सिरोसिस क्या ह'आ, जीभर सिरोसिस हो गया ।

हो हो हो, हे हे हे, ही ही ही ।

द्द

कुर्मिनपुरवा वीरगंज से दो मील उत्तर एक ५ोट्ँ सा गा¤व है । लोग कहते हैं किसी दिन इस गा¤व का जोट्ँ नहीं था । भिमगिरी नाम के किसी भिमगिरी जी ने बसाया । तेलिया मसान निकल गया तो वहा¤ से थोट्ँ ह६कर यह गा¤व बसा, तेलिया मसान ने भीमगिरी को संतान सहीत खा गया । अब नामो निशान के रुप में एक जगह उनका स्थान बना है । अब गा¤व की बहू बेदीया¤ शादी(ब्याह के अवसर पर माई(बरहम की पूजा के साथ, उनकी भी पूजा करती है ।

"मैंया भ्रका(भ्र'मर खेले अइनी रुउरी आ¤गना"

किसी जमाने में गा¤व चारों ओर से आम के बगैचों, बासों और भ्ररवेरों से धिरा ह'आ था । नौ सौ गा५ी था तो नौगा५ी कहलाया । बा¤सबारी में स'नते हैं सात दिनों तक टकैत ो५पे रह गये, किसी को पता नहीं चला । पर आज हालत ऐसी है कि एक दत'अन भी नहीं मिलता । लोगों के पर(पह'¤ना आते हैं तो ह¤सकर चले जाते हैं(कौन अपनी बेदी को इहा¤¤ वियाहेगा, बहरी के लिये भी आट नहीं है । मिसिर जी कहते हैं गा¤व में गरह दशा उसी समय से चला आ रहा है जब तेलिया मशान निकला था । एक बार एक ब्रहमचारी बाबा भी आये थे, गरह शान्ति कराने । गा¤व का गरह उनको ऐसा पकट्ँ कि जिन्दगी भर का ब्रह्मचरज यही पर ६ू६ गया । एक म'सम्मात को लेकर भाग गये । तब से न कोई किसी को गरह शान्ति के लिए ब'लाता है, न गरह शान्त होता है । मंतीरी भी वन मंत्री हो गया है धनेसर का भतीजा है, समूचे देश में ३ूम(३ूम कर वन लगाता है, पर उनके यहा¤ एक कइन भी नहीं है ।

इसी गा¤व में धनेसर रहते हैं, मंतीरी का चाचा । हरेन्द्र देव, नरेन्द्र देव और गिरिन्द्र देव उनके तीन लट्के हैं । दो लट्कीया¤ भी हैं, जिनके वियाह कर च'के हैं । जब धनेसर का जन्म ह'आ तो मर च'के थे । उनकी मा¤ ने इमाम साहव का दाहा जिनगी भर धरने को कहा, तो वे जी गये । असल सत है कर्बला के इमान साहेव में, उनकी म¤ा कहती थी । जब चार बरस के थे तो पिता का सरगवास हो गया, धनेसर कहते हैं । हैजे धू का दिन था उस समय, जब लोग ३ूरा से उ७कर रात को सोने जाते तो राम राम करके चलते, क्या पता इसमें से कल किससे म'लाकात नहीं होगी । एक दिन उनके पिता भी इसी तरह राम राम करके चले, रात को कै दस्त ह'आ और स'वह संसार से चल बसे । उनके ५ो६े भाइ पत्नी के साथ ही पहले ही चल बसे थे(बच्चे बच्चियों को ५ोट्कर । धनेसर की मा¤ ने अपने तथा अपने देवर के बच्चों को बट्े जतन से पाल(पोश कर बट्ँ किया ।

DO NOT COPY

धनेसर बढे थे इसीलिए वे मालिक ह'ए । इनके बढे होते ही गा¤व का गरह इनके ३र में ३'स गया । मिसिर जी कहते हैं, भाइ जिवेसर को लकवा मार दिया । इन्होने पैसा पानी की तरह वहाया, जहा¤¤ लोग कहते थे वहा¤¤ ले जाते । बढी सेवा बरदास से भाइ को ठीक करके खडा कर दिया । देवी दत्त राउत कहते हैं की कलियूग में ऐसा भाई मिलना म'श्किल है । पर जीवेसर के उपर उनके जवान बीवी का क'५ ऐसा करमासा था कि उनको द'वारा लकवा मार दिया । जवान औरत शरीर स'ख चाहती थी, बार बार नैहर भाग जाती थी । बडँ भाई राम की तरह संजीवनी देकर जीलाता था । पर प्रेम का ३व बडँ होता है । तीसरी बार जब जिवेसर की बीवी आयी तो एक दिन ऐसा क'हराम मचा कि उसी समय जीवेसर को तीसरी बार लकवा मार दिया । इस बार भाई ने क'५ भी किया, पर भगवान उन्हें नहीं रहने दिया, उनका स्वर्गारोह० हो गया । अब वे भी इस संसार में ज्यादा दिन नहीं रहना चाहते थे । कहते है मरते समय देवीदत्त राउत ने पू१ा था ....

जीवेसर ! हो तू तो अपने हिस्सा से भी ज्यादा खरचा करवा लिया । अब क्या चाहिये ?

जीवेसर ने आ¤खों में आ¤सू भरकर कहा था, थोडा म'स्क'रा कर, धनेसर आज भी कहकर रो पडते हैं । "हा¤ काका ! हमको मालूम है, अब क'५ नहीं चाहिए, हम चलत हैं । आप जिन्दा रहियेगा तो पहचानियेगा । हम भाई का बैल बन कर आयेंगे, कर्जा उतारने । खाली भ'सा डाल देने पर खा लेगा, वही मैं हू¤गा ।"

स'नकर धनेसर का कलेजा दो ध्ूक हो गया । अधिक स'न नहीं सके, बेहोस हो गये । इधर जिवेसर के प्रा० पखेरु उड गये ।

कुर्मिनपवुरवा के सभी लोग कहते हैं, तब से धनेसर ऐसे ध्ूध् गये कि कभी जूध् नहीं सके । भाई भाई हो तो ऐसा, राम(ल५मन । ल५मन के विना राम का क्या हाल होगा । प१ाडे खाकर उनके म'र्दा पर रोते थे, गिरते थे । प५ँडे खाकर तो जीवेसर बहू भी गिरती थी । परन्तू यह तो रिवाज है, नहीं तो लोग क्या कहेंगे? अपना बस चले तो उसी दिन चल देती । लेकिन शराध तक किसी तरह रही । उसके बाद जीवेसर बहू चली गयी । जवान औरत, बाल बच्चा नहीं होने से शरीर अभी कसमसाता था । जाते समय धनेसर ने नरेन्द्र देव को थमा कर कहा

"चली जाओगी तो हमारे क'ल का मरजाद पानी में डूव जायेगा, त'म हमारे इस लडके को गोद ले लो और रहो तो त'म्ही जो क'५ कहोगी वही होगा । त'मको ३र का मलकिनी बना देंगे । हमारी मा¤ अभी जिन्दा है तो क्या ह'आ, वह बह'त दिनों तक नहीं जियेगी, जीवेसर के शोक में पागल हो गयी है, उसका भी इलाज चल रहा है ।"

धनेसर अपने क'ल का मरजाद बचाना चाहते थे । उस औरत का मन ह'आ कि गोदी के बच्चे को फेंक दे(चार लगी दूर, परन्त' बच्चे की किलकारी ने उसका मनमोह लिया, चाहती थी दूसरा ही कहना च९ती जवानी है ....परन्त' बात को बीच में ही काध्कर बोली "इसको ले लेने से क्या हमारे स्तनों में दूध उतर आयेगा ?

धनेसर क्या जवाब देते । उसने बच्चे को जमीन पर रखा और स्तनों में दूध उतारने चली गयी । द'सरी ल'गाई कर ली । धनेसर जो ध्ूध्े तो फिर जूध्े नहीं । सारा धन सोआहा हो गया । कर्जा का ७ठा होता है, कर्जा के खाइल, आ प'अरा के फू¤कल दोनो बराबर होता है (भगमनिया कहती है । हर तीसरे साल कर्जा द'गना होता गया । हर तीसरे साल दो(दो वी३ा जमीन कर्जा में लिखाता गया । होते(होते एक दिन ऐसा आया की धनेसर को सावा¤ का भात और मड'आ की रोधी खाना पडँ । खीर खाया ह'आ आदमी, किसी दिन दूध दही गोवर के मान पर फेकाता था अब सावा मड'आ खाना पडता है । पर कर्जा आ रहा है । उनकी मा¤

रहती तो अभी भी किसी तरह अपने बेदे को खीर ही खिलाती । परन्त' जीवेसर की बरखी बीतते बह भी चली गयी । बेदे का गम बरदास नहीं कर सकी । जब तक जीती रही इमान राहेव का दाहा धरती रही । चली गयी तो धनेसर ने एक साल दाहा धर के, इमान सहाव को बिदा कर दिया । रउदी दाहा बनाया था, अलवत्त दाहा बनाता था । जब दइया जा रही थी तो नरेन्द्र देव के सिर पर हाथ धर कर बोली, यही हमारा नाती मर्द होगा ।

भगमनिया कहती है, ई सब लक्ष्मी का परकोप है । जिनके यहा¤ स¤ धनेसर के भैया कर्जा आता था । एक दिन विद'र भैया को क्या ह'आ कि करजा लेने आये तो उनके दौरी को करोध में ऐसा लात मारा कि दउरी स्वारथ दास के आ¤गन में चली गयी । दाउरी के साथ लक्ष्मी जी भी उनके आ¤गन से चली गयी । उसके बाद लक्ष्मी जी ऐसी रुठी कि उ खतम हो गये, लक्ष्मी जी चली गयी, अब उल्टा योग चलता है । धनेसर को उसी स्वारथ दास के यहा¤ से कर्जा खाना पडता है । जब दउरी की बात याद आती है तो किसी दिन उनको लौदँ देते हैं । उस दिन धनेसर के ३र में साव¤ा का भात और मड'आ की रोटी बनती है ।

बडे ध'म(धाम से धनेसर ने अपने चचेरे भाइ स'केसर की शादी सेमरी में की थी, जीवेसर के साथ ही । परमेंसर म'खतार थे(धनेसर के चचेरे बडे भाई । धनेसर की ब९ती देखना वे पसन्द नहीं करते थे । म'खतार तो थे ही स'केसर को ऐसा पट्टी प९ँना श'रु किया कि वह कभी -कभी भाई के खिलाफ हो जाता । जमीन पहले से तैयार थी, सारा कोर कसर स'केसर के गौना के बाद निकल गया । जब उनका गवना होकर आया तो आते ही वे धनेसर से अलग हो गये । जीवेसर के मरने से पहले ही वे अलग हो गये । सेमरी की लडकियों की सबसे बडी आदत यही होती है, जहा¤¤ जाती है सबसे पहले भाई(भाई को अलग करवाती है । धरमदेव राउत के ३र का क'५ ऐसा नशा उनके उपर होता है कि मान मर्यादा को मसल देती है(जिल्ला में कौन नहीं जानता है धमरदेव राउत को । उनसे ब९कर मान मर्यादा संसार में किसको है । जब कंगरेसिया लोग गरदन का६ दिया तो सारा मान मर्यादा नदी की रेत में हल गया ।

उस ३र की लडकी किसी का आब सहना नहीं जानती । ५ोटी होकर बडी को अपने लात के निचे रखती है । क'ल परम्परा अन'सार यहा¤ भी वही ह'आ । स'केसर बहू ने क'५ ऐसा त्रिया चरितर रचाया की दोनों भाइयों को अलग करा दिया ।

"गजब तो यह ह'आ बब'आ" भगमनिया कहती है "कि वह अपने भी मरद से अलग हो गयी, जो स'नता था वही कहता था कि कैसी त्रियाचरितर इसके खानदान में प९ाया जाता है । ऐसा कही संसार में ह'आ है ? मर्द(औरत अलग होकर रहे । "फिर धिरे से कहती है "इ सब त्रिया चरितर था जानने के लिए, अलग होने के बाद, धनेसर क'५ दबा तो नहीं लिया है ? दिन को वह स'केसर से झगडँ करती थी, स'केसर भी सबको दिखला कर उसको थ'र देता था । वह रोते रोते दइया के पास चली जाती थी । जब रात हो जाता तो उ७कर स'केसर के पास चली जाती थी, स'वह फिर वापस चली आती थी । ऐसा त्रियाचरितर बब'वा ९ एक दिन क्या ह'आ कि मैं भी दइया के पास सोइ थी । जब रात ह'इ तो बहरी के लिए उठी । अजोरिया रात, देखा स'केसर के ३र में कोई लडकी ३ुस गई है । ओ त स'केसरा अपनी बहूरीया को मार कर दोसर लडकी को ब'लाता है, इसीलिए इन लोगों में झगडँ होता है । ४िप कर बै७ गई कि निकलती है तो पकडती हू¤ । दू ३०६ा तो बैठी रही तो धिरे धिरे वह निकली । स'केसर ने केवाडी बन्द कर दिया । मैंने लपक कर उसकी कलाइ को पकड ली । अजोरिया रात था, देख कर ५क पर गई मैं, वह तो स'केसर बहू थी । तो स'केसर बहू ऐसा त्रिया चरितर करती है । दिन को झगडँ और रात को ...... जब पकडँ गई तो मेरे म'¤ह पर हाथ रखकर

Draft Copy

बोली, च'प(किसी से कहना नहीं यह लो सोने कि चूरी । मैंने सोने की चूरी ले ली । द'सरे दिन से उसका त्रिया चरितर खतम हो गया । ऐसी है यह सेमरीवाली, दो भाइयों को अलग करवा दिया । तब से न स'केसर को चैन है,न धनेसर को ।

घ

अब धनेसर सिमध कर बच्चों की ओर ध्यान देने लगे । परमेंसर मरे तो धनेसर वही पर थे । दूसरे ही दिन से मिरगी होने लगा । लोग कहते हैं परमेंसर का भूत सवार हो गया है । अब अपनी इलाज करवाते करवाते और कर्जा च९ँ लिए । वे ऐसा नहीं करते, परन्त' क'५ लोगों ने कहा कि मिरगी का भूत जे७ सन्तान को भी पक८ता है, इसीलिए वे फिर दर(दर भ६कने लगे । ल५मन जैसे भाई को खो चूके थे, अब जे७ सन्तान को खोना नहीं चाहते थे ।

परमेंसर को क¤ग्रेसीया य'वकों ने ऐसा मारा कि क'५ मरजाद के गम से, क'५ मार से वे वि५ँवन पक८े तो फिर उ७े नहीं । बल्द(प्रेसर का मरिज दम तो८ दिया । क'५ लोग कहने लगे कि परमेंसर को पि६वाने में धनेसर का भी हाथ था, आखिर ला७ जी से उनकी दोस्ती जो लगी ह'ई थी । तब से धनेसर और परमेंसर के ३र से बोल(चाल बन्द हो गया, भाई(भाई के ३र से ही बोल चाल बन्द हो गया । परन्त' धनेसर बहू और परमेंसर बहू में बोल(चाल बन्द नहीं ह'आ । वे दोनों खास बहनें थीं । कही न कही बातें कर ही लेती । हा¤१ स'केसर बहू से दोनों का ही बोल चाल बन्द था ।

धनेसर के भलमानसी से पिपरा के महन जी ब८े ख'श थे । धनेसर उनके दिल में जगह बना लिए थे । वे उनके बच्चे को हमेंशा प९ाने के लिए कहते थे । राँँशाही का जमाना था तो धनेसर तो ख'द नहीं प९ सके । लेकिन अपने बच्चों को प९ँना श'रु किया । हरेन्द्र देव महन जी के पीपरा स्कूल से मि८िल करके, फिर बीरगंज से मैं्रिक करके पीपरा स्कूल में ही मास्६र करने लगे और साथ ही रात्रि कलेज में प९ने भी लगे । नरेन्द्र देव भी पीपरा स्कूल में शिक्षँ श'रु कर च'का था, गिरेन्द्र देव अभी ५ो६ा था ।

स६्ँक १स६्ँक १स६्ँक १

एक दिन ि६फिन के समय पता नहीं कितनी ५८ी लगी नरेन्द्र को । पा¤चवी में प९ रहे नरेन्द्र ने अपने स्वाभिमान को एक विद्रोह से बचाया था । उसका मन सान्त हो गया था, परन्त' ५८ी की मार ने उसको इतना ८रा दिया था । इस अप्रत्यासित मार ने वह भी अपने ब८े भाई मास्६र साहव के सामने ही, इस मार के लिए वह तैयार नहीं था । वह ८र के मारे थर(थर का¤प रहा था, पा¤चवा क्लास का बच्चा क६ू में पेशाव कर दिया ।

नरेन्द्र देव अपने क्लास में फस्६ आता । रोज अपने ब८े भाई श्याम चन्दर के साथ प९ने आता था । श्याम चन्दर स'केसर का ल८का है । ब८े लोगों में बोल चाल बन्द है, परन्त' बच्चे उनसे अनजान हैं, दोनों में ब८ी दोस्ती । एक ही साथ स्कूल में आना और एक ही साथ जाना, ि६फिन के समय रुमाल में भ'जा बान्हकर लाते और रोज म७ के पोखरा पर

DO NOT COPY

ि्फिन के समय बै७ कर खाते । कभी ि्फिन के समय ३र पर ही दोनों उ५लते क'दते जाते और खाकर चले आते, दस मीन६ पग८०८ी का रास्ता था ।

ि्फिन के समय आज नरेन्द्र देव को जोर से ६ट्टी लग गयी । वह जल्दी से एक आम के पे८ के नीचे बै७ गया ।

"मारो शाले को, बहाचोद, हरामजादा, तेरी मा¤ को, कौन दिशा कर रहा है आम के पे८ के नीचे ? देखता नहीं है शाला कि आम लदक गया है, तेरे बाप की जमीन है बहानचोर ?" एक साध' लाੳी लेकर दौ८ते ह'ए आया । नरेन्द्र देव को इस अप्रत्यासित आक्रमਂ से ब८ी ग्लानि और करोध ह'आ, शर्म से उसका सिर नीचे भ्क'क गया ।

"हरामजादा तू अभी इसको का५ कर फेको नहीं तो............."

"ऐ साध' होकर हरामजादा बोलता है ? हरामजादा तू ।" श्याम चन्दर ने साध' का जनेउ पक८ लिया "तू पहले उसको दिशा क्यों नहीं करने दिया, उसको दिशा जोर से लगी ह'ई थी ?"

साध' अपना जनेउ ५'८ा रहा है, श्याम चन्दर जनेउ पक८े ह'आ है । इसी बीच नरेन्द्र देव निब६ कर आ गया । दोनो ५ॅ८कर स्कूल में गये । तय ह'आ की ५'ट्टी के समय सभी ल८के साधू को मारेंगे । कैसा अपमानित कर दिया हमको । सभी ल८के एक स्वर से स्वर मिलाये । ५'ट्टी ह'ई और उस साध' का कसकर मरम्मत हो गया ।

कौन था शाला, बहानचोर, माध८ चोर? हमारे ही स्कूल में प९ता है, हमारे ही साध' को मारता है । उस शाले का नाम का६ दो, मेंरे स्कूल से निष्कासित कर दो, माध८चोद को" दूसरे दिन महन जी स्कूल में आकर गरज रहे थे ।

"महन जी, परन्त' ल८का ब८ਂ होनहार है, हमारे स्कूल की नाक है । यहा¤ से चला जायेगा तो हमारे स्कूल का एक अच्५ॅ विद्यार्थी दूसरे स्कूल में चला जायेगा ।" जगदीश लाल ने हिम्मत करके कहा,"अभी बच्चा है, पा¤चवा क्लास में प९ता है, उसे माफ.........."

"उस शाले को हम माफ कर दे ? जो हमारे स्कूल में प९ता है और हमारे साध' को मारता है ? हमारी थाली में खाता है और उसी में हगता है ,आमें के पे८ के नीचे .... और हमारे साध' को मारा ? हम क'५ स'नना नहीं चाहते, अभी हमारे सामने उसका नाम का६ें ।"

और नरेन्द्र देव का नाम क६ गया । मास्६र लोग इस कोशिश में थे कि महन जी का करोध सान्त करके किसी तरह इस ल८के को रख लिया जाय । सब लोग महन जी का करोध सान्त करने चले। धनेसर भी उनके साथ थे ।

..........."बाबा लेकिन वह ल८का धनेसर का बे६ा है । धनेसर भी आये ह'ए हैं ।"

"अए¤ ९ धनेसर का ? तब तो यह बह'त ब'रा ह'आ । धनेसर इतने भले आदमी, हमारे ही कहने पर तो वे अपने ल८के को प९ते हैं ।जगदीश लाल कोई उपाय करके उसको भर्ती कर लो । अब तो लाल कलम चल गया है । अब कैसे होगा ?" महन जी धनेसर को बह'त मानते थे, अब वे प५ताने लगे ।

"कलम चल गया है तो क्या होगा ? आपका फैसला भी रह जायेगा और वह इसी स्कूल में भी रह जायेगा । हम लोग उससे एक दरखास्त लिखवा कर लायेंगे,(माफिनामा, आप उसे मंजूर कर लिजिएगा ।

"ੳीक है ऐसा ही करो । हम धनेसर का म'¤ह देखते हैं, नहीं तो........"

नरेन्द्र देव ऐसे नहीं मानेगा । कौन मर्द है, जो उससे दरखास्त लिखवा लेगा(माफिनामा । दरखास्त तो क्या वह दरखास्त पर सही ५ॅप भी नहीं करेगा । तय ह'आ कि आज

द्दिफिन के समय उसको पीध्कर ड्राया जाय और उसी समय दरखास्त पर सही करा लिया जाय ।

....और द्दिफिन के समय बड्े भाई मास्ध्र साहव के सामने ही सैकड्ें ५ड्ी उसकी पी७ पर लगने लगी । इस अप्रत्यासित मार से नरेन्द्र बेहद ड्र गया, ड्र कर अपने बड्े भाइ की ओर देखा ।

“और मारिए मास्ध्र साहव, ये विद्रोह करने चलते हैं, विद्रोह करते हैं, एक साधू को मारते ह’ए शरम नहीं आयी । जब जनम अष्७मी में तस्मैं नहीं मिलता तो नारा लगाते हैं, महन जी म’र्दावाद, पिपरा म७ हाय हाय, अरे बेह’दा जब आन्दोलन करना है तो हेड् मास्ध्र के विरोध में करो.......... ध्यूसन प९ते समय स’भद्रा को..........चौदह वरस की ध्रँकरी थी, अस्पताल में भर्ती कराना पड्ँ ।.....तो यह सब तो नहीं होगा, साधू को मारेंगे ..... और मारिए ।

जब अपने बड्े भाई को ही इस तरह कहते ह’ए स’ना तो उसको कोई शर०ँ नहीं मिला । पाँचवा क्लास का बच्चा अब बेहद ड्र च’का था । उसी समय द्वारीका लाल मास्ध्र दरखास्त ब९ाकर सही करने को कहा । नरेन्द्र देव कलम पकड् कर ड्रते(ड्रते चुप चाप सही कर दिया ।

दरखास्त महन जी के पास गया । माफिनामा मंजूर हो गया और नरेन्द्र देव उसी स्कूल में रह गया ।

समय बीतता गया, नरेन्द्र देव प्रथम श्रे०ी में पास होता गया । धनेसर ने छवी क्लास में ही उसकी शादी कर दी । विश’४ बाल बिवाह । हरेन्द्र और नरेन्द्र की बारात एक ही दिन ३र से निकली । एक ही खर्च में दो बाल बिवाह सम्पन्न हो गये । धनेसर नरेन्द्र की शादी बाप की एकलौती बेदी से किया था । उनको आशा थी की कर्जा में गयी सारी जमीन इसी तरह हासिल किया जा सकता है । परन्त’ जब समधी ने एक बैल भी नहीं दिया तो उनकी आशा पर पानी फिर गया । मखीचूस कही का । विना मफाका किये बारात वापस चली गयी । रात भर कहरियाँ लोग नरेन्द्र को लेकर तीसी के खेत में बउआते रहे और नरेन्द्र पालकी पर सोता रहा । छवी क्लास का बच्चा, क्या मालूम कि पालकी पर सोये हैं कि ३र में । कौन रास्ता भूल गया है, कौन नहीं। वह सूरज के दूवते ही पालकी पर सो गया था । जब स’वह ह’ई तो देखा वह अपने गाँव में नहीं है । लोगों ने कहाँँ गर्दवल है, रात हम सभी रास्ता भूल गये थे । जब रास्ते में चोर ३ेर लिया था तब भी त’म्हारी निन्द नहीं ध्ूदी, माल पत्तर लेकर वे चले गये । गनीमत है क’५ नहीं किया ।

बाल बिवाह तो स्याम चन्दर का भी ह’आ । देखादेखी स’केसर ने भी अपने दोनों बच्चों की शादी एक ही साथ कर दी । सातवाँ पास करत–करते नरेन्द्र देव जवानी की दहलीज पर कदम रख दीया, श्याम चन्दर तो जवानी के अन्दर ही चला गया, वह नरेन्द्र देव से बड्ँ था । नरेन्द्र अब रक्सौल में प९ने लगा । स्याम चन्दर वकरी और भैंस चराने लगा । श्याम चन्दर जब एक बार फेल हो गया तो, स’केसर ने उसको बाकस में ९व९रा खेला(खेला कर ऐसा मारा कि श्याम चन्दर का ह’लिया द्देध् हो गया । उसके बाद न स’केसर ने उसको स्कूल भेजा और न श्याम चन्दर कभी स्कूल गया । उसका वस चलता तो वह कभी स्कूल जाता ही नहीं, खाली भैंस और बकरी चराता । वह तो खाली स’केसर और कोइरीया मास्ध्र के ड्र से जाता था । अब ७ीक हो गया, क्या ह’आ बाकस में ९व९रा खेलाये तो ? अब कैसा मजा आता है, कंचनिया के साथ बकरी चराने में । इनर के साथ भैंस खोलता है तो दिन भर ग’लीध्ाड् खेलता है, दोल्हा पाती खेलता है और भैंस अपने मन से चरती रहती है । स्कूल में तो मास्ध्र लोग हमारा माथा चरते रहते थे । ३र में बाबू बाकस में ९व९रा खेलाते थे,

DON'T COPY

स्क ॅल में मास्ह्र बलैक बोड पर । अब ठीक हो गया .... कंचनिया, कंचनिया चलो कल हमलोग सरेह में भात बनाकर खायेंगे, लद्दीकैया पिकनिक, महन जी के इमली पर से इमली त'र कर लायेंगे ।

स'केसर ने जब उसका गौना कर दिया तो उसका देह बा९ के पानी जैसा फ'फ'आने लगा । दिमागी कसरत प्रँडकर जब सरेह का शारीरिक कसरत, उप्रल क'द होने लगा तो सारे सरेह की श'४ हवा उसके शरीर को अल्हड बना दिया । लोग उसकी जवानी को देखते रह जाते । उपर से बद्दी(बद्दी आप्रखे, गाप्रव भर में वैसा किसी का नहीं, लडकी को भी नहीं, भोला(भाला चहेरा । मास्ह्र साहव कहते की क'ॅाल का अवतार है । गाप्रव भर के लोगों का मन मोह लेता है, प९ँ नहीं तो क्या ह'आ ।..............

"अरे दौदॅ(दौदॅ बब'आ को क्या हो गया ? श्याम चन्दर को क्या हो गया, वह वेहोश हो गया है । अरे बाप रे हमर लाल को क्या हो गया " यह कहते ह'ए स'केसर बहू जब ३र से निकली तो सभी लोगों को ७क'आ मार दिया । एक आदमी दौडकर उख के खेत में स'केसर को खबर करने गया । वे उख क६वा रहे थे । सभी लोग दौडते ह'ए स'केसर के ३र की ओर चले जा रहे हैं ।

"क्या ह'आ श्याम चन्दर को ? "किसी ने प'प्रा

"पता नहीं, बेहोश हो गया है, प्र अंग'रिया बैद्य जी आये हैं । कहते हैं, सन्निपात हो गया है, बचना म'श्किल है ।"

".....हे भगवान अइसन क'ॅाल जैसी बद्दी(बद्दी आप्रखों बाला भोलवा बेद्दँ किसी को नहीं था, उसकी रक्षा करो ?"

"उसके भाई को अस्पताल के डॅ. रामचन्दर को ब'लाने के लिए भेजा गया है । वे अस्पताल के बडे डॅक्ह्र हैं ।"

"..... खली ब'खार तो लगी थी, चार दिन से । अरे एक दिन इलियास आये थे, एक सूई दिये थे । उसी दिन से मेंरे बेद्दे को क्या हो गया है .... आज बेहोश" स'केसर रो रहे हैं ।

"अरे इ ब'खार(ब'खार नहीं है । एक दिन वीरा बहू मेंरे लाल से चइली मप्राग रही थी, इसने नहीं दिया । उसी दिन से मेंरे लाल को ब'खार लग गयी और आज.... कोई बचा लो मेंरे लाल को । भीखारी काका को ब'ला लो भ्फाडने के लिए, सब वीरा बहू का करमासा है "स'केसर बहू प्रँडे खा(खा कर रो रही थी ।

लोगों को आश्चर्य था, जवानी की दहलीज पर पह'प्रचते ही क्या हो गया भोलवा को । ऐसा स'न्दर, ऐसा भोला कि गाप्रव का बच्चा(बच्चा रो रहा है । बचने की कोई उमेंद नहीं है । प्र अंग'लिया बैध जी आ गये हैं, भीखारी काका भ्फाड रहे हैं । अम्बिका उसका बडॅ भाई डॅ. राम चन्दर को ब'लाने गया है । सब लोग ३रे ह'ए हैं । नरेन्द्र अपने जाप्र३ पर उसका सिर रख लिया है और ग'ल'क'ज का पानी चमच से पिला रहा है । मंतीरी भी है । क'प्र देर के बाद वैध जी उ७कर चले गये, अब भगवान ही बचा सकते हैं, मेंरे पास कोई उपाय नहीं है ।

"नरेन्द्र बब'आ, बैल ख'ला गया है, जरा जाकर बान्ह कर आओ " नरेन्द्र की मा डर गयी । मरते वक्त नरेन्द्र अगर वही पर रह जाता तो दोनो की बद्दी दोस्ती है । मंतीरी भी उ७कर चले गये । जब से परमेंसर के मरने के बाद धनेसर को मिरगी पकड लिया तब से वे किसी के मरने के समय वहाप्रप्र पर नहीं रहते । मंतीरी को डर लगता है कि कही उनको भी मिरग(उरगी नहीं हो जाये । वे उ७कर चले गये । कही खराब असर नरेन्द्र पर हो गया तो ? .....

DO NOT COPY

"च'प रह, अभी नहीं जाउ¤गा" नरेन्द्र पहली बार प्रकृति की इस त्रऽर लीला को इतनी नजदीक से देख रहा था । वह जाने से इनकार कर दिया ।

तभी म'¤ह से एक फिच'कर निकला, ग'लकुच का सारा पानी श्याम चन्दर के म'¤ह से वापस निकल गया । नरेन्द्र ने पहली बार इतनी करीव से देखा कि किसी के प्राѺ(पखेरु कैसे उऽ जाते हैं, श्याम चन्दर के प्रँ०ँ पखेरु उऽ चूके थे । जब तक ढँ. राम चन्दर आये, श्याम चन्दर चला जा च'का था । राम चन्दर, श्याम चन्दर की नाऽी देखकर वापस लौ६ गये, पूरे द्धण रुपये फीस लेकर ९

बाहर हाहाकार मचा ह'आ था । सब लोग बिल'ख(बिल'ख कर रो रहे थे । यह कैसा न्याय है प्रभ' ऐसा भोलवा बेइँ को उ७ँ लिए । राम भरोसे कह रहा है, भगवान भोला को ही ब'लाते हैं, अच्र्५ आदमी को ही ब'लाते हैं, अच्र्1ा किसको पियारा नहीं होता ?

श्याम चन्दर का देह जला दिया गया । महीनों नरेन्द्र उसके लिखे का¤पियों को लेकर प९ता है, ३ूमता है, याद करता है । जब साध' का उसने जनेउ पकऽ लिया था । अब रोज(रोज वह अकेले ३ूमता है, कहा¤¤ चला गया अब वह । लोग कहते हैं कि वीरा बहू ने कारन करके मार दिया, रात को जाकर खेलती है । भोलवा को फू¤कना नहीं चाहीए था । क'५ लोगों के कहने पर फूक दिया गया, नहीं तो हलाया जाता । शादी हो गयी है, जवान हो गया था, फ'¤कायेगा नहीं तो हलाया जायेगा ? अगर वह फू¤काता नहीं तो किसी दिन जब वीरा बहू खेलाती तो उससे ध्र्नि कर लाया जा सकता था । जलाकर लोगों ने गलती कर दी । अब उसकी आत्मा भ६कती है, वह अपने मउअत से थोऽे मरा है..... उस दिन चन्दलाल को भेइँया था । चन्द लाल काका ऽर के मारे थर(थर का¤प रहे थे । एक ही प६कौरा में नौ गा४ी से ५त'अन तर चले आये । .... एक दिन ल'रख'र की जनाना बऽका भिनसरवा भाग कर नइहर जा रही थी । तीन बार ७ेस लगी तो गिर गयी । भोलवा क'५ नहीं करता है, वह सबको सही रास्ता दिखलाता है........

.......जब वह नहीं मानी तो पकऽ लिया । जब भ्राऽ फू¤क हो रहा था तो ऐसा बोलती थी जैसे वह किसी औरत की आवाज नहीं है, साक्षत भोलवा की आवाज है । निक'ज विहा¤¤री को कह रहा था कि त'मने मेंरी दवात क्लास में च'रा ली थी । निक'ज विहा¤¤री आश्चर्य से म'¤ह देखता रह गया था....... मैंने च'राया तो था लेकिन वह बात किसी को मालूम नहीं, कितने बरस हो गये, पहीला कलास की बात है । इस औरत को कैसे मालूम हो गयी ? भोलवा जिसको उस समय नहीं जान सका था अब मरने के बाद हमसे कह रहा था । ल'रख'र की औरत ऐसे ताकती थी जैसे भोलवा ताकता था, बाकस में ९व९रा खेलाते समय । ऐसे चलती थी जैसे भोलवा चलता था, तनको फरक नहीं था । .....जाते(जाते कहता गया, हमको भ्रारने(ओरने से क'५ नहीं होगा । मैं इसको पकऽँ नहीं हू¤, मैं तो फिर चला जाउ¤गा । मैंने तीन बार ७ेस लगवाया, लेकिन यह नहीं मानी । मैंने आवाज में कहा कि त'म जो यह काम कर रही है वह गलत है । पति से भ्रगऽँ करके नइहर नहीं भागना चाहिए .... जब मैं पकऽ लिया तो यह अपने वापस लौ६ आयी । मैं इसे पकऽ कर वापस लाया हू¤ । पह'¤चा दिया, अब जा रहा हू¤ । ......ऐसा आश्चर्य नहीं स'ना था, नहीं देखा था । उसके बाद ल'रख'र बहू अपना ३ू¤३६ सरियाने लगी, लजाने लगी । भोलवा के जाते ही जब वह बोलने लगी तो औरत जैसी आवाज ..... उसके पहले भोलवा जैसी आवाज । एक औरत की आवाज कही मर्द जैसी हो सकती है ? वह भी बिना भ्राऽ(फ¤ूक के ? हे भगवान भोलवा जलाया नहीं जाता तो ....

DO NOT COPY

नरेन्द्र देव सब स'नता था । ऐसा नरीमन भाई जब भरी जवानी में मरे थे, तभी स'ना था । लोग कहते थे कि वे कवरगाह में बोलते हैं हू((((हू((((, कराहते हैं, जैसे मरते समय कराह रहे थे । .....ऐसे जवान जैसे बादशाह सिकन्दर हो .... एक रात में द्दज्ञ गह'अन खोद(खोद कर म'आये थे, ऐसा मर्द । लडते कभी नहीं थे, परन्त' मेंला(ञेला में पहलवानों की क'श्ती में वही जीत जाते थे । अमीताभ बच्चन क्या उसके जैसा लम्बा होगा । नाच में जब स'ल्ताना डँकू बनते थे तो लक्ष्मनवा से कुर्मिनपुरवा तक हूक्ष्कार स'नाई पडता था । .... कौन नहीं जानता है नरीमन भाई के नाच को । देवीदत्त राउत भी कुर्मिनपुरवा में थे लेकिन सब लोग नरिमन देवान का कुर्मिनपुरवा कहते थे । गरीब, फूस के ३र में सिकन्दर जैसा बादशाह । लोग कहते हैं कि भूल से चला आया है इस ३र में । सबग'ठ में आगर, जब ५त'अन तर ९ँलक लेकर बै७ जाते थे, तो परसौनी से लोग स'नने के लिए चले आते थे । नरीमन देवान का अल्हा हो रहा है । सिसवा(सौनाहा से नाच कर आये तो हाथ गोड फूल गया । लोग अभी समझे(समझे कि क्या ह'आ है, तब तक वे चले गये । सारे गाक्ष्व के लोगों को ७क'आ मार दिया था उस दिन भी .... सिसवा सौनाहा में बडी(बडी डँयने हैं । सारा गाक्ष्व तो डाइन ही है । नरीमन देवान वहाक्ष् क्यों गया था नाचने ? .... एक औरत रात को इनकी नाच देखी तो इनपर इस तरह लट्टू हो गयी कि द'सरे दिन ये लडकी जैसे भागते थे । हाथ जोड लिए थे उसके सामने । ....द'सरे दिन बुखार लग गयी, नाच में भी नहीं गये । आकर छ दिन में ही भगवान के पास चले गये ? ...... मिसिर जी गाक्ष्व की गरह वाली बात ठीक ही कहते हैं । कोई तो अच्ञ्छा आदमी नहीं बच रहा .... नरिमन देवान भी कवर गाह में बोलते थे ।

हू.......हू ....हू ....

क्या है यह सब, सच है या झू७, नरेन्द्र यह समझने में समरथ नहीं था । परन्त' उसने देखा कि श्याम चन्दर उसके बीच फिर कभी नहीं आया ।

“वह कभी नहीं आयेगा । त'म इतना उदास क्यों होते हो ? बाबू जी तो हमको प९ँते(लिखाते नहीं हैं, पैसा नहीं दे सकते । परन्त' गाक्ष्व में मैं हमेंशा त'म्हारे साथ रहूक्ष्गा ” जब राम भरोसे कहता है तो नरेन्द्र देव के किसोर मन को इस सच को स्वीकार करने के अलावा कोई उपाय नहीं रहता । अब उसके स्कूल का सहपाठी चला गया, सिर्फ गाक्ष्व का सहपाठी राम भरोसे है ।

श्याम चन्दर की औरत आधी रात को रो रही है, पीह'कार प्ँडती है । बेचारी का गौना ह'आ, परन्त' स'ख सवारथ क्या होता है क'५ नहीं जाना । माक्ष् की मउअत स'नकर नैहर गयी, पति की मृत्य' स'नकर सस'राल आयी । सोरह बरस की य'वती जब अपनी च'डीया फोड रही थी, प९ाडे खाकर गिर रही थी, तो उसके साथ सारे गाक्ष्व के लोगों का दिल भी ६'कडँ(६'कडँ हो रहा था ...... जब भी वह इस तरह रोती है, स'नने वालों के दिल में एक ह'क सी उ७ती है । वन की कोइलर हो गयी है वह । ऐसा वियोग कि कलेजा बाहर हो जाता है ।

गाक्ष्व में पता नहीं कब से यह प्रचलन है । औरतें इसी तरह वियोग से रोती है । पश्चिमी सभ्यता वाले इस पर हक्ष्सेंगे,कि यह भी कोई रोना है, मानो कोई एक्ष्टिंग कर रहा है रोने का, गा(गा कर । लेकिन पूञ्छो यहाक्ष् के लोगों से, जब भाई भी वहन के यहाक्ष् जाता है तो वह वहन उमड पडती है(गंगा जम'ना की तरह । नहीं रुकता तो भाई का पाक्ष्व पकड कर रोने लगती है, गंगा जम'ना आक्ष्खों से बहने लगती है । अगर कोई एक्ष्टिंग करेगा तो ऐसा

DO NOT COPY

होगा ? ......पता नहीं कौन सा दर्शन है इसमें, कब से होता आया है यह । परन्त' वह सिर्फ हमारे गाप्रव में ही होता है, और कही नहीं । शहरी लोगों को इसकी जरुरत नहीं होती ।

द्ध

उनको भी क्या सूझी कि उनको च'नौती दे दिया । बस क्या था, सन् बयालिस का स्वतंत्रता सेनानी मैंदान, में आया और इन्दिरा गाप्रधी का तख्ता पलडा खा गया । जब अंग्रेजों का तख्ता पलट खा गया तो इनके तख्ते में क्या रखा है ? लोगों ने द'र्गा भवानी को मंदिर से निकाल कर बाहर कर दिया, इन्हीं लोगों ने उन्हें द'र्गा भवानी कहा था । नरेन्द्र देव भी मेंडिकल कालेज में आकर याहीया खप्रा का प'तला जलाया था । यहाप्र के लोग ऐसे ही होते हैं । जब स्वार्थ पूरा नहीं होता तो पूजा करना Ú८ देते हैं । पूजा करते थे कि सवारथ के लिए कि ऐसे ही ? अब द'र्गा भवानी लोगों की पूजा करने लगी, सबका नसबन्दी होने लगा । प'त्र भी शामिल हो गया था, उनका सहयोग कर रहा था । पूजा तो उसने जय प्रकाश नारायഠ की भी कर दी । इमरजेन्सी में ग'र्दा खराब हो गया था । अन्तिम समय में वे भी खोद्दे सिक्के हो गये थे । गाप्रधी जी तो क'५ देखे बिना चले गये, ये अपने भारत को खूब अच्छी तरह देख लिए थे ।

अब्बल में पास होते(होते जब नरेन्द्र यहाप्र पर आया तो तद(त८ फेल होने लगा । क्या करता धनेसर के पास इतने पैसे कहाप्रप्र थे कि भाइसीक्स्दी नाइन का बोतल खरीद कर देते । सरकार तो प९ती है, कोलम्बो प्लान से । वह भी मंतीरी की कृपा से । एक बार उनका एक दोस्त आया । नरेन्द्र भी बद आव भगत किया था, दनादन लोड्डा में पानी लाकर देता था । मंतीरी अपने ब'४जीवी परिवार का परिचय देते समय उसका भी परिचय दे दिया था । फस्६ करता है, कहता है ददक्दरी प९'प्रगा, इसको डाक६री में भिजवा दीजिए । जब ददक्दरी में भिजवा दिये तो कोस रहे थे । .....भीतर से मैं कहाप्रप्र कहा था, वह तो खाली परिचय दिया था । परन्त' क्या करे कभी(कभी ऐसा भी हो जाता है ।

नरेन्द्र देव अब ५ बरस के एक बच्चे का बाप भी हो गया था । धनेसर उन लोगों की भी देख(भाल कर रहे थे, सो धनेसर पैसे कहाप्रप्र से लाते भाइसक्दिी नाइन के लिए ? प्रोफेसर साहब के पास तो वह जाता है, परन्त' गोद पर स'तकर द०८वत नहीं करता है । .... अभी दश दिन ही ह'ए, लोगों ने प्रोफेसर साहव को दरभंगा के नाका नम्बर ५ में थ'र दिया था । शराव पीकर कार में ही .... । उनके साथ माधव बाबू भी थे, कार में ही रसलिल्ला हो रहा था । कई दिनों तक अस्पताल में पदे रहे, कहते थे कार का एकसीडेन्६ हो गया । उनको गोद पर स'तकर द०८वत कैसे किया जाय ?

उस दिन प्रिन्सिपल वी.डी. झा को मारने का प्लान बना रहे थे । धीरेन्द्र सिंह भी था । देख कर कौन कहेगा कि ददक्दर है, सीधे तेलिया मसान से उ७कर आया है । .... परन्त' क्या चमत्कार हो गया । साप्रप भी मर गया और लाठी भी नहीं ६ूटी । वी.डी. झा ख'द पैखाना ३र में पाये गये । भाई जब उनकी जमीन ह८प गये तो उनको डिप्रेसन हो गया था । आजकल स'साइडल ६ेन्देसी अधिक ब९ गयी थी । क्लास में आते तो बात(बात में लदकों से कहते("वील यू प्लीज गे६ आउ६ ।" लदके दर के मारे गे६ आउ६ हो जाते थे । सनका गये है क्या ?

DO NOT COPY

कहते हैं .... आसमान भ्Þाुक जाय तो भ्Þा'क जाय हम नहीं भ्Þाूक सकते । हम परीक्षा लेकर रहेंगे । हम ध्ू जायेंगे लेकिन भ्Þा'केंगे नहीं । बेचारे सचम'च पैखाना में ध्ू गये । उसी में मेंडीटेशन करते थे, अखवार भी पढ़ते थे । फ'र्सत का अच्छा अवसर मिलता था । .... परन्त' प्रोफेसर साहव को अभी भी एक बाधा थी । वी.एन. भ्Þाा प्रेँफेसर साहव से सीनियर थे, प्रिन्सिपल वे ही हो गये । फिर भी प्रेँफेसर साहव पर भगवती भी खुश थी । कितनी जल्दी पत्ता कट गया उनका । बेचारे प्रेम(विवाहिता भ'मिहार वीवी और विना व्याही बेटी को छोड़ कर दिल के दौरे पर चले गये । वेहोशी के हेडअप डिपार्टमेंन्ट थे, एक रोगी को बेहोश करते(करते एक दिन सदा के लिए वेहोश हो गये । अपरेशन करने वाले डाक्टर को चाह'न आ गया , भासो(भेगल अटैक । पता नहीं रोगी की क्या हाल ह'ई होगी ? बेचारे का दो वर्ष के वाद ही अपरेशन करना पड़ा । अब जितनी वेटीयों को प्रीन्सिपल साहव ने भोगा था, वह सब इनकी बिन व्याही को भोगना पड़ेगा । .... मिश्रँ चले तो तीवारी जी भी गये लेकिन इस तरह नहीं । वे एशिया के सब से बड़े गाइनोकोलोजिष्ट थे । कार पर चलते थे,तो नजर नहीं आते थे, इतने बड़े थे । खाली कार ड'ग'रता था । एक लड़की हमेंशा उसी में सोयी ह'ई रहती थी । आपरेशन करते थे तो असिस्टेंट लड़की रहती थी।लड़कों को अपने पास फटकने नहीं देते थे । एक ही घुडा में गरभ का लड़का बाहर निकल आता था, ऐसा निशाना साध कर घुडा मारते थे ।एक रात को किसी ने ऐसा निशाना साध कर उनके पेट में घुडा मारा कि उनका काम तमाम हो गया ।..............काम कोई तमाम नहीं कर सका तो पीतल बाबू का ।इन्हीं के चलते दरभंगा का नाम विश्व में प्रसिध हुआ ।जव एक अरुणिमा जैसे शिष्य की पत्नी को देखा तो उस पर लट्टू हो गये ।लट्टू तो शिष्य की पत्नी भी हो गयी । वे उसकी सुन्दरता पर लट्टू हो गये, वह उनके नाम पर लट्टू हो गयी । लट्टू लट्टू इकठ्ठे हो गये,और अरुणिमा जी उल्लू के पट्ठे हो गये ।हाँ उल्लू के पट्ठे नहीं होते तो भ्Þागरा क्यों करते?चुप रह जाते ।जव वीवी ने गर्दनिया देकर बाहर निकाल दिया तो गुरुआश्रम छोड़कर गाँव चले गये ।पागल हो गये। कभी कभी खेतों के मुड़ेर पर सो जाते तो उठने का नाम नहीं लेते, कहते कि गुरुदक्षिणा दे रहा हूँ ।

.... ऐसे लोगों को गोड़ पर गिरकर दण्डवत कौन करेगा ? नहीं करेगा तो फेल होइए । डवल एक्सटेनलशीप हो गया है तो क्या ह'आ । वह आयेगा तो इन्हीं के यहाँ रुकेगा । फिर भाट(टढ और रसलिल्ला । लड़कियाँ तो रसलिल्ला में एकटिंग करके पास हो जायेगी, भाट(टढ का पैसा तो आपको च'काना ही पड़ेगा । वे लोग क्या अपने घर से लायेंगे? जो सबसे खूवसूरत लड़की होगी, वह पास हो जायेगी । जो फेल हो जायेगी, उसे समभ्Þाीए खूवसूरत नहीं है, या किसी गाँव की गोआरिन है । .... गोआरिन कही का, भारतीयता की प'जारिन । अरे यह इक्कीसवी शताब्दी है, मेंडिकल कालेज है, यहाँ पर क्या आय'र्वेद पढ़ने आयी है ? अरे चाहो तो माँ(बाप से पैसे भी नहीं मँगाने पड़ेंगे । उन्होंने तो बड़े जतन से पाल पोस कर यहाँ पह'चा दिया है । उनका काम फिनिस । पैसे देने वाले वह'त मिल जायेंगे । वे क्या यहाँ देखने आते हैं । साँभ्Þा के भ्Þा'ट(फटे में जाकर राज के बगीचे में लैला(मजनू नहीं बनना होगा, नहीं तो मिस पद्मा की बेटी की तरह ५ आदमी उठँकर पिकौक होटल में लेकर चले जायेंगे ।

नेहरु य'ग में तो नरेन्द्र अब्बल दर्जे में पास होता आया था । गाँधी य'ग में देश का नकसा ही बदल गया था । इधर प्रेँफेसर लोगों की लड़के लड़कीया अधिक हो गये हैं, एम.पी., एम.एल.ए. के भी । इन्जिनियरींग में आजकल कोई नहीं जाता । लाखों इन्जिनियर बेकार जो पड़े हैं । अब बाढ़ मेंडीकल काँलेजो में आ गयी थी । शिक्षा का मूल्यांकन देख(देख कर हो रहा था ।

"सर१ सर१ मेंरे बच्चे को बचा लिजिए।"

नरेन्द्र दौडते ह'ए आइसोलेसन वार्ड से आया, जहा¤¤ डा. ि.एन सिन्हा सीिय¤ उतर रहे थे।

"सर मेंरे बच्चे को बचा लिजिए, देखिये उसका शरिर कैसे अकड रहा है। देखा नहीं जाता। प्रँफेसर साहव नहीं आ रहे हैं, उन्हीं के वार्ड में भर्ती है। एक दिन भी अभी तक देखने नहीं आये।" नरेन्द्र पागलों की तरह डँ. ी.एन सिन्हा के पैरों से लिप६ गया। उसके एक मात्र लडके के कान में गा¤व के पोखरे में डूबकर नहाते समय मिट्टी समा गया था। कान पहले से ही बह रहा था। डँक्६र कहता है कि उसी से ६६नस हो गया है। जब गा¤व के अस्पताल में ठीक नहीं ह'आ तो धनेसर ने सोचा, कही क'५ हो गया तो बेद्दँ कहेगा की हमको खबर नहीं किये। वही चलकर इलाज कराना अच्५ा होगा। वहा¤¤ पर बडे(बडे डँक्६र भी हैं।"

"अरे प्रँफेसर साहव को हिन्द'स्तान का कौन आदमी नहीं जानता, पेथेडीन लेकर सो गये तो अस्पताल का मरीज मरे या जीये। लेकिन त'म्हारा लडका तो हमारे वार्ड में भर्ती नहीं है, हम कैसे देख सकते हैं, देखेंगे तो ह¤गामा हो जायेगा, झगडँ हो जायेगा। जाओ उनके आर.एम.ओ. को ब'ला लाओ।"

"सर१ उनके पास मैं गया था। बातों ही बातों में ज्वाला बाबू मेंरे दोस्त पर क्रोधित हो गये। नाम ही ज्वाला है। अब वे भी नहीं आते। कहते हैं ऐसे(ऐसे कितने केशों को प६ना मेंडिकल कालेज में मैंनेज किया है। वे नहीं आते।"

"सर यह अपने कालेज का स्दूडेन्६ हैं। सेन्ट्रल नौमनी ,देख दीजिए।" उनके सीनियर हाउस सर्जन ने कहा।

"ऐं, हमारा लडका है ? तो पहले क्यों नहीं बोला बेद्द? चलो(चलो उदास मत हो बेद्दँ। इस तरह पा¤व से लिप६ गया कि लगता था कोई ग¤वार आदमी है।"

ी.एन.सिन्हा एक ऐसे डाक्६र हैं जो अपने विद्यार्थी को बह'त मानते हैं, सबको बेद्दा कहते हैं। अपने एक भी बेद्दँ नहीं है, खाली बेद्दीया¤ हैं, वह भी स्दूडेन्६ लाइफ में जब अपने आर.एम.ओ.से प्रेम विवाह किया था उसके देह से। देखने में राक्षस जैसे और पहाड जैसे बडे हैं, देखते ही आदमी डर जाता है। परन्त' विद्यार्थी किसी भी बात को लेकर हडताल किये हो, समस्या नहीं स'लझती हो तो सब लोग ी.एन.सिन्हा को ब'लाकर लाते हैं। आते ही विद्यँर्थी उनके कदमों पर झ'क जाते हैं। आते ही जब कहते हैं, "देखो बेद्दँ …….. और अपनी भाष०ँ श'रु करते हैं तो लगता है अमृत बरसने लगा। किसी समय वे जय प्रकाश नाराय०ँ के निजि डँक्६र रहे थे। उन से क'५ सुत्र हाथ लगा लिए होंगे। सब लोग उन बचनों को मान कर हडताल तोड देते हैं। उसने जाकर रोगी को देखा फिर नरेन्द्र की पी७ थपथपाते ह'ए, धनेसर को एकान्त में ले जाकर क'५ कहने लगे।

"बेद्दा१ अब किसी तरह बेद्दे को यहा¤ से ले चला जाय। देख लिया इस बडे आस्पताल को। वही डंकन अस्पताल में भर्ती करा देंगे। जीना होगा तो जीयेगा, मरना होगा तो मर जायेगा। कहते हैं कि उमेंद नहीं है।" धनेसर ने अपने बेद्दे से कहा।

इसके पहले कि बेद्दे को यहा¤ से ले चला जाय। नरेन्द्र दौडते ह'ए काली मन्दिर में गया और प्रार्थना करने लगा।

"मा¤ मैं तो ए्रँद्द आदमी हू¤। राजा महराजाओं की त'लना नहीं कर सकता। मैं इसीलिए नहीं आया हू¤ कि मैं दस रुपया का परसादी भाख कर चला जाउ¤। स'नते हैं कि जब हूमायू विमार हो गया था, बचने की कोई उमेंद नहीं रह गयी, तो बाबर ने उसके बदले

DEMO COPY

में अपनी जान देना कबूल किया था । बाबर मर गया था, और हूमायू बच गया था । .... मा¤ वैसे ही मैं आज अपने आप को बली च९ने आया हू¤ । मेंरा बलि ले लो बदले में मेंरे बे६ को बचालो मा¤ । अब कोई सहारा नहीं है ।”

वहा¤ से लौ६ कर वह जाने को तैयारी हो गया । परन्त’ होसपी६ल से ५ु्ी नहीं मिली । जो ८ाक्६र बे६ को देखने कभी नहीं आता था, उसी ८ाक्६र को होसपी६ल से ५’ट्टी देने में आपत्ति थी ।

“अगर आप लिख दें कि मैं अपनी मरजी से, अपने रोगी को ले जा रहा हू¤ तभी आप ले जा सकते हैं ।” ८ॅक्६र ज्वाला परसाद ने कहा ।

यह कोरम पूरा करने के बाद ६ैक्सी आ गयी । उस पर ६६नस के एक रोगी को लेकर सब लोग रवाना हो गये ।

नरेन्द्र देव ,उसका दोस्त ग’प्ता, धनेसर और हरेन्द्र देव भी थे । भाद्र का महीना शताब्दी की सबसे ब८ी बा९ आयी थी । प६ने में एक मंजीला ५त पर पानी च९ गया था । होस्६ल खाली करवा दिया गया था, ल८के लोग अपने(अपने ३र चले गये थे ।

बीच रास्ते पर जाकर ६ैक्सी बिग८ गयी । ऐसी बिग८ गयी कि न बन सकती थी, न लौ६ सकती थी, न दूसरी सवारी मिल सकती थी । इधर मृत्य’का सं३रस हो रहा है । एक शबद भी होता है तो ऐसी ऐं७न होतीं रोगी की देह में कि लगता, अब नहीं बचेगा । अब तो कोई उम्मीद नहीं है .... फिर भी क्या किया जाय ? कोई बस आती तो उसको रुकवाने की कोशिश नरेन्द्र करता । परन्त’ वे सभी नन स्६ौपेज होती और विना कोई ध्यान दिए ह’ए आगे ब९ जाती । एक बार तो क’चलते(क’चलते बचा, ग’प्ता झ६के के साथ हाथ पक८ कर खींच लिया .... बाप रे बाप त’म भी इसी के साथ मर जाओगे क्या ? नरेन्द्र को पता नहीं चला कि कैसे वह बस को ख८ॅ करने के लिए बीच रो८ पर ख८ॅ हो गया था, बस वाला उसको क’चल कर जाने के लिए जैसे तैयार था ।

ऐसे ही रात हो गयी । कार में जीवन(मृत्य’ का सं३रस चल रहा था, बाहर माहासम’न्दर का दृश्य बा९ के रुप में दिखाई प८ रहा था । लोगों के आने(जाने के रुप में कही(कही नाव पर लाल६ेन की बत्ती दिखलाई प८ती थी ।

तभी एक बस आयी और रुक गयी, बिना हाथ उ७ये । चमत्कार हो गया । काली माई ने भेज दिया है क्या ? जैसे अमृत ६पक गया, झप६ कर उसपर सभी लोग सवार हो गये । मोजफ्फरप’र में आकर दूसरी ६ैक्सी पक८ वहा¤¤ से रक्सौल के लिए चल प८े ।

“पिता जी कीर्तन की आवाज, झाल मंजीरे की आवाज कहा¤¤ से आ रही है ? कैसी है ? चारों तरफ से यही आ रही है ।” नरेन्द्र देव अपने पिता की गोद में सर रखकर बोला ।

“आज जन्माष्६मी है न बे६ा, कृष्० भगवान का जनम हो रहा है । बारह बजे रात हो गयी है । सब लोग कीर्तन गा रहे हैं ।” धनेसर ने देखा कि अब उसका बे६ा ज्यादा गमगीन हो गया है । “जन्माष्६मी, गोपाल(कृष्० का जनम” लम्बी सा¤से लेकर नरेन्द्र बोला, फिर ब’दब’दाने लगा, “हे बाल(गोपाल आज त’म्हारा जन्म हो रहा है और उसी समय मेंरे बाल(गोपाल का मर० हो रहा है । क्या मेंरे बाल(गोपाल को नहीं बचा लोगे ? त’म्हारे जन्म दिवस पर मैं मा¤ग रहा हू¤, ताकि मैं भी अपने बच्चे का बर्थ ८े मनाउ¤ । बदले में मैं जिनगी भर जन्माष्६मी बरत करु¤गा । त’म्हारे जन्म दिवस पर मैं मा¤ग रहा हू¤ । दइया के दाहा की तरह ।” फिर मा¤ग रहा हू¤ मा¤ग रहा हू¤, ब’दब’दाते पिता के जा¤३ें पर सर रख कर सो गया । प’त्र शोक से द’खी प’त्र को पिता की गोद में निन्द आ गयी ।............................

DO NOT COPY

"म'भ्के पूरे ८९ सौ रुपये चाहीए । जब पैसे नहीं थे तो आये क्यों ? प'त्र वीमार है तो मेंरा भी प'त्तर भुखँ है ३र पर ।"

दैक्सी वाले की बात स'नकर नरेन्द्र देव की निन्द ६६ गयी । वे लोग रक्सौल टंकन अस्पताल में पह'¤च च'के थे । भर्ती कराने से पहले दैक्सी का किराया देना है । निन्द ६६ने पर नरेन्द्र देव ने देखा उसका बे६ा अभी तक जिन्दा है । "पिता जी आप लोग इसे अस्पताल में भर्ती कराइए मैं दैक्सी वाले को पैसा देता हू¤ ।" प'त्र को जिन्दा देखकर उसको क'५ ९१९स ह'आ । वह रेलवे स्दे्सन की ओर से जो गे६ है उसी तरफ से भिखारी के टेरा पर चला । गे६ बन्द था तो चहारदीवारी फा¤द कर चला गया, एक कोस ३'म कर उधर से कौन आये । सोचा भिखारी से क'५ रुपये मा¤ग लूगा, वह बटा भला आदमी है । परन्त' जब भिखारी टेरा में नहीं मिला तो विचार करने लगा कि अब कहा¤¤ से पैसा ले आए¤ ।

"७क१ ७क१ ७क१ दस्तक ।"

"कौन दरवाजे पर दस्तक दे रहा है भाई ।" उसने चीख कर कहा "इतनी रात हो गयी है .... इस होसपी६ल में दूकान करना भी हराम है ।"

"मैं हू¤ भाई १ एक द'खी, मेंरे बे६े को ६६नस हो गया है ।"

"ऐ १ ६६नस, मेंरे बे६े को १ कौन है भाई इतना करुन आवाज में बोलता है । .... ऐ १ देखने से तो त'म ख'द ही किसी के बे६े लगते हो । अभी शादी(विवाह की भी उमर नहीं लगती, कहते हो बे६े को ६६नस हो गया है ?।"

"भाई१ म'भ्के दैक्सी वाले को पैसा च'काना है । मोजफ्फरप'र से आये हैं, पैसा मेंरे पास नहीं है । इस रात को कहा¤¤ जाउ¤, पास ही कुर्मिनपुरवा में मेंरा ३र पटता है । मेंरे पास एक ३टी है, इसे रख लीजिए और म'भ्के एक सय रुपिया दीजिए । भाई १ बटी मेंहरवानी होगी । मैं टँक्६री में दरभंगा प९ता हू¤ ।"

"नहीं(नहीं भाई १ पैसा मैं दे देता हू¤, ३टी आप ही रखियेगा । बोलते हैं तो कलेजा निकल जाता है । ऐसी द'खियारी बोली । ले जाइए बाबू, ३टी नहीं लू¤गा । फिर लटका भर्ती होगा यही पर । आप भागे थोटे जाते हैं ? कैसा है लटका, क'५ उमेंद .... "

"उमेंद तो क्या बताउ¤ भाई१ दरभंगा से लौ६कर आ च'का हू¤ । वहा¤¤ का टँक्६र कहता था कि कोई उमेंद नहीं है । यहा¤ पर स'नते हैं कि टाक्६र सैन्दर्स क'५ दूसरी विधि से दवाई का कोर्स बनवाकर गया है ।"

"बनवा कर तो गया है भाई १ रिसरच करके, खोपटी में सूई देता है । कितने(कितने जगह से लोग आते हैं । परन्त' सब भगवान के उपर है । मेंरा लाल तो यही पर ....

..... द'कानदार फू६(फू६ कर रोने लगा ।

"अच्७ा भाई १ दैक्सी वाला भ्कगटँ कर रहा था, लगता है आपको भी ....। "

"हा¤ भाई १ हम भी इस द'ख को भ्केल च'के हैं । अच्७ा जाओ भाई, जल्दी करो । भगवान करे कि बच्चा ठीक हो जाय ।

नरेन्द्र पैसा लेकर वहा¤¤ से जाने लगा । दूकानदार ने उसे जाते ह'ए देखा .... हे भगवान कैसा सेल्हा जवान है । अभी से इसको क्या अन'भव करा रहे हो ?

इलाज श'रु हो गया । यहा¤ पर आकर नरेन्द्र रोज प्रभ' यीसू मसीह को नमस्ते करता था ।

यीसू भगवान ने स'न लिया । सैन्दर्स की नयी विधि के द्वारा टँक्६र का बे६ँ बच गया ।

DO NOT COPY

अब रोज नरेन्द्र यीसू मसीह को नमस्ते करता है । हर साल जन्माष्६मी करता है । जहा¤¤ भी रहता है, जनमअ७मी नहीं £ँडता । राम भरोसे कही से दूध खोजकर लाता है । काली म¤ा को अपनी जान का बलि च९ँ दिया था, परन्त' अभी जिन्दा है । इसीलिए वह अपने को पूजा का फूल समभ्कता है जो काली मा¤ को च९ँ दिया गया है । उसकी मरजी के खिलाफ एक भी काम नहीं करेगा । किसी दिन भी मा¤ उसको अपने पास ब'ला सकती है । शायद किसी काम के लिए £ँड दिया होगा अभी ।

छ

"यह ले लो फ'लगेनिया¤ की मा¤ १ दो सौ रोपया है । जब जरुरत पडे तो खरचा करना । म'भ्के जाना बह'त जरुरी है ।" जीव६ परसाद ने सस'राल से चलते समय, बखारी के पी५ अपनी औरत से कहा ।

यहा¤ का प्रचलन है, लोग सस'राल में अपनी औरत से नहीं मिलते । औरत नैहर में अपने पति के सामने नहीं जाती है, बाल(बच्चे वाली होकर भी शर्माती है, अथवा शरमाना पडता है । परन्त' जाते समय कही न कही म'लाकात करने के लिए व्यगर रहती है । खाना खाने के बाद जब सब कोई खेत पर चले गये तो जाते समय बखारी के दोगा में जीव६ परसाद की औरत उससे मिली ।

"आज पूरव का जात्रा नहीं है, मैं कहती हू¤ कि आज आप मत जाइए ।"

"नहीं नहीं अरे जातरा ओतरा त ३र से जाते समय देखा जाता है । बाहर से जब ३र चलिए तो कोई दिन बेजात्रा नहीं होता ।"

"सस'रारी ३र नहीं होता क्या " बीवी ने तिर५ी नजरों से देखकर क६क्ष किया ।

"........................" वह क'५ देर च'प रहा, क'५ जवाव नहीं दे सका । दूसरा ३र सस'रार होता है, दूसरा बाप सस'र होता है, दूसरी मा¤ सास होती है, वह क्या जवाव दे । पत्नी के दलील के सामने वह हार गया । फिर बोला,

"नहीं नहीं ऐसी बात नहीं, दश दिनों से चिनीमिल में ५'ट्टी लेकर गया था । इसीलिए आज जाना होगा, नहीं तो चीनीमिल में गैल हो जायेंगे । बस्नेत जी आजकल हमसे ची९ ह'ए हैं ।"

DO NOT COPY

जीव६ परसाद की औरत भ्क'ककर उसका पैर ⁄'ई और चर൦ँ धूलि को तीन बार अपने माथे से लगा लिया । खेला, खाया ह'आ पहलवानी से च'स्त, गഁ हुआ शरीर, गवरु जवान जीव६ परसाद को दूर तक गा¤व के बाहर की पगदंदीयों पर जाते ह'ए ढँ६ की ⁄द से उसकी औरत देखती रही । उसके अन्दर का नारीत्व उसके विशाल वक्षॆस्थल को देखकर फूला नहीं समाता । उसको गरव था की उसका आदमी गा¤व का सबसे बदँ पहलवान है । उसे कितना मानता है ।

जीव६ परसाद रेलगादी पकद कर रक्सौल आया और ६म६म पकद कर वीरगंज । सोचा ३र जाकर द्यूढी पर जायेगा । पर एक दूकान पर चला गया । तास और दारु का क'५ ऐसा पेग लगाया कि ३र नहीं जाकर चिनिमील की द्यूढी पर चला गया । रात की द्यूढी थी ।

मारो १मारो १ पकदँ १ पकदँ १ बचाओ १ बचाओ १

म'आ दिया रे १ कहा¤¤ है रे सीसंकरवा १ तेजवा

नरेन्द्र देव गा¤व में आया है । खाना खाकर शाम को द'आर पर हाथ धो रहा था, तब तक हा¤फते ह'ए ३नश्याम बहाद'र आये, दौदते ह'ए द'आर खाना में गिर कर बेहोस हो गये । उनके कपार से खून की धारा बह रही थी । केव६ परसाद जीव६ परसाद का बदँ भाई ऐसी लाॊी कपार पर लगाया कि ३नश्याम वहा¤द'र को चाहून आ गया । शाम को दँलदाल करने जा रहे थे । विरजू के द'आर पर वे द'श्मनों के बीच में अकेला थे । कोई नजर नहीं आया तो प्रँ൦ बचाने के लिए भागे । किसके ३र में जा¤य ? जिस ३र को देखते सोचते कि केव६ वहा¤¤ पह'¤च जायेगा । एक बार हकीम के ३र में ३'से, फिर वहा¤¤ से लौ६ पदे, हकीम भी आजकल केव६ की ओर हो गया है । आज से दस वरस पहले जब भ्कगदा ह'आ था तो हमारे तरफ था, अन'राधा पादे जी को इसी ने खत(खत कर का६ दिया था । आज शाला उसी के तरफ है । कोई ३र दिखलाई नहीं पदँ तो नरेन्द्र देव के द'आर खाना में आकर गिर कर बेहोश हो गये । जब तक अस'रक्षा थी, तब तक दिमाग प्रा൦ को बचाता रहा । स'रक्षा पाकर वह अपना काम ⁄ँद दिया । वे वेहाश होकर गिर गये ।

नरेन्द्र देव ३नश्याम बहाद'र के बे६े तेजवा का दोस्त था । यह देख कर बदँ ग'स्सा आया । म'¤ह का क'ल्ला फेंकते ह'ए, एक वयान दे दिया । “इस गा¤व में अब क'५ नहीं, एक खून होना चाहीए । दोनो पा६ी में किसी का खून कर दो, बन्दूक से सू६ कर दो, बस गा¤व सान्त हो जायेगा । रोज(रोज का मार(पी६, भ्कगदँ अब देखा नहीं जाता । कोई किसी को हर(बैल अपने द'आर से होकर जाने नहीं देता तो कोई ब६हीया खेत जोतने नहीं देता । यह भूमि स'धार बना है कि भ्कगदँ लगा¤वन स'धार बना है । कोई अपने आम से दत'अन नहीं त'रने देता तो कोई बा¤स से कइन । दोनों पा६ी अपना(अपना लोहार और अपना(अपना हजाम अलग से रख लिए हैं । जब धीर बहाद'र का कपार हजामत बनवाते समय ही फोर दिया गया था तो वे राजविराज से दूसरा हजाम म¤गवा लिये हैं । उनको पक्का हो गया था कि हजाम ॅंक'र उस पा६ी से मिल गये थे ।” ३नश्याम बहाद'र को देख कर दँक्६र का मन विचलित हो गया । वह जितना कदकिला है, उतना ही दयाल' भी ।

केव६ ३नश्याम को मारने के वाद ३र में ३'स गया । ३नश्याम के पा६ी के क'५ लोग केव६ को मारने के लिए खोजने लगे । क'५ लोग ३नश्याम बहाद'र के फू६े ह'ए म'दी में गम⁄ँ बान्हकर वीरगंज हस्पी६ल ले गये । नरेन्द्र का मन नहीं माना । वह भी उनके साथ होस्पी६ल गया । ऐसे में म'¤हचोर, कायर देह खींचते हैं । कहते हैं भोज परे त ६ू६ पदे, मार पदे तो भाग खदे । रास्ते में बक'लिया की मा¤ ने देखा, नरेन्द्र भी है । बक'लिया से आजकल नरेन्द्र का अदावत चलता है ।

होस्पीध्ल में नरेन्द्र ने रामबहाद'र की काफी सेवा की । मरहम पट्टी ह'यी, सूई(दवाई के वास्ते दौड(धूप किया । लगभग बारह बजे रात को ३नश्याम बहाद'र को होश आया, वे बोलने लगे । अब उनको नाम लिखवाकर हास्पीध्ल में भर्ती होने का कार्यकर्म था । अभी तक इमरजेन्सी में ही इलाज चल रहा था, अब भर्ती करके सीध् पर ले जाना था ।

तभी एक आदमी ने आकर उनके कान में क'५ कहा । ३नश्याम बहाद'र के चेहरे पर हवाई उडने लगी । "नहीं नहीं नरेन्द्र, मेंरा नाम दर्ता मत कराओ, हम ीक हैं, हम भर्ती नहीं होंगे । एक गिलास दूध ला दो हम पीयेंगे ।"

नेरन्द्र जब दूध लेकर आया तो भौचक, ३नश्याम बहाद'र वहा¤¤ नहीं थे, पता लगाया, क'५ पता नहीं चला । वे होस्पीध्ल से भाग गये थे, वहा¤¤ कोई नहीं था । नरेन्द्र को बह'त बडी बात की आशंका तो हो गयी, परन्त' बात उसकी आशंका से भी बह'त बडी होगी यह वह नहीं जानता था ।

दो बजे रात को वह अकेले ३र पर पह'¤चा तो उसके पिता धनेसर ने जो क'५ सुनाया उससे नरेन्दर को का७ मार दिया, काध्ो तो खून नहीं, वह रो पडँ । धनेसर ने कहा

"जीवध् का खून हो गया है । सब लोग उसको होस्पीध्ल में ले गये हैं । लोग कहते हैं नरेन्दरवा जीवध् के सिर में ग'पती ३'सेड कर मार दिया है । त'म यहा¤ से भागो ।"

धनेरस को मालूम नहीं था कि नरेन्दर भी उसी होस्पीध्ल में गया था, ३नश्याम बहाद'र को लेकर । ३र के लोग परेशान थे कि इस हल्ला ग'ल्ली में नरेन्दर कहा¤ है । नरेन्दर को तो जैसे गौअद लग गया, क्या करे क'५ समझ में नहीं आया । एक बार वह कहना चाहा कि वह कही नहीं जायेगा, वह निर्दोष है । परन्त' उसके पिता जी ने गर्दनिया देकर दरवाजे से बाहर ९केल दिया, त'म यहा¤ से पहले भागो, बाद में हम देख लेंगे, प्राँ बचाओ ।

दँक्दर धक्का खाकर गिर गया, फिर उ और रात के अंधेरे में फिर उसी रास्ते पर चलने लगा जिस पर वह ३नश्याम बहाद'र को लेकर होस्पीध्ल गया था । रास्ते में राम भरोसे को जगाया तो वह बाहर आया । वह नरेन्दर को देखकर रोने लगा ।

"बक'लिया की मतारी का काम है दँक्दर १ उसने त'म्हे ३नश्याम बहाद'र के साथ जाते ह'ए सरेह में देखा था । वही आकर हल्ला करने लगी कि नरेन्दरवा भी था, ग'पती लिए ह'ए था । फिर वह और गौदमिया मिल कर, केवध् के पाध्ी के सभी लोगों को खबर कर दिया कि दँक्दर भी था । उसके हाथ में ग'प्ती लिए ह'ए हमने सरेह में देखा है । जब हम लोगों को देखा तो ग'पती ल'काने लगा । हम लोग तो अपने डर के मारे थर(थरा रही थी कि कही हमी को न ३ेप दे । देखा नहीं, भात खाकर क'ल्ला करते समय कह रहा था, इस गा¤व में एक खून होना चाहिए, अब एक खून होगा, सो खून कर दिया दँक्दर ने ।"

"ऐसी बात है । लेकिन राम भरोसे यह ह'आ कैसे ? कैसे जीवध् परसाद को लोगों ने .... "

"जब त'म लोग होसपीध्ल चले गये, तब इ लोग जोजना बनाना श'रु किया । किसी ने कहा कि केवध् को ३र से खिच कर मारा जाय । परन्त' केवध् अपने ३र में नहीं था । अन'राधा पाdे के ३र में ल'का गया था । तब धीर बहाद'र ने दूसरी जोजना बनाई । त'म तो जानते ही हो वह कितना बडँ ३ा३ है । गा¤व को इन्हीं तीन आदमीयों ने तो मिलकर विगाड दिया - बहिदार, अन'राधा पाdे और धीर बहाद'र । उसने जोजना बनाई कि चीनीमिल में जीवध् परसाद काम करता है, उसको किसी बहाने ब'लाकर सरेह में मार दिया जाय । त'मको फ्फसाने के लिए तेजवा को त'म्हारे ३र पर भेजा, और वह त'म्हारी ग'पती जो ध्¤गी ह'ई थी, खींच कर लाया । सब लोग भाला, गdास और तेजवा तुम्हारा ग'पती लेकर सरेह में बै७ गये । कपिल और प्रयाग गये चीनी मेंल में, जीवध् परसाद से कहा कि केवध् को सा¤प का¤ध् लिया

DONT COPY

है, म’¤ह से फिचक’र वह रहा है । जीव६ स’नकर ख’द ही जाने को उत्तावला हो गया, उसके भाई को सा¤प का¤६ लिया है, धो८करइत होगा, इधर खाली धो८करइत मिलता है । शराव की नशें में वह विना ५’ट्टी लिए ३र की ओर चल दिया । दूसरे रास्ते से कपिल देव और प्रयाग दौ८ कर सरेह में बै७ अपनी पा६ी के लोगों को स’नाकर कि जीव६ परसाद चल च’का है, दारु भी पीलिया है । सब लोगो ने अपने(अपने हथियार को मा६ी पर पीजाया और कमरुदिन के मेंल के प१ँ८ी ८ो८ी में बै७ गये । जीव६ परसाद के आने का वही रास्ता था । वह आया । एक आदमी ने जाकर ऐसी ला७ी पी१ से मारी कि वह क’५ समझ नहीं सका । सम्भलकर पी१ म’८ा और ला७ी पक८ ली । पहलवान तो था ही, परन्त’ शराव की नशे में था । तब तक कई ला७ीया¤ लोगों ने उनके सिर पर दे मारी । उसके आ¤खों के सामने जोन्हीं फ’लाने लगा होगा, फिर भी वह प्रँ० बचाने के लिए ३र की ओर भागा । परन्त’ क’५ दूर पर जाकर जिमदार साहव के खेत में ल८ख८ँ कर गिर गया । सब लोग दौ८ कर गये उसके पास, वे लोग तो जान से मारने की जोजना बनाकर गये थे । कोई ला७ी, तो कोई भाला, कोई बर१ी जो, जो लाया था, उसके देह में ३’से८ दिया । .... कहते हैं जब वह वेहोश होकर गिर गया तो कह रहा था - फ’लगेनिया¤ की मा¤, । तू ने हमको आने के समय रोका था, यात्रा नहीं है । हमने नहीं माना, अब हम चलते हैं, कहा स’नी माफ करना । भाई १आप भी । आपको सा¤प का६ लिया, फिचक’र निकल रहा है, स’नकर हम आये .... हे वजरंग वली १ इतना ब८ँ पहलवान बनाकर अन्तिम ३८ी में ब्रह्मास्त्र १ीन लिया, क०ँ की तरह । इस वक्त मेंरे हाथ में एक ला७ी भी नहीं दी । (ला७ी कि बात स’नना था कि किसी ने उसके सिर में ग’पती ३’सें८ दी । फिर उसका देही वदल गया, धेयानत हो गया । स्वर्गारोह०ँ हो गया । .... ग’प्ती तो ८ँक्६र त’म्हारी ही थी ? त’म भाग जाओ, यहा¤ जो क’५ होगा हम देख लेंगे । जो क’५ खबर होगी, हम पह’¤चायेंगे ।”

“और वे लोग जिन्होने मारा है .... ” ८ँक्६र के होश उ८ गये ।

“जब लोगों ने देखा कि वह मर गया है तो सभी तितत(वितर हो गये । जिसको जहा¤¤ मन में आया, भाग गया । गंगा आकर दो ला७ी मारा जीव६ के ६ा६ी पर और उसकी मा¤ से बोला - उ७ ब’९िया १ बे६ा मर गया, अब पचा७ी का इन्तजाम करो ।”

तूफान के वाद जो सान्ती होती है वही सान्ती उस नीरव अंधकार में थी । कही क’५ स’नाई नहीं प८ता था, सभी स्तव्ध थे । क’५ लोग भाग च’के थे, कही बच्चे अपने(अपने ३रों में द’वके प८े थे ।

“पर इतनी बात त’म्हे कैसे मालूम ह’ई राम भरोसे” ८ँक्६र सब क’५ जान लेना चाहता था ।

“अरे भागों कैले मालूम ह’ई, पू१ता है, वही संभूनाथ आकर सब बतलाया है । जानते नहीं आज कल शंभूनाथ हमसे काफी दोस्ती कर लिया है । वह भी भाग गया है, त’म भी भाग जाओ, गा¤व के सभी लोग भाग गये हैं ।”

“और त’म”

“हम नहीं भागेंगे । हमारा, लीवर सिरोसिस वाले आदमी को कोई क्या करेगा ? हम यही रहेंगे ।” फिर क’५ दूर तक ला७ी लेकर वह ८ँक्६र को पह’¤चाने गया ।

राम(भरोसे, लीवर के सिरोसिस हो जाने पर सचम’च राम के भरोसे पर ही जिन्दा है । कृषि में काम करता है जहा¤¤ अपना नाम रामबालक शाह लिखवाया है । .... वही राम भरोसे जिसको प¤ूक दो तो उधिया जायेगा, अपनी बजन के बराबर ला७ी लेकर, नरेन्द्र का रक्षक बनकर गा¤व के बाहर तक पह’¤चाने गया ।

DO NOT COPY

नरेन्द्र वहा¤¤ से चला तो पैर नहीं उ७ रहे थे । किसी ने दशों मन बोझा बन्ह दिया हो पैर में जैसे । चला जा रहा था वह पगडंडी पर, अकेले, अंधेरों में । उसका भविष्य अन्धेरा हो गया था, अब वह ढँक्दरी नहीं पूरा कर सकेगा । उसने कहा था "गा¤व में एक खून होना चाहिए, उसकी ग'पती जीव६ परसाद के सिर में ध'सी थी, वह ३नश्याम बहाद'र को होस्पी६ल में ले गया था । रास्ते में बक'लिया की मा¤ ने उसे देख लिया था । अब उसे कोई नहीं ५ोदेगा, बचके निकलने का कोई रास्ता नहीं । इस तरह सोचते ह'ए, उस अ¤धेरी रात में .. चारों तरफ से अन्धकार में ३ीरी ह'ई पगडंडी पर ढँक्दर के पाव धीरे(धीरे ब९ रहे थे । .... सबेरा होगा, प'लिस आयेगी और ....

इसके बाद गा¤व में केव६ का एक ५त्तर राज्य था । म'कदमा क'५ ऐसा बनाया कि गा¤व भर के सभी ३रों का म'खिया खूनी था । वे लोग भाग च'के थे । औरत और बच्चे बच गये । केव६ जिस ३र में जाता, जो क'५ चाहता उ७ाकर ले जाता । धान, चावल, गेंहू, तरकारी सब क'५ ले जाकर खाता था । गा¤व के सभी लोगों की बखारी उसके लिए ख'ली थी । सभी लोग डर से उसकी तरफ हो गये । क'५ लोग उसके साथ लू६ का माल अपने ३र भी ले जाने लगे । गा¤व भर के लोग ढँक्दर नरेन्द्र को गाली देने लगे, उसी ने ग'पती से मारा है । केव६ की मा¤ परमेंसर के ३र में ही अपने बाल(बच्चों को पाल पोशकर बडा किया, पहलवान बनाया । आज उनके दरवाजे पर आ(आकर गारी देती है, कोई क'५ नहीं बोलता । गौदमिया हाथ चमका(चमका कर कहती है ।

"अब ढँक्दर इस गा¤व में आयेगा ? लास ६¤ग देगा केव६वा । राजा से उसको सीधा सम्वन्ध है । ...... अच्५ा उनको भी एक ही बे६ा है । उ भी अपने बे६ँ का म'¤ह नहीं देखेंगे । अल्लाह मालिक १ इतना निर्दयी होकर मारा है, नरीं ६ो ६ो कर । जहा¤ मारने से मरेगा ७ीक उसी जगह ग'पती ३'सेडा है ।"

"ऐ त'म्हारे ३र में क'५ है कि नहीं, जो भी हो हमको दो " ३नश्याम बहाद'र वहू से केव६वा कह रहा है । शाम के झ'६फ'६े में आज वह अकेले आया है, कोई उसके साथ नहीं है । ३नश्याम बहाद'र तो मेंन वादी ही थे । ३नश्याम बहाद'र के बहू के अलावा ३र में कोई नहीं है ।

"३र में तो क'५ भी नहीं है, जो था वह सब तो विकरम ले गये " वह सहम गयी ।

"त'म तो हो ? आज हम त'म्ही को ले जाने आये हैं ।" केव६ के म'¤ह से शराव की द'रगन्धि आ रही है ।

वह सहम कर पी५े ह६ी । केव६ अपने मजवूत पहलवान हाथों से उसकी कलाई पकड ली । उसने ५'डँने की कोशिश की तो ६¤ग लिया । शोर करने लगी, कोई नहीं आया । केव६ भीतर ले जाकर उसको ही विस्तर पर प६क दिया ।

"तनिक भी नू नाकर की तो त'म्हारे बे६ा का खून कर दू¤गा । उसको पकड कर हम ला च'के हैं ।"

"नहीं, मेंरा बे६ा, तेजा , खून, खून .... " वह वेहोस हो गयी ।

आज जीव६ परसाद के शराध का दिन था । केव६ के कार०ँ ही जीव६ को मार दिया लोगों ने । जीव६ की मौत सिर्फ केव६ के लफंगयी और ग'०डँगर्दी के चलते ह'ई थी । उसका ५ँ६ँ भाई अपने खानदान की ग'०डागर्दी की कीमत अदा कर च'का था । ३नश्याम बहाद'र बहू की देह पर केव६ अपने भाई के शराध का महाभोज खा रहा था ।

ट

”म’अवलख रे म’भ्कौसा, रे म’भ्कौंसा, तोरा के व्रहम बाबा पर ५ँकी, कहा¤¤ स’तल बा८ हो व्रहम बाबा ।”

स’शील ने अपनी मा¤ को ऐसा ह’थकाया कि उसकी म¤ा गोदी के बच्चे को लेकर धमाक से गिर गयी । गोदी का बच्चा पक(पक करने लगा, उसके सर में चो६ लग गयी थी । राम स’शील की मा¤ का एक हाथ बच्चे को सम्भाले ह’ए है, दूसरा हाथ पी७ के पी५ दव गया है । सा८ी उल६ गया है, स६’आ भीतर नहीं है । राम स’शील ताली ॅंक ॅंक कर ह¤सता है, क’दता है ।

“जय बोलो महावीरा बोली के ”

केव६ के बे६ा राम स’शील को जब से मास्६र साहब ने कह दिया कि वह फेल हो गया है, तब से उसका दिमाग ऐसा फेल ह’आ कि वह बिल्क’ल सनका गया । केव६ उसको रा¤ची भी ले गया, परन्त’ नेपाल का नाम(पता लिखवाने के चलते वापस लौ६ँ दिया, भर्ती नहीं किया ।

केव६ बहू का ग’प्तांग दिखलाई प८ रहा है । हा¤थ इस प्रकार से फ¤स गये हैं कि ख’द न क’५ कर सकती है न उ७ सकती है । चीनी मिल का भोंपू बज गया, सब लोग भागे जा रहे हैं, मेंल में । पा¤च मिन६ ले६ हो गया तो गैल हो जायेंगे । सब लोग एक बार देखता है, कोई उ७ता नहीं । पता नहीं कितने लोगों ने केव६ बहू का ग’प्तांग देख लिया ।

“ह¤ १ इसको कहते हैं
जन धन धरम सरव भई सोआहा ”

रामभरोसे दौ८कर उॅंता है । रँम स’शील को ८ँ¤६ता है, जाहो करमनास’ । केव६ का पाप आप पर भी च९ीये गया ।

“जन धन धरम सरव भई सोआहा ”

“क्या है रे पे६’आ, ई क्या रमैंन हो रहा है ?” सत्य नाराय०ँ लोहार ॅंक’र के यहा¤ से ख’रपी पी६वाकर आ रहा है ।

“अरे क्या होगा भाई १ थो८ँ पहले आते तो त’म भी देख लेते, केव६ की इज्जत को । केव६ हमको भी पे६ में ऐसा मारा था कि उसी दिन से खून ८करता हू¤, साल ५ महीना में एक बार । जब मैं भी ८कर दिया, तब उसी दिन मैंने कह दिया कि असल दोषी केव६ है । अब इसका सरवस सोआहा होगा । सो वही ह’आ ।

“अरे क्या होगा ? जो क’५ होता है पे६ूदास वह त’मको होगा, खून ८करते रहो । जाओ देखो कही प८ा होगा । केव६ रोज दारु पिता है, रं८ी के यहा¤ जाता है, ऐश करता है, उसको क्या होगा ?”

“हा¤ भाई १ इसीलिए तो चीनीमिल का हरेक लोग देख लिया । उसका बे६ा ही दिखला दिया, वही पर क’द रहा था ।”

जीव६ परसाद के मरने के बाद केव६ क’५ दिन तक एक ५त्तर राज्य किया, कितने बहू बे६ीयों की इज्जत लू६ी । हार कर गा¤व में प’लिस चौकी बैेठनी प८ी । म’कदमा क’५ ऐसा बनाया कि उसमें मंतीरी का भी नाम था ।

“लगता है ई कौनो खून नहीं च’नाव था, मंतीरी भी उसमें ल८ लिये ।” रामभरोसे कहता है ।

DO NOT COPY

फल ऐसा ह'आ कि केस ड्सिमिस हो गया । किसी को क'५ नहीं ह'आ । केव६ सेवक और विकरम तीनों भाई अलग(अलग हो गये । जिसके यहा¤ ज्ञण आउ६ी आदमी रोज खाते थे, अब उसको ख'द खाने की समस्या हो गयी । सेवक क'रुप के यहा¤ हरवाहे का काम मरने लगा, विकरम चरवाहे का । केव६ का अभी वही हाल है । रस्सी जल गयी, लेकिन अइ७न अभी बाकी है ।

जीव६ परसाद के मरने का गम अगर किसी को ह'आ तो वह उसकी मा¤ को । एक बरस के अन्दर गल कर मा८ हो गयी । कैसी मो६ी, तग८ी औरत थी वह । ह८ी भ्फूल गया प'त्रशोक से । एक ही बरस के अन्दर वह भी परलोक चली गयी ।

"त कइसे रामभरोसे, सब धन ? .... " सत्य नाराय० पू५ता है ।

"जन धन धरम सरव भई सोआहा " रामभरोसे उसको ोक कर के समझ्फाता है ।

"सो कैसे "

"अच्#ा ई कहिए, जीव६ परसाद मर गया कि नहीं ?"

"मर गया "

"धन सब खतम हो गया कि नहीं ?"

"खतम हो गया "

"ई जो इज्जत है, सब लोगों ने देख लिया कि नहीं?"

"देख लिया "

"जन, धन, धरम सरव सोआहा हो गया कि नहीं ? "

.हो गया.

"तब क्या पू५ता है वन८ोल कही का ? "

हो हो हो, ह¤ ह¤ ह¤ अलवत्त, चावस, क्या बात

"सो कैसे" प्रेम नाथ बोला

"अच्#ा तो अब आप आये, आइए आपको भी बता दू¤ । "

"हा¤ बताओ पे६ू दास "

"स'निये, केव६ ने सोचा कि अब मंतीरी तो बचेगा नहीं । उसका भी नाम लिखा दिया एफ.आई.आर. में । जानता नहीं कि मंतीरी कितना म६'किया गाह है । उनचास हाथ की अ¤त८ी, क'५ समझ्फ में नहीं आती । बाप परमेंसर को लोगों ने तीन ला७ मारी त ई सारे गा¤व को रोज ला७ करता है । कुर्मिनपुरवा का कोई ३र नहीं जिसको ला७ नहीं हो गया । बद्री दास ७क कहते हैं कि बाप में शंकर, भाई में जीवेसर और बे६ँ में मंतीरी । असल बे६ा है .... उस दिन जब प'लिस कान्ति को पक८ कर ले गयी तो मंतीरी को सात चास निमाहते ह'ए जा रहा था । गजव बात है, पक८ कर ले जा रही है प'लिस ? गाली खा रहा है मंतीरी । इसी को कहते हैं खेत खाये गदहा, मार खाये जोलहा । मंतीरी को तो उस दिन बोखार लगी थी । .... जब उनको क'५ करना होता है तो द' दिन पहले सब क'५ कह(स'न लेते है, फिर ३६ना के दिन उनको ब'खार लग जाती है । द'र्गा माई ने उनको कहा है कि सब काम ग'प'त रखना, पर५त नहीं होना । ....

मिसिर जी कहते हैं, गा¤व का गरह काम कर रहा है, मैं कहता हू¤ सब मंतीरी कर रहा है । ए विल८ी, ए विल८ी करते(करते व्रहमचारी बाबा विल८ी को लेकर का¤६३ा¤६ चले गये लेकिन गरह सान्त नहीं ह'आ । गरह हो तब तो, उ त मंतीरी है । जब भी मंतीरी को बोखार लगता है, सारे गा¤व के लोग सहम जाते हैं । पता नहीं अब किसको ला७ बाकी है ।

DO NOT COPY

इससे उलझ गया केवद गोआर हूँ .... किसन जी ने जादू की ऐसी ऐसी प'टीया निकाली कि सब चीत्त हो गये । भीखम जी, दोरनाचारज, कर०ँ, एकलव सब खतम । मैं कहता हूँ मंतीरी को मनाइए, नहीं तो क'५ नहीं होगा । मंतीरी है, समूचे देश को चलाता है, इस गाँव को चलाने में क्या है, ५' मंतर का खेल है, कहेगा उ७ तो उ७गा, वइ७ तो वै७गा । ((......... हूँ लास ६इम में ई आये । .... अन'राधा पाटे बाल बच्चे के बिना मर गये । मैं कितना कहा कि मैं आपका शराध खाकर मरुँगा, लेकिन माने नहीं । शराध के दिन एक लोटँ पानी गिराया औार कहा कि अब पानी पीजिए और मंतीरी का लाठी लिए रहिए । जाते(जाते सारी जमीन भी उन्हीं को लिख दिया । ......धीर बहाद'र को अर्धान्ग मार दिया । अब गोजी लेकर गोट झिसियाते चलते हैं । बा(बात में खिसिया जाते हैं, अपने ही रोने लगते हैं, अपने ही हँसने लगते हैं । कहते हैं(अम मंतीइ के उनु के मअनी । ओकए नतीजा अ । लकवा मार कर म'ँह भी ६९ँ कर दिया है । कोइ भी उनसे जव हालचाल पु५ता है तो वटी सफाइ से कहते हैं मैंने जो किया उसी का फल भोग रहे हैं ।.....

.... पहिदार को एक ध'र खेत नहीं था । किसी म'समात का किसी भाइभाइ का खेत अपने नाम कर लिया । बारह वीगहा खेत तो हो गया, पर अब जहाँँ भात खाते हैं वही टोल(टाल करते हैं । बेटँ लोग मार पीट कर अलग कर दिया । द'सरा बेदा बैंक का नोकरी और पहली बीवी को ५ोट कर नेवारिन नरस से वियाह कर लिया । फिर भी इनकी पहली बीवी इनके जैसे ख'लेआम नहीं करती है च'प चाप अपने देवर के साथ रहती है । वे अब का७मा०टू में लकटी बेंचता है, कहता था हम टीपो खोले हैं । देखा एक मन चइली जोख रहा था । ....एक वेदा जव बीरगंज से दारु पीकर आता है तो एक माइल पहले से गरियाते आता है । यह उनका सवसे बटा बेदा है । जा उनको वह शाला ,बहानचोद का गाली खिला देता है तो खाना खाने चला जाता है । कहता है पिता जी आपका खाना तो खिला दिया ...गाली ,अव मैं अपना खाना खाने जाता हूँ,फिर खाते समय सवसे पहलेथोटा थोटा दाल ,भात निकाल कर उनके नाम पर जमीन पर रख देता है जैसे अग्नि को दिया जाता है, कहता है यह शाला बहिदारवा के लिये खाना,पानी की जगह पर तीन वार थूक फेकता है..शाला पहिदरवा के लिये पानी ।इस तरह उनका सवसे वटाँ वेदा रोज उनको गाली का नास्ता कराता है,दाल भात तरकारी का अगिन जमाता है और थूक का पानी पिलाता है ।वहिदार से पूछिये कि हाल चाल कैसा है तो सरेआम कहते हैं , जो किये हैं वह भोग रहे है , पाप कद्दित करा रहे हैं।.............हूँ हँू बट(बट झेटा टूब गइले तो गदहा गइले पानी नापने । लास ६ँईम में मंतीरी से उलझने केवद गये । पहले रामबाबू उसकी तरफ थे, फिर हरिबाबू, दोनों मंतीरी का राजनितिक द'श्मन । द'र्गा माई की ऐसी किरपा ह'ई कि एक दिन मंतीरी को ब'खार लगा । दूसरे दिन अंचलाधीश ने दोनों को ब'लाकर ऐसी टाँद पिलायी कि फिर दिखलाई नहीं पटे । बैरगिनिया चले गये । फिर

"जन धन धरम सरब भई सोआहा "

"बाप रे बाप १ एक दिन पेटू दास जरुर जेहल में जायेगा । जिसको जो मन में आता है, बक देता है । ऐसा ज'ल'म बात मंतीरी के बारे में ? देखना एक दिन उ त'मको भी लाठी करेंगे । "

"अरे चल चल हमको क्या लाठी करेंगे, जेल में भेजवायेंगे ? जहाँँ दो बार ओय(ओय किया, जेलर को पता चला कि हम खून का कै करते हैं, वस सब हवाई ग'म हो जायेगा । रामबालक शाह, फिर झर पर .... चलिए चलिए, अभी हम उनके म'ँह पर कह देंगे । मंतीरी महत मत बोलो, मंतीरी बोलो, परमेंसर का बेटँ ।

अलवत्त, गजव, ज'ल'म ... हा हा हा, हो हो हो

कही से केव६ आया और सब लोग भागे ।..........

“हो भोला भाइ ((((............” सब क'५ स'न च'कने वाद केव६ बोला ।

“ह¤ ९ का हो केव६ ((...... ”

“अरे तनी हमारे स'प'त्र को झार दिजिए, हम तो हार गये । अब इज्जत माद्दी में मिल रहा है ।

शाम को केव६ के ३र में आ¤गन लीपकर ओझाई हो रहा है । ओ९उल का फूल, अक्षत, बालू आ गया है । भोला ओझाई कर रहे हैं, देवास प९ रहे हैं, और कभी अच्५त कभी बालू फू¤क(फू¤क कर उसके देह पर मार रहे हैं ।

अरे मइया तोहरे ....

राम स'शील खेलने लगता है, पागल है जानबूझ कर खेलने लगा । खेलता जाता था और कहता जाता था “अरे झार, हमको झारेगा, झार, ब८ँ झारने वाला बना है झार ”

फिर एक म'ट्ठी बालू उ७ँकर भोला के दोनो आ¤ख में झोंक कर भाग गया ।

पक८ो ९ पक८ँ ९ हो ९ हो ९ हो ९

ठ

“ऐ बब'आ(हो, इधर आना जरा, देखना जरा पश्चीम के सरेह में क्या लाल(लाल पतरखा दिखलाई प८ रहा है, समूचे खेत में ? कौन आफत बाकी है ? चीनीमिल, औजार कारखाना और ग०८क में तो सभी सरेह चला गया, अब क्या जायेगा ?”

३नेसर ने अपने बेद्दे को हा¤क लगाया तो वह भान्सा ३र से बाहर निकल कर गया । वही पर राम भरोसे से बात कर रहा था । जब दरभंगा मेंि८कल कालेज से ३र पर आता है तो इसी भन्सा ३र में सोता भी है, दोस्तों के साथ बतियाता भी है । इसी ३र में वह बैलों को चारा का६कर भी खिलाया है । पहले भ'सउल ३र था, अब भान्सा ३र हो गया है । ३८ँरी पर का ३र ६ू६ गया तो फिर बन नहीं सका । सब लोग बै७क ३र में आ गये । उसी ३र में बीच में ६ँ६ लगाकर एक ओर हरेन्दर देव रहते हैं और दूसरी ओर नरेन्द्र देव । पिता कही भी सो लेता है । गा¤वों में सोने की जगह कही मिल ही जाती है । मंतीरी के धूरा, द'अरा रात क६ जाती है । दिन भर तो इसकी जरुरत भी नहीं होती । बैलों के साथ बैल की तरह ख६ने में बीत जाती है । मा¤ द'आरखाना के बाकस पर सो जाती है । जब दरभंगा चला जाता है तो मा¤ नरेन्द्र बहू के साथ भान्सा ३र में ही सोती है । नरेन्द्र आता है तो नरेन्द्र सोता है । उसी में प९ता भी है । गरमी में जब गरमी अधिक हो जाती है तो क'५ देर द'आर पर निकल जाता है । सर्दी में बह'त अच्š रहता है, फूस का ३र रात भर गरम रहता है । बरसात में जब चूने लगता है तो नरेन्द्र और नरेन्द्र बहू उसी में उ७कर बै७ जाते हैं । उस समय मेंि८कल का¤लेज के होस्द्दल में ही रहना अच्š होता है । जब बारिस ५ू६ जाती है तो फिर सो जाते हैं । इसी ३र में नरेन्द्र बचपन में ३ास का६ कर बैलों को खिलाता, इसी ३र में किशोरावस्था में प्रवेश किया और जवानी आ गयी तो ं बीवी का गृह प्रवेश इसी ३र में ह'आ । इसी ३र में नरेन्द्र को एक बच्चा भी ह'आ । बच्चा होते समय गा¤व की चमइन आयी थी । धनेसर ने बैलों को इससे स६े ३र में बान्हते ह'ए ८ँक्६र की बहू को अस्पताल ले जाने के लिए सोच ही रहे थे, तब तक केंहा(केंहा की आवाज स'नाई प८ गयी । ८ँक्६र दौ८ कर चमइन को ब'ला लाया था । सब क'५ विना किसी कम्पलीकेसन के सम्पन्न हो गया था ।

रामभरोसे के साथ बात करते ह'ए, नरेन्द्र खरिहान में आया । देखा सारा सरेह लाल हो गया है । गा¤व के सभी लोगों को मालूम हो गया और कितने ही लोग उसे पास से देखने के लिए चले । दूरविन से नापी हो रही थी, लाल पतरखा हलता जा रहा था ।

"पता चला है कि श्री छ को सरकार यहा¤ पर सबसे लम्वी चौ८ी रो८ निकालेगी । ९ँउन प्लानिé होगा, वीरगंज का नगर विस्तार होगा । इसका नाम बन्द नगर रखा जायेगा । बन्दर बहाद'र मल्ल का सबसे ब८ँ हाथ है इसीलिए । अब हम लोगों का गा¤व भी नगर पंचायत में आ जायेगा । विकास होगा । एक ओर से मो९रें खाली जायेगी । बीच में पार्क होगा, फूल पतिया¤ और फव्वारे लगाये जायेंगे । पानी गिरता रहेगा, शीतल, हमेंशा । अब वीरगंज के ९्रकों, मो९रों की भी८ इधर से ही जायेगी । वहा¤¤ सान्ती रहेगी । जापान से नक्सा बना कर आया है " सत्यनाराय०ँ ने ब८ा ख'शी होकर पूरा फेहरिस्त बतला दिया । उसको सब मालूम था ।

"हा¤ इसी को कहते हैं खाने को है नहीं, नहाने को त८के । भोजन पत्तर तो है नहीं, फ'हारा देख कर भूख सान्त करेंगे । अरे हम तो कहते हैं, इ वीरगंज के पा¤च(दस ग'०८वन की नयी कोई चाल है । खाने के वास्ते" धनेसर खिसियाते ह'ए बोल रहे थे ।

"जब हम दिल्ली इलाज कराने गये थे, तो वैसे ही रो८ देखा था । इ कोई अंचलाधीश या सी.८ी.ओं कभी दिल्ली गया होगा? देखा तो कभी है नहीं । इ सब पह८िया खाली रेलगा८ी देखने के वास्ते मोगलान जाने के लिए कहते हैं । जब हम का७मा०८ू गये थे तो वहा¤¤ से तीन आदमी हमारे साथ आया था, ९रेन देखने । रक्सौल जाकर दिखला दिया कि देख लो यही है रेलगा८ी । इ सी.८ी.ओं अंचलाधीस कभी देखा तो होगा नहीं, उपरा लिया खाने का रास्ता । जिसको मन में आता है सी.८ी.ओं, अंचलाधीश बना दिया, बात करो तो भैंस चराने की भी ब'४ि नहीं है । बमपिला६ जैसी बात करता है । स'नते हैं बन्दर बहाद'र मिले९री का आदमी था । मिले९री का आदमी अंचलाधीश हो जाय तो और भी बमपिला६ हो जाता है । सब काम बन्दूक की नोक पर करवाना चाहता है । बाप के ३र में बनाता है । "

राम भरोसे इतना क्रोधित हो गया कि अगर अंचलाधीश इस समय चले आये तो कच्चा खा जायेगा अथवा गोली से उ८ँ देगा ।

"रामभरोसे ९ त'म तो किसी दिन जाओगे ही, इस गा¤व को भी ले जाओगे । देखते नहीं हमारे मंतीरी भी बन्दर बहाद'र के सामने दूम हिलाते हैं । च'नाव जीतने के लिए उनको ब'लाकर इसकूल उद्३ा९न कराया था । ८ाक्९र कह रहा था कि ये च'नाव में जीतने के लिए कर रहे हैं ।"

"अरे व९रिंग करेंगे मंतीरी, हम कौन चीज के लिए व९रिंग करेंगे ? काहे व९रिंग करेंगे । हमको का कौनो मंत्री बनना है कि रिपो६ लिख देगा तो क६ जायेगा । अरे उन लोगों को रिपो६ भी लिखने आता है ? जीनगी भर मले९री में बन्दूक चलाया, अब रिपो६ लिखने वाले बनाये गये हैं ।

अरे उनसे कहो की दिल्ली को देख कर वीरगंज बनाने से नहीं होगा । जापान का नक्सा बनाने से नेपाल का नक्सा नहीं बदल जायेगा । दिल्ली में गया था । बाप रे नेपाल के बराबर तो खाली दिलिये है । रोज(रोज वीस लाख का सिर्फ बस का ९िक६ विकता है । सिंहदरवार को ६ा¤ग दो तो लाल किला पर तिरंगा जैसा फहराने लगेगा । उसके वरावर तो खाली हूमायू का मकवरा है, कबरगह । अब इ लोग कवरगाह भी बनायेंगे, नेपाल को उसी में दफना देंगे । ताजमहल बनायेंगे । सब लोग तमाशा देखने आते हैं । इन्जिनियर साहव कहते हैं

रुस वाला आया था तो रो दिया । पता नहीं कितने गरीबों का खून का कतरा इसमें लगा है, सूर्खी चूना की तरह ।

अब इनसे कौन कहेगा कि वीरगंज को दिल्ली के बराबर नहीं बनाओं, यह उसके बराबर नहीं हो सकता । इ कोई रब८ नहीं है कि लमरा देंगे ?

इन्जिनियस साहव कहते थे, कृषि के इन्जिनियर हैं, असल बात कहते हैं, कि नेपाल कृषि प्रधान देश है कृषि करने दो, नदियों में बा¤ध बनवाकर विजूली पैदा करो तो ये तो करेंगे नहीं । सस'रे जंगल को खा रहे हैं, कृषि लायक खेती को खा रहे हैं । गा¤व को दवाकर शहर में मिला रहे हैैं । कैसा गाउ¤ फर्क राष्ष्ड्रिय अभियान है यह ? अरे इ सब पहा़िडया लोग मधेश को चूसता है । इ भी दो चार लोगों को खाने का ही रास्ता है । खाकर यहा¤ से चला जायेगा और जीनगी भर खाता रहेगा । ३र पर जाओ, पहा८ पर, तो बसतर नहीं मिलता, सारा देह महकता है । यहा¤ पर हमारा ला६ साहव बन कर आते हैं, रंगरेज साहेव । स'ना नहीं रक्सौल में आकर नील का खेती जवरजस्ती करवाता था । शाले हैं कहा¤¤ के तो सात सम'न्दर ६पू पार के, खाली अल'आ र्‌्रै८कर क'५ नहीं होता, और यहा¤ पर चलते हैं साहव बनने । ३े८ँ पर च९कर ६प(६प भागते हैं । अरे मालूम है इन्जिनियर साहव क्या कहते थे ?"

"क्या कहते थे ?विकास के काम में बाधा ८ालने वाला बात बोलता है ? ऐसी ही आदमी से देश का विकाश रुका ह'आ है ।" सत्यनाराय०ँ ने ६ोका ।

"मारो सब इसको । पक८ो । हम लोगो की देह में ब'खार लगी है और इ विकाश कर रहे हैं । .... हा¤ तो क्या कह रहे थे इन्जिनियर साहव ? राम भरोसे १ त'म्हारी बात हमलोगों को ब'झाती है ।"

"अरे सत्यनाराय०ँ को क्या मारते हो । इ स्कूल के राष्ड्रवादी विद्यार्थी के ग्र'प का है । स'ना नहीं आपलोग, सरकार ने स्कूल, कालेजों के विद्यार्थीयों का एक दल वनाया है जिसमें खाली लखेरा, आवारा विद्यँर्थीयों को शामिल किया जाता है । नाम है राष्ड्रवादी वि२ार्थी म०८ल । इन्जिनियर साहव कहते थे, राष्ड्रवादी नाम देना हमारे देश के लिए शरम की बात है । हो६लों में गये और खाकर बिना पैसा दिये चले आये । एक आदमी के प्ले६ में कल थूक दिया तो बेचारा म'¤ह ताकता रह गया । जब बोला, आपने काहे ऐसा किया है, तो बेचारे को मार(मार कर भ'र्ता बना दिया । लोगों की भी८ जमा हो गयी, लेकिन कौन क्या कह सकता है, वह सी.८ी.ओ. का बे६ँ जो था । अंचलाधीश राष्ड्रवादीयों को ऐसे कामों में ब८ा हौसला देते हैं, ऐसे (ऐसे काम करते रहो । वे लोग जो भी कह देते हैं मान लेते है. ।"

रामभरोसे को यह सब बात इन्जिनियस साहव से मालूम है । अनप९ आदमी, पर सब लोग कहते हैं कि ऐसा शक्ति लेकर पैदा ह'आ है कि खाली प९े लिखे अच्६े लोगों की ही संगत में रहता है ।

"हो त इन्जिनियर साहव और क्या कह रहे थे ।" क'५ लोगों ने एक साथ पू६ा ।

"सभी देशों से रोज सहायता आता है और फिर स्वीजरलै०८ के बैंक में जाता है । स्वीजरलै०८ एक देश का नाम है । वहा¤¤ पर एक बह'त ब८ा बैंक है । द'निया¤ भर के लोग हराम के पैसे वही पर जमा कराते है । यू.एन.ओ. वालों ने खोल कर रखा है । सान्ती ५त्तर है । लेकिन हरिहर ५त्तर की तरह वहा¤ गज ग्राह की ल८ँई नहीं होती । जब सान्ती ५त्तर ह'आ तब से........सुनते हैं अव हमारा भी देश शान्ति ५तर होगा । अव यहा पर भी हराम के पैसे जमा होंगे । सो उसी में सभी जमा हो जाता है । हमारे यहा¤ जमा होती है, भूख और गरिवी । एक रुपैया की चीज लाकर वीरगंज के मारवा८ी ज्ञण्ण रुपये में बेंचते हैं, परन्त' गरीव लोगों को क'५ नहीं मिलता । ६ेरलित, ६ेरीक६न, चाइनिज समान सब फौरेन ग'८

DO NOT COPY

का माल आता है और ओहपानी में चला जाता है । विदेशों की सरकार जो म'फ्त में हमारे वास्ते देती है, वह भी गोल हो जाता है । खाली द'नमरी धन्धा होता है अब नेपाल में, स्मगलिंग ।

"और क्या कह रहे थे" ....

इन्जिनियर साहव और क्या कह रहे थे, इसको स'नाकर क्या होगा ? क्या स'नकर आप हमारा साथ देंगे ? हम जो क'५ कहेंगे वे मानेंगे ? अभी यह रोद निकलना बन्द हो जायेगा ?"

"हा¤ ह¤ा हम सभी साथ देंगे", सबने स्वर में स्वर मिलाया ।

"तो स'नियो इस रोद की उपर से स्वीकृति नहीं मिली है परधान पंच, सी.डी.ओं, अंचलाधीश, केडिया, शैतान(ये वीरगंज के जो पंचशील हैं, यह इन्हीं लोगों की कारिस्तानी है ।इन्हीं लोगों ने मिलकर इसकी योजना बनायी । स्वीकृति नहीं है तो भी हम बना लेंगे, ऐसी इनकी चलती है । इन लोगों का प्लान यही है कि पहले जमीन अधिग्रहणँ करेंगे जब कि बगैर स्वीकृति के अधिग्रहण का अधिकार उनको नहीं है । हम म'कदमा भी लद सकते हैं । परन्त' वे लोग जानते हैं, हम लोगों के उपर रोलर भी चलाया जाय तो भी हम लोग क'५ नहीं करेंगे । मंतीरी तो चू¤ से नहीं कर सकता, हम लोग क्या कर सकते हैं ? जो हमारा अग'वा है, समाज का अग'आ, बारा जिल्ला का अग'वा वह तो इस समय ३र में ३'सा है । जब बो६ लेना होता है, ले लेता है, उसके बाद ३र में ३'स जाता है ।

तो ये पंचशील वालों ने यही तय किया कि जमीन अधिग्रहणँ करके एक हजार रुपये कट्ठा खरीद लेंगे और वीस हजार रुपये कट्ठा बेंच देंगे । उसी पैसा से रोद बन जायेगा । इन लोगों को मालूम है कि रोद इससे नहीं बन सकेगा, फिर ढँउन प्लानिंग अलग से । कोई ७ट्ठा है । नेपाल में कोइ रोद ऐसा है जो अपने पैसा से बना हो । जहा¤¤ जाइए तो आपको बोर्द पर लिखा ह'आ मिल जायेगा(नेपाल(भारत सहयोग रक्सौल से भैंसे -द्धद्द माइल, नेपाल(ब्रीदीस सहयोग नारायणग९ से ब'६वल, नेपाल(रुस सहयोग पूरव(पश्चिम राजमार्ग, नेपाल(चीन सहयोग(नौविसे से पोखरा .... नेपाल का एक भी पैसा नहीं लगा होता है लेकिन पहले लिखा होता है । लगता है अपने ही देश का रोद बनाने में अपने ही सहयोग किया है । .... इन लोगों को सब मालूम है, परन्त' इन लोगों का प्लान यही है कि रोद का मिट्टी भर कर उसके बाद सब अपने पे६ में भर लेंगे और फिर सरकार को सौंप देंगे । हमारी वाह(वाही भी होगी कि हम लोग कैसे विकास के प्रति जागरुक हैं, और हमारा पे६ भी भर जायेगा । यह विकास नहीं है गा¤व वालों, यह लू६ है लू६, दिन दहादे लू६ ।" नरेन्द्र देव ने बदी व्यग्रता के साथ कहा ।

हमलोग तो कहते हैं कि खाली चोर, दँकू पैसा लू६ता है, गा¤जा का बलेकिया, पैसा का बलेक करता है । लेकिन ये साहव लोग तो अच्छा भी कहाते हैं और हमको लू६ भी लेते हैं । हमारी धरती माता का भी बलेक करते हैं, बाप रे एक हजार में खरिदना और वीस हजार में बेंचना, और इ मंतीरी हमारा च'प बैठ है ।" सबो ने एक स्वर में मंतीरी को कोसना श'रु कर दिया ।

"अरे खाली ऐसा कहने से नहीं होगा । मरद है तो चलो, इ मंतीरी(जंतीरी से क'५ नहीं होगा । हम लोगों को दाक्दर के साथ खदा होना पदेगा । उ आगे आगे रहेंगे । और हम लोग पीछे(पीछे । उ बोलेंगे और हम लोग खेतों में लाइन लगाकर स'त जायेंगे । कैसे ब'लदोजर लाकर मादी भरता है ?" रामभरोसे ने जोर के साथ कहा¤¤ ।

सबों ने नारा लगायाः(

बन्दर बहाद'र (म'र्दाबाद १

Draft Copy

इनकलाब जिन्दावाद १
हम धरती माता की इज्जत नहीं लूद्दने देंगे १
हम सब नरेन्द्र देव का साथ देंगे १
मंतीरी(तंतीरी म'र्दावाद

फिर नरेन्द्र देव ने सारे लाल पतरखों को उखाड कर फेंक दिया । तय ह'आ कि जब शिलान्यास होने आयेगा तो नरेन्द्र देव भाषö देंगे । उसी समय सभी लोग खेतों में स'त जायेंगे । आस पास के गाॅव के लोगों को भी मिलायेंगे ।

धनेसर सब क'५ च'प चाप देख रहे थे, देख रहे थे वे अपने अतीत और वर्तमान को । क'५ नहीं होगा कह कर वे चले गये । ३र पर कफन बाॅध कर सो गये । इसके अलावा वे क्या कर सकते थे । उनका बस चले तो वे अभी सारे संसार में आग लगा दे, लेकिन .... लोग कहते हैं कि ज'ल'म करना और ज'ल'म सहना दोनों अपराध है । लेकिन हम इस ज'ल'म का प्रतिकार कैसे करें ?, इसको सह जाने के अलावा कौन सा उपाय है ?

इसी उधेड ब'न में रात हो गयी । वे ममता के मारे अपने प'त्र के पास आये और जगाया । वे नहीं चाहते कि उनका प'त्र यह सब करे ।

"बेद्दा १ देखो सारा खेत करजा देते(देते ओरा गया । जब खेत लिखाना होता था तो करजा देना बन्द कर दिया जाता था । मैं अकेला आदमी किसी से कहता नहीं था । किससे कहता ? जीवेसरा मर गया, स'केसर हमसे अलग हो गया । परमेंसर भाई हमसे द'श्मनी कर लिए । स'केसर रोज उनके दरवाजे पर ही सोता था, लेकिन परमेंसर भाई हमको देख कर ही म'ॅह फेर लेते थे । आज उन्हीं का लडका मंत्री ह'आ है । सो मैं किसी से कहता नहीं था । मैं कहता कि खेत स'धभरना लिख देते हैं, कही कौनो समय में हमारे लडीका लोग होंगे तो उसको ५ोडा लेंगे । परन्त' वे लोग यही तो करना नहीं चाहते थे । उन लोगों को चाहिये(श'क्री(विक्री । हार कर म'झे श'क्री(बीक्री के अलावा दूसरा कोई उपाय नहीं बचता था । कितने दिनों तक बच्चों को साॅवा का भात खिलाता । कभी(कभी खाना नहीं रहने पर त'म्हारी माॅ को त'म्हारे मामा के यहाॅ भेज देता था । वह त'म लोगों को साथ लिए विना ब'लाये ही नैहर में चली जाती थी । इस बीच वे लोग अपने पसन्द का गोयडँ खेत च'नते और श'क्री वीक्री लिखवा लेते थे । मेंरे पास इसके सिवा और कोई उपाय नहीं रहता था । वे लोग जिस आसामी को पकडे उसे यहाॅ से उजाड कर ५ोडँ । .... चईतर काका का ३डँरी तक ले लिए । झक्कड का ३डँरी भी जब लिखा गया तो अपने सस'राल में चला गया । वही मेंहनत, मजदूरी करता है । .... जब अन्तिम में म'झसे तीन गठीया खेत को लिखाने लगे तो मैं कफन बाॅध कर सो गया, स्वारथ काका का गोड पकड लिया । .... हमारे बाल(बच्चे भूखे मर जायेंगे, इस खेत को मत लीजिए । इसे हमारे बाल(बच्चों के लिए ५ोड दीजिए । जब वे नहीं माने तो मैं भी अड गया । तीन चार जिल्ला जवार के अच्छे आदमीयों से कहलवाया । महन जी से कहलवाया तो वे खून के ३ॅद्द पीकर रह गये । ..... दूसरे ही साल भूमि स'धार और करजा सम्वन्धी कानून लागू हो गया । कोई अपना कर्जा नहीं देगा, कोई अपना मॅागेगा नहीं, व्याज मनमानी नहीं लेगा । कितने लोगों का करजा डूब गया । हम भी च'पी साध लिए, वे भी माॅगना ५ोड दिए । ऐसी सतवन्ती बनने लगे कि लोगों से कहते, अरे सब कोई खाकर पचा लिया तो नहीं, धनेसर से हम क्या माॅगेंगे, अपना ही खून है । .... स'नकर हम खून का ३ॅद्द पीकर रह जाते थे । जब बच्चे हमारे साॅवा का भात खाकर सोते थे तो उनके अपने खून नहीं थे, जब सारे खेतों को लिखा लिया तब अपने खून नहीं थे । कानून बनते ही अपने खून हो गये । जी में आया कि मैं उनको जवाव दूॅ, परन्त' मैं उनको

जानता था । वे तो सिरिफ हमारी बात स’नना चाहते थे कि हमारा मन कानून बनने के बाद कैसा है । पर बब’आ हमारा मन क्या होगा ? हम तो मर च’के हैं, अपने आप को मार दिया है, त’म लोगों के लिए । महन जी के कहने पर प९ाना श’रु किया, सो अभी तक त’म लोगों को प९ँ रहा हू¤ । .... मैं उनके यहा¤ गया, एक धोती पहना कर माफी मा¤ग लिया, स्वारथ काका सात जनम में भी मैं आपका करजा नहीं च’का सकता, सारे खेत बेंच कर भी क्या च’का सकता हू¤ ? हमारे बच्चे भी तो आपके ही खून हैं, हमको अब उवरिन कर दीजिए । और स्वारथ काका ने हमको उवरिन कर दिया । कहते हैं द’निया¤ में इन्सान है तो धनसरे है । परन्त’ मैं जानता हू¤ कि इस इन्सानियत कि क्या(क्या द’र्गती ह’ई है । .... बे६ँ सिरिफ त’म लोगों के लिए । मैं कहता हू¤ कि त’म इन सब लोगों को मिलाने की बात ‰ो८ दो । कोई भी त’म्हारा नहीं होगा, हमारा बह’त दिनों का अन’भव है । आज वही खेत सरकार ले रही है । जब त’म्हारा खून ही त’म्हारे खून को चूसता है तो दूसरा त’म्हारा साथ क्या देगा ? मैं कहता हू¤ कि त’म जाओ और अपनी प९ँई करो ।”

पिता के द’खान्त और स्नेहसिक्त भाष० से नरेन्दर का मन विगलित हो गया । इसके रेशे(रेशे कि सच्चाई को वह भ्र’७ला नहीं सकता था । फिर भी वह बोला “पिता जी फिर भी एक कोशिश करके तो देखना चाहिए । कही क’५ हो । मैं क’५ लोगों से मिलकर बात करना चाहता हू¤ ।”

“क’५ नहीं होगा बे६ा, अगर त’म चाहते हो तो करो, लेकिन कोई बात ह’ई तो भागने के लिए तैयार रहना क्योंकि जिनको त’म मिलाना चाहते हो, वे पहले भाग जायेंगे । जिनसे बात करना चाहते हो, वे हमारे ही नहीं पूरे देश के द’श्मन हैं ।”

नरेन्दर फिर भी कोशिश में लगा रहा । लोगों का प्रर्दशन लिस्६ में नाम लिखाने लगा जो अंचलाधीश के सामने प्रर्दशन करेंगे । रामभरोसे के साथ गन्य(मान्य व्यक्तियों से मिलने लगा । राम भरोसे उसको बह’त सहयोग दे रहा था ।...

“त्रिपुरारी बाबू १ क्या यह धा¤धली नहीं है कि इस तरह से जोर जवरजस्ती, विना कानून कोई हमारी जमीन अधिग्रह० कर ले ?” नरेन्द्रदेव ने नेपाली का¤ग्रस के नामी नेता तथा अपने मित्र से कहा ।

“७ीक है १ परन्त’ त’म जो इतना ५६ प६ कर रहे हो तो क्यों कि त’म्हारी अपनी जमीन प८ी ह’ई है । क्या इसी तरह त’मने नेपाली का¤ग्रस के लिए क’५ किया है कि हम त’म्हारा साथ दें । चश्मेंबद्दूर अगर सैक८ों लोगों के लिए एक आदमी उज८ भी जाय तो कोई बात नहीं । एक सौ लोगों को बसाने के लिए एक आदमी उज८ भी जाय तो क्या फरक प८ता है ।” त्रिपुरारी वाव’ ने किसी बात का बदला लेते ह’ए कहा ।

नरेन्दर अवाक रह गया । वह अपने उस मित्र का म’¤ह ताकता रह गया । एक निरपराध को बचाने के लिए सौ अपराधियों को ‰ो८ने की बात प्रजातन्त्र में उसने सुनी तो थी, लेकिन सौ लोगों को बसाने के लिए एक आदमी को उजा८ने की बात स’नी नहीं थी । अगर नेपाली का¤ग्रस का यही मत है, अगर यही प्रजातन्तर है तो क्यों नहीं वह उसी को माने जो सबसे सब क’५ ‰ीनकर केवल रो६ी कप८ँ और मकान देता है । अगर यही मानवाधिकार है , जिसमें प्रत्येक मानव का समान अधिकार होता है तो ऐसे मानवाधिकार को जिन्दा जला दिया जाय तो कोई हर्ज नहीं ।

“बाप रे बाप १” राम भरोसे ने कहा “तो इसीलिए पूनर्वास कार्यकर्म लागू ह’आ है । सौ(सौ आदमीयों का भ्र’०८ आता है और हम लोगों का सब क’५ ‰ीनकर उजा८ देता है । इससे अच्‰ा तो बैताल पचीसी का जमाना था । एक वीरवल के वास्ते राजा अपना सर का६ने

DO NOT COPY

को चला तो देवी प्रसन्न होकर बचा लिया। ये लोग प्रजातन्तर वाले हैं ? हे भगवान ९ लोग कहते हैं सती का श्राप है। अरे मैं कहता हूॅ मेरा श्राप है। असेसर प्रसाद मर जायेगा तो उसी दिन ख’शी मनायेंगे। ये प्रजातन्तर वाले मर जायेंगे तो हम ख’शी मनायेंगे।”

“ऐ वैताल पचीसी का बच्चा ९ कौन है जो तू इस तरह बक(बक कर रहा है ? ” त्रिप’रारी जी ने आॅखें तरेर कर कहा।

“ऐ म’ॅह सम्भाल के बोलिए। हम भी रोज(रोज वीरगंज आते हैं। आपसे क’94 नहीं होगा। माइस्थान का सब कोई जानता है। आप ही नहीं जानते हैं क्यों कि आप लीडर हैं, आप हमको क्या जानिएगा ? आप जानते हैं, ओ............ ओ........... नहीं समझे ...... अमृत केविन में जो मिलता है .... डिस्टीलरी वाला .... फिर कभी वैताल पचीसी का बच्चा कहा तो हम भी असेसर(विसेसर का बच्चा कह देंगे। समझे ?”

“बडँ म’ॅह(फ६ है वे, कैसा आदमी है ? ”

“फेर म’ॅह(फ६ बोलता है। म’ॅह(फ६ आप, एक भाई काॅग्रस में, एक भाई कमनीस में, एक भाई राजा में। पाटी वाले बनते हैं। जब एक जगह जमा होते हैं तो कहते हैं हमको पाटी ओटी से क्या काम, अपने काम से काम है। बडँ भाई जो स्मगलिंग करता है, पाटी से उसी की साहयता करते हैं।”

“अरे इससे मत लगीये। इ सबसे इसी तरह बोलता है। कौन नहीं जानता माइस्थान में इ पेढूदास को।” एक दूकान दार ने हॅसते ह’ए कहा।

फिर वे दोनो मशहूर डाक्टर के पास गये, एम.वी.वी.यस.। इलाके भर में नाम था। पचास रुपया फीस लेते थे, बीस रुपया अपनी, विस रुपया खून पैखाने की और दस रुपया कम्पौन्डर की।

“........ इससे किसको फायदा है ? चन्द ब्यापारियों और मारवाडियों को ड्रोड कर जो...........

“अगर उनको फायदा है” डॅक्टर साहव ने नरेन्द्रदेव की बात को बीच में ही का६ कर बोले “तो क्या वे सब अपने पे६ में हडप लेते हैं ? इतना धन(दौलत क्या सब वे ही खाते हैं ? कितनी धर्मशालायें खोलते हैं, कितनी इन्डस्ट्रीज खोलते हैं, मन्दिर बनवाते हैं। इनमें गाॅवों के मजदूर ही तो काम करते हैं और काम के बदले उनका पे६ भरता है। अरे सब वे ही थोडे खाते हैं, खाते तो हैं वही जिनको खाना होता है। धन दौलत सिरिफ कहने के लिए है।”

“डँ. शैतान जी हम तो खाली आपका नाम स’नते थे, देखा नहीं था। आज परतीत हो गया कि सचम’च आप लतखोरी लाल के लडके हैं। सि४ कर दिया। ...... कहते तो आप ठीक हैं। अगर चीनी, बल्ड(प्रसर की वीमारी नहीं हो तो ये हमको भी खा डालते, उसीन कर। उ तो भगवान हैं जो इनकी दौलत इनको नहीं खाने देते ..... तो शैतान जी आप लोग हमारी जग्गा लेकर हमको मजदूर बना देंगे। हम किसान से मजदूर हो जायेंगे, आपके इन्डस्ट्री में काम करेंगे। आपकी दौलत का एक हिस्सा खायेंगे। अरे वाह ९ कैसी दलील है आपकी ? किस इसकोल में प९ हैं आप ? भगवान ने हमको प९ँया नहीं, बडँ किरपा किया। आपके जैसे प९ लिखों की बात स’नकर तो अकिल ग’म हो जाता है।”

फिर रामभरोसे नरेन्दर का हाथ खिच कर चल देता है .... “अरे चल चल ये सब लोग मार्क्स, गाॅधी और चर्चिल के नाती, परनाती हैं। इनलोगों से क’५ नहीं होगा। हम लोग अपने मिलायेंगे किसानों को।”

DO NOT COPY

परन्त' वे क'५ आशा लिए गोपीनाथ बाबू के पास गये । गोपीनाथ बाबू कम्यूनिष्ढों के लीदर थे । च'नाव में शिकारिया से छ्ण हजार रुपया लेकर बै७ गये थे । नरेन्द्र देव को देखकर म'ॅह मोद लिया, बात चीत नहीं ह'ई ।

शिला(न्यास का दिन चला आया । सारी तैयारीयाॅ हो च'की थी । स'वह से गादीयों का रेल(पेल लगा ह'आ था । केदिया, शैतान, प्रधानपंच, सी.दी.ओ., अंचलाधीश सभी मो६रों से आ गये । सामियाना ६ॅगा ह'आ था । सबसे पी१ मंतीरी आये और सबसे आगे की सी६ पर बै७ गये । बह'त से लोग शिला(न्यास देखने आये थे । क'५ लोग जिनको रामभरोसे और नरेन्द्र ने मिलाया था, ला७ी लिए, म'रै० बाॅधे तैयार थे । तय था की जब नरेन्द्र भाष० देना श'रु करेगा तो सब लोग खेतों में स'त जायेंगे और नारा लगायेंगे ।

"भाईयो और बहनों "

अंचलाधीश का भाष० श'रु हो गया

"ख'शी की बात है कि आपके नगर का विस्तार हो रहा है । सरकार आप लोगों की जमीन उॅचे दामों पर खरीद कर अब बह'त उॅचा काम करने जा रही है । आपके गाॅव में जिस तरह से ग०दक नहर के द्वारा गंगा आ गयी, उसी तरह अब इस सदक के द्वारा पार्क और फव्वारे आ जायेंगे । स'वह शाम ६हलते समय आप लोगों का मन शीतल हो जायेंगे । इस रोद पर निकलती ह'ई गादियों से ध'ॅवा नहीं निकलता, बिजली की रेल गादी जैसा । हमने जापान से इस रोद के लिए म'फत में नक्सा बनवा लिया है । जापानी इन्जिनियर आये थे । बदे सौभाग्य की बात है कि हम उनसे नक्सा प्राप्त कर सके । द'नियाॅ में ऐसा नक्सा मिलना म'श्किल है । आप सभी लोगों ने जो जमीन दिया उसके लिए धन्यवाद । अब ब'ल्दोजर माद्दी भरकर शिला(न्यास का काम करेगा....... जय देश(जय नरेश ।"

अंचलाधीश साहव ने ज्योंही भाष० समाप्त किया नरेन्द्र देव उ५ल कर माइक पकद लिया ।

"भाईयो ! इतना बद" झू७, इतना बद" ५लावा हमारे सामने ? हमारी सारी जमीन सरकार ने ले ली । ग०दक में गंगा नहीं आयी है । हम सभी लोग देखते हैं कि हमारी सारी जमीन पदने के बावजूद भी सिचाइॅ नहीं होती । जब बारिस नहीं होती तो ग०दक में भरकर पानी चलता है और हम लोग आसमान की ओर देखते हैं । सरीसवा नदीं की ५ो६ी नहर में जब बा९ आती है तभी पानी आता है, सूखा में सूखा ही रहता है । " राम भरोसे बीच में ही आगे ब९ कर बोला

"हाॅ और एक सदक है त्रिभ'वन राजमार्ग जो भारत सरकार बना दिया है । जब उस पर रिक्सा पर चलते हैं तो ब'झाता है कि हदखादा उपद गया, रोज कृषि अफिस में जाते समय । उसका मरम्मत तक ये लोग नहीं करते हैं । दूसरी बनवाना चाहते हैं । वीरगंज में जाइए बगल में रेल लाइन है जिसपर लोग नाद रखकर बैल खिलाते हैं ।

नरेन्द्र देव उससे माईक १ीन लेता है "चिन्नी मिल ने जमीन ले लिया तो गाॅव के बह'त मजदूरों को काम दिया । पर इस सदक से हमारा कोई फायदा नहीं । जीतनी जमीन इसमें जा रही है, उसमें अगर पाॅच बरस खेती कर लो तो सामने के चीनी मिल तैयार हो सकता है जो बह'त से लोगों को काम देगा । यह सदक क्या चीनी मिल की तरह हमको नौकरी देगी ?"

नरेन्द्र का भाष० श'रु था । जिनकी जमीन चीनी मील, कृ.औ.का. में पदी थी वे सभी लोग उ७ कर चले गये । हूॅ ! हमारी जमीन पद गयी, उसको ७ीक कहता है, अपनी जमीन पद गयी तो जान निकलती है । चलो हम खेतों में सोने नहीं जायेंगे ।

DO NOT COPY

नरेन्दर का भाषॅ श'रु था :(

"………… सब भ्फू७ है, उपर से इसकी मंजूरी भी नहीं ह'ई है । ये लोग गाµजा(अफिम जैसा, deरेलिन, deरिक६न जैसा, फौरेन ग'ड जैसा अब हमारी जमीन का, धरती मैंया का भी स्मगलिंग करने लगे हैं । …. चलो खेतों पर सो जाओ, कैसे ब'लदॅंजर चलाता है ।"

नरेन्द्रदेव का भाषॅ समाप्त होते ही सभी लोग खेतों में जाकर सो गये । दो प'लिस कर्मियों ने नरेन्द्र देव को दवोच लिया । स्मगलिंग शब्द स'नते ही चअंचलाधीश का मलेdeरियाना क्रोध उप६ गया । गोरखा रगत की प्रवाह तेज हो गयी । भ्फप६ कर नरेन्द्रदेव का कालर पकड लिया, जैसे गोरखा फौज किसी द'श्मन पर भ्फप६ता है । उनको यह आशा नहीं थी कि जिस गाµव का मंतीरी भी क'५ नहीं बोलता है वहाµ का एक नवय'वक ऐसा बोलेगा ।

"स्मगलिंग ! बाप रे शाला आन्दोलन करवा देगा । पकड कर ले जाओ इसको और हवालात में बन्द कर दो । चार दि अन्न दाना नहीं मिलेगा तो होश िकाने हो जायेगा । कौन है यह जाµ७(मुजी ? " उसने कालर पकड कर एक बन्दूकधारी की ओर ९केल दिया । बन्दूकधारी बन्दुक दिखलाया और मो६र पर बैॅ दिया ।

"खेत पर सोये लोगों को गोलियों से भून दॅलो । मदेसिया मूला, इतना हिम्मत ?" अंचलाधीश ने अपने प'लिसवालों को ह'क्म दे दिया ।

धड ! धड ! धड !

कितनी ही गोलियµा एक साथ चल पडी । खेतों में सोये लोगों में भागम(भाग मच गया । एक आदमी के पैर में गोली ३'स गयी । सब लोग नरेन्द्र देव को गाली देते ह'ए भागे । …….. ह'जूर हमलोगों को इसी ने चॅ दिया था, हम लोग अपने मन से ऐसा नहीं किये । हमलोगों का कसूर माफ करिये । हमलोगों पर गोली नहीं चलाइए । ….. सबलोग अपने(अपने ३रों की और भाग गये । एक प'लिस ने राम भरोसे को ऐसा म'क्का जमाया कि वह वही पर खून का कै करने लगा । उसकी विमारी उप६ गयी ।

"ह'जूर ! खून ! खून ! ह'जूर यह आदमी खून का कै करने लगा । ह'जूर एक ही ३'स्सा मारा था । कही यह मर गया…..

"मर गया तो क्या ह'आ शाले को, हमने ह'क्म दिया था । ले जाओ जीप में ७ूµस दो नरेन्दर के बच्चे के साथ । इसको ले जाकर अस्पताल में भर्ती करा देना । वही मरेगा या जीयेगा म'भ्फी, मामपाखा ।"

तभी धनेसर आगे ब९कर अंचलाधीश के पाµव ५ान लिए

"ह'जूर इ हमारा बेॅ है, पागल हो गया है । अभी हम इसका इलाज करवा के लाये हैं, राµची से । मोगलान में प९ता है, ह'जूर, माई बाप । इसको एक बार ५ॅड दीजिए । मैं इसको मार(मार कर मोगलान भेज दूµगा । फिर कभी ऐसा नहीं होगा । ह'जूर माई बाप ! एक बार………. ह'जूर"

अंचलाधीश ने एक लात मारा और धनेसर ५ी६क कर दुर फेका गये जहाµ मंतीरी बै७ ह'ए देख रहे थे, च'प चाप:(

मदेशिया, मामपाखा, म'भ्फी, बेॅ को डाµ६ता नहीं है और पाव पकडता है । ले चलो इसको भी । बाप बेde दोनों को बन्द कर दो तो होश िकाने आ जायेंगे ।"

मंतीरी यह सब देख रहे हैं । देख रहे हैं कि उनके बाप का भाई अंचलाधीश के पाव पर पडे ह'ए हैं । कहते हैं, हम भाई भतीजावाद नहीं करते हैं । मंत्री हम हैं कि हमारा भाई–भतिजा है, हमारा बाप है । मैं विशुध इमान्दार और विनम्र राजनेता हूµ । कोई बात कहो

DON'T COPY

तो झिटक कर कहते हैं, (म'झे गाँव ३र को देखने की फ'रसत नहीं है । हम सिर्फ उपर शिरिस की राजनीति में लगे ह'ए हैं । शिर्ष की राजनीति करने वाले राजनेता, गाँव ३र को देखने की फ'र्सत विल्क'ल नहीं है । भाई भतीजा वाद नहीं करते । बेकसूर बाप अंचलाधीश के पाव पर पडँ ह'आ है । ऐसा इमान्दार, ऐसा विनम्र, ऐसा शीर्ष का राजनेता कहाँ मिलेगा ?

वे इलाके भर में विनम्र और इमान्दार नेता कहलाते हैं । क'५ लोग कभी कभी उनको महतमा गाँधी भी कहदेते हैं । जो नेपाल के रायबहाद'रों में से एक हैं उनको कभी कभी लोग पता नहीं महात्मा गाँधी क्यों कह देते हैं ? जब कोई उनको महात्मा गाँधी कहता है तब वे गर्व से फूल उ७ते हैं ।

माहत्मा गाँधी जिसने सारे हिन्दूस्तान की मानसिकता को इतना उँचा उ७ँ दिया कि अंग्रजों के कदम उखड गये । वे अपने को वही महात्मा गाँधी मानते हैं । अपने परिवार की भी मानसिकता इतना उँचा उ७ँ कर नहीं रखा कि आज बाप अंचलाधीश के पैरों पर पडँ रो रहा है । हाय री विनम्रता ! एक सीधा(साधा बाप ज'ल'म के अंचलाधीश के कदमों पर पडा है । विनम्र मंत्री और इमान्दार मंत्री च'पके से खिसक जाते हैं ।

"बब'आ मेरे लाल को बचा लो । अब मैं इसको गाँव में नहीं आने दूँगा । बब'आ न' हम विनती करते हैं ।"

अब धनेसर मंतीरी के ही पैर पकड लिए और विनती करने लगे । तब तक जीप ख'ली और हर्र (((हर्र((करती ह'ई नरेन्दर और रामभरोसे को लेकर निकल गयी । पिता सूखी आँखों से दूर तक देखते रह गये । तभी मौका देखकर मंतीरी वहाँ से खिसक गये । धनेसर जीप के चले जाने के वाद मंतीरी के पाव को फिर पकडने की कोशिश की परन्त' तब तक वे खिसक च'के थे ।

सडँक ! सड़ाक ! सड़ाक ! तडँक !

तडँक !

तडँक !

कई रोल और चाँ६ नरेन्दर की देह पर लगे । नरेन्दर को लगा कि प'लिस की गरदन मरोड दे लेकिन म'सक'र बँधा ह'आ था । रामभरोसे को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती करा दिया गया ।

"बोल म'झी कि त'म मंतीरी के कहने से ऐसा किया "

"मैंने अपनी अन्तरात्मा की आबाज पर किया है । मंतीरी का इसमें कोई हाथ नहीं ।" नरेन्दर ने कडक कर कहा ।

तडँक ! तडाक !

"शाले अगर त'म मंतीरी का नाम कह दोगे तो हम त'मको पी६ंगे भी नहीं, ५ोड भी देंगे । त'म सिरिफ इस पर दस्तखत कर दो ।

परन्त' नरेन्द्र अडिग रहा, जिसने क'५ नहीं कहा उसके बारे में क्यों झ'७ बोलूँ । अंचलाधीश चाहते थे पक मंतीरी का कोई रप६ इसी में उपर भेज दे । परन्त' मंतीरी इतने विनम्र और इमान्दार थे कि उनको मंत्री कहना ही नहीं चाहीए । ऐसे लोगों को अंचलाधीश क्या कर सकते हैं ?

लेकिन इस बार मंतीरी क'५ डरे ह'ए थे । इस बार अंचलाधीश विना रिपो६ लिखे नहीं ५ँडेगा । धनेसर रोज उनसे विन्ती करते थे, हमारे प'त्र को ५'डा दीजिए, पर वे कभी मीलते भी नहीं थे । एक दिन मिले तो,(

“अपने बेҽ को काबू में करियेगा नहीं और हमसे कहिएगा ? उसको काबू में करिये, नहीं हमको भी मंत्री(पद से हҽ देगा । दरभंगा से उसका नाम अंचलाधीश के पास आता रहता है कि आपका बेҾा वहाׅ पर लीҵरी करता है ।”

“.......... नहीं बब'आ १ वह अनजान है । लीҵरी वह क्या करेगा । वह भला आप(लोगों के सामने क्या है कि लीҵरी करेगा ?”

मंतीरी ६स से मस नहीं होते । रोज आश्वासन देते, परन्त' वीरगंज आकर अंचलाधीश के पास अपनी सफाई देकर चले जाते । ҵॅक्ҽर को जेल में अनिश्चित काल के लिए कैद हो गयी, स'रक्षा कानून के अन्तर्गत । धनेसर रोज आते और कहते कि मंतीरी आ७(दस दिन में ५'ҵा लेने को कहता है ।

इस बार मंतीरी और ҵॅक्ҽर की माׅ ने भी बोल चाल बन्द हो गया । दोनों की मׅा,खास वहनें थीं, एक ही कोख से जन्मी । बचपन में एक ही साथ खेली और दोनों का विवाह एक ही साथ एक ही ३र में दो भाइयों से ह'ई । भाई(भाई में झगҵा होने पर भी दोनों बहनों में बोल चाल कभी बन्द नहीं ह'आ । लेकिन आज उन लोगों का भी बोल चाल बन्द हो गया है। ҵाक्ҽर की माׅ को अपने प'त्र पर ममता है, मंतीरी की माׅ को अपने प'त्र पर । ҵॅक्ҽर की माׅ कहती है कि मंतीरी होकर भी उसने क'५ नहीं किया, आज हमारा बेҽ जेहल में बन्द है । मंतीरी की मׅा कहती है कि ҵॅक्ҽर ने ऐसा कर दिया कि अब अंचलाधीश रिपो६ लिख देगा । हमारा लҵका मंतीरी से हҽ दिया जायेगा । मातृत्व के प्यार ने भगिनी(प्रेम को अजगर की तरह निगल गया, वह सभी प्रेम को निगल जाता है ।

“पिता जी १ अब ५'६ने की कोई आशा नहीं है । हमारी परीक्षँ तीन महीना और रह गयी है । अब हम जेल से ....”

“बे६ १ अब तीन चार दिन में ही ले चलूׅगा । दूवारा क'५ मत सोचना नहीं तो फिर देश में आने नहीं देंगे ये लोग ।”

परन्त' तीन चार दिन कौन कहे ҵ९ महीना हो गया । सुरक्षा कानून है, कोइ ७िकाना नहीं रहता । एक दिन नरेन्द्र जेल की दीवार पर से कूद गया तो नरेन्द्र जी वेहोश । जब कानों में सीҼीयों की आवाज आने लगी तो पता नहीं कहाׅ से ऐसी फ'र्ती समा गयी कि वे सिर पर पैर रखकर जो भागे तो बोҵर पार करके ही दम लिया । सिपाही सीҼी बजाते रह गये, बोҵर ६पते देर नहीं लगी । वीरगंज जेल से एक मील की दूरी पर बोҵर है ।

दम धरने पर जब दर्द ह'आ तो ҵाक्ҽर कराह उ७ँ । कपार फू६ गया था । ६खना मुच'क गया था । ҵॅक्ҽर लׅगҵाते ह'ए रक्सौल रेल्वे स्҆ेसन की ओर धीरे(धीरे ब९ने लगा । रात का सन्नाҽ, अׅधेरा गहरा गया था । फरक था तो यही कि आज अपनी वजन के बरावर ला৩ी लेकर कोई उसको पह'ׅचाने नहीं आया था ।

अस्पताल से ৩ीक होने पर रामभरोसे जब ३र पर आया तो सबसे पहला यही काम किया कि वह अपने माׅ(बाप से अलग हो गया । जब वह खून का कै कर रहा था तो उसके ३रवाले सभी मिलके नरेन्द्र देव को गाली दे रहे थे । उसी ने हमारे बे६ की दूरगती करवा दी । उसकी माׅ तो गा(गा कर, करना कर के नरेन्द्र को ऐसी गालियाׅ दे रही थी की कै करते ह'ए ही रामभरोसे ने तय कर लिया था -“अगर ৩ीक होकर आ जाउׅगा तो इन लोगों से अलग हो जाउׅगा ।”

DO NOT COPY

ड

“करुठा १ ऐसा लगता है किसी दिन मैं ~ँक्~री को ऍो~ दू¤गा । इस द’निया की त्राहि त्राहि म’झसे देखी नहीं जाती । ३र में खाने को नहीं मिले तो उसे कौन ~ाक्~र ठीक कर सकता है ? देखना किसी दिन मैं ३र से निकल जाउ¤गा, सन्यासी हो जाउ¤गा करु०ा ।”

“त’म ऐसा क्यों बोलते हो ~ँक्~र । जब तुम्हारे अमृत बचनों की वर्षा होने लगती है तो मैं भूल ही जाती हू¤ कि मैं पति से प्रता~ीत, ३र से निकाली ह’ई एक द’खियारी औरत हू¤ । जब भी त’म ऐसा बोलते हो मेरा दिल बै७ने लगता है । लगता है मेरे उपर से इस दो ३~ी के स्नेह प्रेम का साया भी दूर जा रहा है । ..... क्या अभी ही त’म किसी सन्यासी से कम हो । द’निया¤ भर का फिकिर लेकर बै७ जाते हो । जब पत्र लिखकर देते हो तो प९ते प९ते आ¤सू निकलने लगती है, जब रुलाई नहीं रुकती तो बाथरुम में जाकर सिसकिया¤ लेकर रोने लगती हू¤ । जब खूव रो लेती हू¤ तो वापस लौ६ती हू¤ ताकि होस्६ल की ल~की देख नहीं ले । .... सच कहती हू¤ ~ँक्~र १ मैं त’म्हारे बिना नहीं रह सकती । बह’त दिनों की प्रता~ना के बाद भगवान ने म’झे एक ऐसा अमृतफल दिया है कि मैं अमर हो च’की हू¤ । परन्त’ म’झे ~र रहता है कि कही यह अमृतफल म’झसे कोई ऍीन तो नहीं लेगा । ~ँक्~र , त’म फिर कभी ऐसी बात नहीं करना, मेरा दिल बै७ने लगता है, मैं मर जाउ¤गी ।”

“करु०ा क्यों त’म अपने आप को झू७ला रही हो ? त’मको मालूम है कि किसी दिन ~ँक्~री समाप्त करके मैं यहा¤ से चला जाउ¤गा । जिस अमृतफल के विषय में त’म कह रही हो, त’म्हें मालूम है कि यह त’म्हें नहीं किसी दूसरी औरत को दिया गया है । त’म कितने दिनों तक अपने आप को बहला सकोगी ?”

मन्दिर की सी९ीयों पर भरी दोपहर में जब मन्दिर में कोई आता जाता नहीं अस्पताल के औफ दिन में ~ँक्~र और करु०ा की प्रेम भरी बातें हो रही हैं । ~ँक्~र उसकी गोद में सर रखकर बाते कर रहा है, करु०ा उसके बालों को अंग’लियों से सहला रही है ।

“म’झे मालूम है ~ँक्~र १ सब मालूम है । यह भी मालूम है कि यह मेरे जीवन का सच है । अगर झू७ भी हो तो इस झू७ को अपना सच बना लू¤गी । जीवन में जो सच मेरे सामने आया, उसने म’झको जिन्दा जला दिया, इस झू७ की अमृतवर्षा ने म’झमें संजीवनी भर दी है । म’झमें ऐसे नवीन जीवन का संचार हो गया है जिसका अन’भव मैंने कभी नहीं किया था । क्या होता है प्रेम यह मैंने त’मसे सीखा है ।” करु०ा ने ~व~वायी आ¤खों से उसकी ओर देखा “मैं उस औरत के अमृतफल को कहा¤ ऍीन रही हू¤ ~ँक्~र १ मैं तो उस फल की खूशवू से ही अपना जीवन का६ लू¤गी। त’म्हारी यादों और चिट्ठीयों से तो मैं अपना सात जन्म का६ दू¤गी । त’मने नाराज होकर भी जो चिट्ठिया¤ लिखी है वह भी कितनी मिठी लगती हैं । सच कहू¤, मैं त’म्हे कभी कभी जान बूझ कर नाराज कर दिया करती हू¤ ताकि तुम नाराज होकर लिखों । कैसे लिखते हो

“आशिक के जब आ¤सू निकले.............. ” प९ते प९ते ह¤सने लगती हू¤ ।

“तो फिर मेरे सन्यासी होने से ही क्या फरक प~ जायेगा ? मेंरी यादें और चिट्ठिया¤ तो उस समय भी होंगी ?”

“होगी, परन्त’ उस औरत का अमृतफल तो चला जायेगा । त’ अपने बाल(बच्चों से दुर चले जाओगे । क्या ऐसा हो सकता है ~ँक्~र कि यहा¤ से जाने के बाद मैं भी त’म्हारे साथ चलू ?”

"यह कैसे सम्भव है ?"

"ढॅक्ढर ! त'म ढॅक्ढर हो, कही भी ढॅक्ढरी करना और मैं त'म्हारी नर्स बनकर रहूॅगी । त'म्हारे साथ साथ उस औरत की भी सेवा करुॅगी जिसका यह अमृतफल है ।"

"करुणा ! त'म तो अपनी पति के द्वारा प्रताड़ित और घर से निकली ह'ई औरत हो । परन्त' मैं अपनी पत्नी से प्रताड़ित नहीं हूॅ । उसका सारा अधिकार म'झ पर है । फिर क्या त'म्हें ऐसा नहीं लगता कि हम दोनों ही एक गलत रास्ते पर चल रहे हैं ।"

"हो सकता कि त'म गलत रास्ते पर चल रहे हो, परन्त' मैं कही भी गलत नहीं हूॅ । म'झमें इस बात की तनिक भी ग्लानि नहीं है कि मैंने त'म्हारे साथ पाप किया है । बल्कि आज मैं इतना गौरव गर्व से फूली ह'ई हूॅ कि मैं एक पत्थर से फूल बन गयी हूॅ । देखते नहीं हो मेंरी म'स्क'राहट ? देखते नहीं हो मेंरी सेहत, पहले से कितनी अच्छी हो गयी है ? मेंरी म'स्क'राहट जो किसी दिन तिरोहित हो च'कि थी, वह फिर वापस आ गयी है, त'म्हारे प्यार में । म'झे लगता है कि पूर्वजन्म से ही त'म ही मेरे पति हो, भूल से किसी दूसरे प'रुष से विवाह हो गया है ।"

"लेकिन करुणा ! इतना प्यार त'म अपने पति को भी तो दे सकती हो । उनको अपने प्यार से काबू में करके उनका शराब भी पीना छ'ड़ा सकती हो ?"

"ढाक्ढर ! इसीलिए तो मैं अपनी राम कहानी त'म्हे अभी तक नहीं स'नाई । क्या अभी तक त'म्हें म'झ पर विश्वास नहीं ह'आ ? जब तक मैं त'म्हारे विश्वास को पूरी तरह नहीं जीत लूॅगी, मैं अपनी राम कहानी नहीं कहूॅगी । म'झे ढर है कि कही त'म म'झसे घृणा करने लगोगे । त'म्हारे प्यार की यह घनी छाया कही मेरे सर से उठ नहीं जाय, इसीलिए मैं अपनी राम कहानी अभी त'मसे नहीं कहूॅगी । मेरे पिता जी आये ह'ए हैं कल मैं उनसे मिलवाउॅगी त'मसे ।"

करुणा ने उठते ह'ए कहा

"चलो अब काफी देर हो गयी । मन्दिर में लोग आने जाने लगेंगे । म'झे नहा धोकर ड्यूटी पर भी जाना होगा । मेंट्रन ने जब से स'ना है कि हमारे त'म्हारे बीच .... "

दूसरे दिन करुणा ने ढॅक्ढर को अपने पिता जी से मिलाया ।

"इनसे मिलिए पिता जी, ये हैं ढॅक्ढर नरेन्द्र देव । इन्होंने ही घर जाते समय दवाइयाॅ दी थी जिनसे अपना राजीव ठीक ह'आ था । बड़े अच्छे आदमी हैं ।"

ढॅक्ढर ने देखा करिव ट० वर्ष के वीमार बूढ़े ने ढॅक्ढर के आगे हाथ जोड़ दिया । लगता था अब बह'त दिन नहीं बचेंगे ।

"बाबा ! आपने अपनी पतोहू को क्यों नर्सिé में भेजा? इसके घर को सम्भालने में लगाना चाहिए ।"

"लगाना तो चाहिए बेटा । ऐसी क'लवधू पाकर मैं धन्य हो गया हूॅ । अगर यह नहीं रहती तो पता नहीं परिवार का क्या हाल होता । प'त्र क'प'त्र निकल गया । मैंने भी सोचा कि इसके लिए यही उपय'क्त जगह है । ऐसी लक्ष्मी, भारत की लाज, भारत की तस्वीर सबको मिले । इसका यहाॅ आने से तो सारे घर का काम चौपट हो रहा है । लेकिन नर्सिé के दिन कट जायेंगे तो फिर वापस चली जायेगी । फिर हमारा क'प'त्र इसके साथ कोई मनमानी नहीं कर सकेगा । हम भी तो ज्यादा दिन के मेंहमान नहीं हैं, पता नहीं कब भगवान उठॅ ले । इसलिए इसको यहाॅ पर भेजना ही अच्छा था ।"

करुणा वही पर बैठी स'ब'क रही थी कि क्या ढक्ढर त'म्हे अभी तक विश्वास नहीं ह'आ ?

DO NOT COPY

तीन महीने के बाद

आज करु०ा की आ¤खे सूजी ह'ई हैं । मुरझाये ह'ए चेहरे पर चिन्ता की रेखा दिखलाई प८ रही है । अभी कल ही ३र से वापस लौ६ कर आयी है ।

“करु०ा क'शल तो हो ? क्या बात है ? चेहरा, आ¤खें इतनी लाल, सूजी ह'ई क्यों हैं ? ८ँक्६र ने करु०ा का हाथ पक८ कर सब समाचार एक ही साथ पू५ लेना चाहा ।

करु०ा विफर उ७ी । वह अपने आप को रोक नहीं सकी, रो प८ी ।

“८ँक्६र आज मैं त'म्हारे गले से लिप६ कर फिर रोना चाहती हू¤ । मन्दिर के पास, दोपहर के बाद मैं आ जाउ¤गी । आज आफ६रनून ८्यूदी नहीं है । ८ाक्६र मेरे पिता जी चल बसे । जो मेरे सबसे ब८े सहारे थे ।

“लेकिन उन्हें ह'आ क्या था, अभी तीन महीने पहले .... ८ँक्६र ने आश्चर्य से पू५ँ ।

“८ँक्६र कहता था, कैन्सर, फेफ८े का कैन्सर । बह'त दिनों से उनको प्रैँस्६े६ इन्लार्जमेंन्६ था । कैन्सर में परिवर्तित हो कर फेफ८े का सेकेन्८री कर दिया । फिर अस्पताल में ही .... ” करु०ा हिचकिया¤ लेने लगी ।

“करु०ा मन को मजबूत करो । वार्८ में इस तरह नहीं रोते । चलो हम मन्दिर में पहले पह'¤चे रहेंगे ।”

८ँक्६र मन्दिर की सी९ीयों पर इन्तजार कर रहा था । सामने महाशक्ति की म'र्ति थी, पत्र(प'ष्प च९े ह'ए थे । उन्हीं सी९ीयों पर पता नहीं करु०ा के साथ प्रेम के कितने ईं०ँ ग'जार च'के थे । करु०ा के ३र चले जाने पर व्याक'ल भ६कते ह'ए दीवार पर एक जगह करु०ा लिख दिया था, वह दिखलाई प८ रहा था । मा¤ ने अपने आश्रम में दोनों के बीच ऐसा प्रेम बा¤६ँ था की दोनों ही धन्य हो गये थे । तभी करु०ा आयी । आते ही वह एक६क ८ँक्६र की आ¤खों में अपनी ब८ी ब८ी आ¤खे ८ाल दी, वे ब८ी ब८ी आ¤खें जिसकी सम'न्दर जैसी गहराई में पहले दिन ही ८ँक्६र ८ूव च'का था, ८ँक्६र के मन को किसी दिन यही आ¤खें पूरी तरह आकर्षित कर लिया था । उस सम'न्दर सी आ¤खों में सम'न्दर ५ल५ला आया और ६प(६प गिरने लगा । करु०ा अपने आप को रोक नहीं सकी । ८ँक्६र के गले से लिप६ कर रोने लगी । पता नहीं इसी तरह वह कितनी देर रोती रही । ८ँक्६र उसे सम्भाला और बै७ँया । आज ८ँक्६र की गोद में उसका सर और ८ँक्६र की अंग'लिया उसके बालों में थी । बह'त देर के बाद जब वह हल्की हो गयी तो बोली -

“८ँक्६र त'मने म'झ पर हमेंशा अविश्वास किया । त'मने कभी म'झ पर पूरा विश्वास नहीं किया, क्या त'म मेंरी कहानी स'नोगे ? ”

“ह¤ा करु०ा, अब तो अवश्य सूनू¤गा ”

“स'न कर म'झ से ३ृ०ाँ तो नहीं करोगे ? अपने प्यार की वर्षा तो नहीं बन्द कर दोगे ?”

“नहीं करु०ा ! मैंने त'म पर कभी अविश्वास नहीं किया । पर मेरे मन में हमेंशा यह बना रहा कि त'म म'झ से क'५ ५'पा रही हो । क'५ है जो त'म म'झसे कहना नहीं चाहती । मैं त'म्हारे मन की इस गहराई तक पह'¤चना चाहता हू¤ । क्या मैं उस काविल नहीं हू¤ ? जिसको अविश्वास कह रही हो वह त'म्हारे मन में गहरे उतरने की प्रक्रिया है ।”

“काविल ! काविल तो त'म इतने हो कि में त'म्हारे चर०ों की धूली लेकर चन्दन लगाउ¤ । पर क्या त'म स'न सकोगे ?”

DO NOT COPY

"कहा¤े तो, वह कौन सी बात है जो मैं स'न नहीं सकू¤गा ?"

"तो स'नो, मैं एक बदचलन औरत हू¤ । पता नहीं कितने मर्दो के साथ मेरे शारीरिक सम्पर्क हो च'के हैं । होस्६ल में जो लडकिया¤ मेरे विषय में, कहती है वह सब सच है । परन्त' यह भी सच है टँक्६र , कि मैंने त'मको धोखा नहीं दिया ।" करुण वेलाग, वेबाकी के साथ अपनी द'श्चरित्रता को स्वीकार किया, ऐसे जैसे वह ३ृ०ँ भी करे तो कोई बात नहीं ।

"अगर यह सच है तब भी त'म कहती हो कि त'मने म'झे धोखा नहीं दिया ? इससे बडा झू७ भी इस द'निया¤ में हो सकता है ? इससे बडँ फरेव भी कोई हो सकता है ? " टँक्६र ने अपनी गोद से करुण की गर्दन निकाल झ६क कर दूर खडा हो गया, परन्त' वह उसी तरह अविचल बोलती रही ।

"हा¤ १हा¤ १ मैंने त'मसे कभी धोखा नहीं दिया । मैंने जब से त'म्हें प्यार किया, त'म्हारे प्यार ने म'झे यह सब ⁵ँ८ देने के लिए मजबूर कर दिया । इस प्यार को पाकर मैं पू०ँ हो च'की हू¤, मेंरी सारी मृग(तृष्णाऐं शान्त हो च'की हैं । फिर त'म कैसे कह सकते हो कि मैंने त'झे धोखा दिया है ? अगर त'म म'झसे दूर भी जाना चाहते हो तो भी मेंरी राम कहानी स'न लो ।"

फिर वह अपनी राम कहानी इस प्रकार स'ना टँली

"मेरे पिता जमीन्दार थे, परन्त' स'राज के बाद जमीन्दारी समाप्त हो च'की थी । धीरे(धीरे सारी सम्पति स्वाहा हो च'कि थी । खर्च और ७७ वा६ प'राने ही थे । पर आमदनी क'५ नहीं था । हम ५ बहनें थी । मैं अपने बडे भाई के साथ ज'८वा पैदा ह'ई । पा¤चों बहनों की शादी करते(करते बची(ख'ची सम्पति भी स्वाहा हो गयी थी । अब हमारी आवरु कर्ज से बची ह'ई थी । कर्ज भी एक बार खेत और ३र निलाम होकर च'काना पडँ । हम लोग सडकों पर आ गये । पिता जी उसी गम में चल बसे । चाचा जी अपने सस'राल में जाकर ३र बसा लिए थे । मेंरी मा¤ अब दूसरों के ३र चौका बरतन करके हमको पाला पोषा । जमिन्दारीन मा¤ किसी की चौका बरतन कैसे करती होगी, त'म सोच सकते हो । तिलक दहेज को कौन कहे, उसके लिए तो क'५ था भी नहीं । दूर के एक रिस्तेदार ने कहा कि लडकी स'न्दर है, कल्या०ँपूर के फलाना को दे दीजिए तो राज करेगी । कल्या०पूर में अभी भी जमीन्दारी की जमीन है । परन्त' लडके की शादी हो च'की है । यह उसकी दूसरी शादी होगी ।"

अब टँक्६र करुण के पास बै७ गया । उसकी कहानी ठाक्६र की ख'द की कहानी से कितनी मि'लती(ज'लती है । उसकी मा¤ भी ५, बहनें थी, एक जमीन्दार ३राने की लडकी थी । टँक्६र भी बहन के साथ ज'८वा पैदा ह'आ था । क्या भगवान प्रेम में क'५ इसी तरह का संयोग मिलाता है ? उसने आत'रता से पू५ँ

"फिर"

"फिर वही ह'आ जो होना था । मा¤ इसके लिए लाचार थी । मैं तेरह वरस की अवोध बालिका, क'५ नहीं जानती थी । जब शादी ह'ई, तो एक बार सस'राल आकर फिर वापस आयी । मेंरी सौत को कोई बाल(बच्चा नहीं था । वह म'झे खूव मानती थी, सास सस'र देवता समान थे । पति ने तेरह वरस की उमर में ही म'झसे ..... । परन्त' सौत ने ऐसा नहीं करने दिया । उसी समय मैं स'न च'की थी कि मेरे पति शराव पीते हैं । मैं इस सबके परि०ँम सोच सकने में असमर्थ थी । .... दो वर्ष के बाद जब मैं, पन्द्रह की ह'ई तो गौना ह'आ । स'हागरात में मेरे पति शराव पीकर आये और ऐसे नोच टँले कि मैं पन्द्रह बरस की बालिका बेहोश हो गयी । पति अलग वेहोश होकर सो गये । स'वह पू५ा भी नहीं कि तवियत कैसी है । च'प(चाप मेरे गहने लेकर चले गये । शाम को हंगामा ह'आ, मेरे कहने पर । वे हमारे सारे

DO NOT COPY

गहने बेंच च’के थे । पिता जी को मालूम था कि शराव पीकर वे ऐसी हरकते करते हैं, किन्त’ वहू के सारे गहने वे बेंच देंगे ऐसा उनका अन’मान नहीं था । वे म’झसे माफी माग्गने आये, उसको स’धारने के लिए उसकी शादी त’मसे की थी । लेकिन लगता है वह स’धरेगा नहीं । मैंने उनसे पूछ्रँ कि जव ऐसी बात लगती है तो आपने मेंरी शादी उनसे क्यों की ? शादी पक्की करने तो आप ही गये थे । पिता जी माफी माग्ग लिए, जो होनी थी सो हो गयी । सिर्फ इतनी ही बात होती तो कोई बात नहीं थी ढँक्छर । होनी अभी बह’त बाकी थी । परन्त’........

करुवा हिचकियाग्र लेने लगी । ढँक्छर अब फिर उसका सर अपने गोद में लेकर सहलाने लगा था । पूछ्रँ

“परन्त’ क्या करुवा”

“नहीं ढँक्छर १ अब इस पर से ध्रोड ही दो तो अच्छ्रा है, चलो अब होस्टेल चलें ।”

“नहीं करुवा, त’म्हे हमारी सौगन्ध । क्या त’मको म’झ पर विश्वास नहीं है ?”

“विश्वास तो इतना है की संसार में किसी पर भी नहीं ह’आ । प्रेम, विश्वास सब क’छ्र यही पर आकर देखा है । लेकिन मेरा मन इतना डरा ह’आ है कि लगता है, ध्रँढा से ध्रोढा स’ख भी कही म’झसे छ्रिन न जाय । इतना विश्वास है, इतना प्रेम है, इसीलिए तो इतनी डरी ह’ई हूग्र । त’मसे नहीं, इस समय से ।

“डरने की कोई बात नहीं करुवा । त’म अभय होकर कहो । यह स’ख त’मसे कोई नहीं छ्रीन सकता ।”

“परन्त’ अब वे मार–पीट पर उतर आये । वे आकर म’झसे रुपया माग्गते, नैहर से रुपया लाने को कहते । मैं कहाग्र से रुपया लाती, नैहर में तो सब क’छ्र स्वाहा हो गया था । कैसे होते हैं ये लोग ? यही लोग जब किसी कोठे पर जाते हैं तो रुपया भी देते हैं और धक्के खाकर बाहर निकलते हैं । यही लोग जब उसे अपने कोठे पर लाते हैं तो अपनी इज्जत बना लेते हैं । फिर उससे इज्जत और रुपष दोनों लेते है, दान(दहेज लेते हैं, च’मौनी, प’जाई लेते हैं । .... इस पर वे और विगडते, मारते पीटते । यह रोज(रोज की घटना हो गयी । मैं ट’क’र(ट’क’र इन्हीं बडी(बडी आग्रखों से देखती रही । जिसकी त’लना त’मने अपने पत्रों में सम्राट अशोक के कुवाल की आखों से की है ।

.... कभी -कभी पलंग से मेरे हाथ पाग्रव बाध देते, जब मैं चिल्लाती तो मेरे म’ग्रह में कपडे ठूग्रस देते । मैं न चिल्ला पाती, न छटपटँ पाती । तव वे म’झे नंगे करके उसी तरह मेरे साथ ....

“बस १बस १ बस करो करुवा१ इतना बडा अत्याचार और त’म दस वर्षो तक सहती रही । त’मने बगावत क्यों नहीं किया करुवा ?

“बगावत क्या है ढँक्छर १ पहले पूरी बात तो स’न लो । आज मैं त’म्हारे सामने अपना दिल खोल दूग्रगी । मेरे जीवन में जो दर्द इकट्ठा ह’आ है सब आज बूग्रद(ब’ग्रद टपक पडेंगे । इसी से तो किसी का दिल ख’लता है ढँक्छर । मैंने त’मसे प्रेम करके बगावत ही तो किया है । घर से निकल कर बगावत ही तो किया है मैंने । परन्त’ दस बर्षो तक सहती रही इसीलिए कि इसके सिवा मेरे पास दूसरा कोई उपाय नहीं था । उस स्थिति के कडवे जहर को पीते ह’ए ही जब मैंने मैंट्रीक कर लिया तो उसके त’रत बाद बगावत कर दिया । यह बगावत ही तो है ढँक्छर । मैंने बगावत तो सिर्फ अपने पति के साथ ही नहीं किया बल्की द’नियाग्र भर की मर्द जाती से बगावत किया है । इसीलिए तो लडकियग्रा म’झे बदचलन कहती हैं और मैं थी भी । परन्त’ त’मने आकर मेरे सारे बगावत को ठडँ कर दिया, ब’झा दिया उसे, उसे प्रेम में बदल दिया । मैं नहीं जानती थी कि द’नियाग्र में त’म्हारे जैसा प्रेम

DO NOT COPY

करने वाला भी मर्द होता है । मैंने हर मर्द को एक जैसा देखा । वे हमारे रक्त च'सने के लिए आते थे । बगावत ७÷ँ करने वाले तो त'म्ही हो ट्टँक्ह्र । मैंने तो बगावत का ऐसा झ्ंडा लिया था, जो कभी शान्त नहीं होता ।"

"लेकिन करुण ९ त'मने जिस द'श्चरित्रता और वदचलनी को बगावत कहती हो, क्या यही बगावत है ? क्या यही बगावत है जिसकी लपट्ों में त'म ख'द जलकर मर गयी ? क्या त'म्हारे सामने किसी कानून का रास्ता नहीं था, द'नियाँ में और जगह नहीं थी ?"

"ट्टँक्ह्र ९ त'म कितने भोले हो ? त'म्हारे इसी भोलेपन पर तो मैं मर मिट्ती हूँ । सोचती हूँ, वह औरत कितनी भाग्यशालिनी है जो पति के रुप में त'मको पायी है । .... त'म किस कानून की बात करते हो, जिसको पैसे वाले बनाते हैं और विगाड्ते हैं ? पति से निकल कर अदालत के चंग'ल में ,प'लिस के चंग'ल में फँसने के अलावा क्या त'म्हारे कानून के पास कोई चीज है ? जितने ट्टँक्ू बलत्कार नहीं करते हैं, उतने रोज प'लिस करती है । मेरे गाँव की एक लड्की फरियाद लेकर गयी थी, थाना पर । दूसरे दिन जब उसकी लाश मिली तो पोस्ट्मार्ड्म से पता चला कि लड्की की मृत्य' बलात्कार से ह'ई है । सब लोग कह रहे थे कि वह बदचलन थी, गाँव की नाक क्ट्वा दी । क्या इसी कानून के पास जाने के लिए कहते हो ? फिर मेरे बच्चे जो ९ोट्(९ोट् थे उनको कौन पालता(पोषता । इतने बड् संसार में मैं बगावत करके कहाँ जाती ? अगर ३र प्ँड कर बगावत करती तो सीधे को७ पर पह'ँच जाती, को७ पर । मैं और मेंरी ९ोटी(९ोटी बच्चियाँ भी । क्या यही बगावत करने के लिए कहते हो ? अगर वे नहीं होते तो उमराव जान भी वन जाती । मेंरी अन'पस्थिति में सारी लड्कियाँ कहती हैं कि उमराव जान किसी म'जरे में गयी होगीं । मेंरी स'न्दरता पर सारी लड्कियों को चीर् है । बच्चे होने के बाद भी मैं उनसे क्यों स'न्दर हूँ । अगर बच्चे नहीं होते तो मैं उमराव जान भी बन जाती । लेकिन उस आइने को साफ करने लायक भी तो मैं नहीं थी । .... इसीलिए मैंने बगावत किया द'श्चरित्र और बदचलन होकर । वह भी ...."

करुण बोलते बोलते रुक गयी । ट्टँक्ह्र को लगा जैसे कोई तारतम्य ढ्ू गया ।

"वह भी क्या करुण ?"

"एक दिन मेरे पतिदेव आये, शराव के नशे में गिरते पड्ते, आते ही म'झे एक थप्पड् मार कर जगाया जो उनकी रोज की आदत थी । .... खाना बनाने के लिए कहा । उनके आते ही मैं डर के मारे थर थर काँपने लगती थी, पता नहीं कहाँ चाँट्ँ जड् देंगे । मैंने खाना बनाकर, उनको और उनके साथ क'५ और लोग थे, खिलाया । वे लोग सोने चले गये । मैं भी अपने कमरे में सोने चली गयी । पति के साथ बातचीत करके मैं सोयी हो, जीवन में कभी ऐसा अवसर नहीं आया । ...... जब आधी रात ह'ई, डगमगाते ह'ए मेरे पति कमरे में दाखिल ह'ए । ह'क्म से दरवाजा हमेंशा ख'ला रहता था । बन्द कर दूँ तो क'हराम मच जाता था । लाज शरम सब ताक पर, उसी समय गालियों की बौ९ार, म'ँहल्ले भर के लोग जमा हो जाते और फिर शर्म शर्म कह कर सो जाते । .... उन्होंने मेरे साथ ...... म'झे उसमें अब कोई रस नहीं था । वे जैसे आते, वैसे चले जाते या विस्तर के एक तरफ ल'ह्क जाते । मैं जैसे सोयी रहती, वैसे ही सोयी रह जाती । परन्त' आज मैं अपने विस्तर से उ९ल पडी । और लोग भी जो सात आदमी थे मेरे कमरे में आ ३'से थे ? मैंने उनसे प'९ा कि ये लोग क्यों यहाँ पर ३'स आये हैं ? जानते हो ट्टँक्ह्र मेरे पति ने क्या कहा ? .... मैंने इनके पैसों से शराब पीया है, ये हमारे दोस्त हैं, त'म इनको अपना शरीर ......"

Draft Copy

बस करो करु0ा बस करो ! इससे आगे ट्टँक्द्दर क'५ भी नहीं स'नना चाहता था । वह उ७कर खद्दा हो गया, करु0ा उसके कलेजे से लिपटी ह'ई रोये जा रही थी । उसे लगा कि मन्दिर, महाशक्ति मा¤, अगल(बगल के पेट्ट, सीर्ी, जमीन, सारा संसार नाच रहा है, करु0ा को अपने सीने से चिपर्द्दये वह ख'द उस भूकम्प के साथ नाच रहा है । सीने से उसी तरह चिपद्दे ह'ए ही वे दोनों बोल रहे हैं । ट्टँक्द्दर ने कहाः(

"करु0ा ! तेरी महानता के सामने आज मेरा सारा प्यार, सारा स्नेह बौना हो गया है । जिसे त'म महान प्रेम कहती थी, वह उसके आगे क'५ नहीं है करु0ा ।

"............ ट्टँक्द्दर जब मैंने इनकार कर दिया तो मेरे हाथ पैर पलंग में बा¤ध दिये गये और म'¤ह में कपद्दे ७ूस दिये गये । फिर पति के सामने ही सात लोगों ने ...."

"बस करो करु0ा ! मेरे सर माथे के नश फद्द जायेंगे । मैं यह बर्दास्त नहीं कर सकू¤गा । "

"नहीं ट्टँक्द्दर ! मैं द'श्चरित्र ह¤ू, बदचलन हू¤, लद्दकिय¤ा कहती हैं, त'म भी कहते हो । म'झे बगावत करना चाहिए । म'झे पति को अपने प्रेम से जीतना चाहिए । त'मने चिठ्ठीयों में लिखा है, म'झसे नफरत हो गयी है ।"

"म'झे क्षमा कर दो करु0ा ! आज मैं त'म्हारी महानता के सामने त'च्५ हो गया हू¤ ।"

"क्या हम दोनों त'च्५ मिलकर एक विराद्द(प्रेम की रचना नहीं कर सकते ?"

"कर सकते हैं करु0ा, कर सकते हैं । मैंने त'म्हे समझने में जो भी गलती की उसे क्षमा कर दो । इतने बद्दे हाहाकार की कल्पना भी नहीं की थी । क्षमा !क्षमा ! हे देवीदयानीधि ! मर्द संसार में हाहाकार मचा रखा है ,औरत उस हाहाकार को करु0ँमयी होकर पी रही है ।"

इसी तरह मन्दिर के साथ सारा भूगोल, खगोल ३ूमता रहा और ३ूमते रहे दोनों प्रेमी य'गल ।

"........ और इसी तरह पति के सेज पर मेरा नथ उतरता रहा । अपनी ही सेज पर मैं उनके शराब की कीमत च'काती रही, मैं अपने पति के सारे कर्म का0द्दों की दक्ष्0ँा देती रही । द्दाक्द्दर ! एक हिन्दू नारी इस तरह एक ऐसी बोतल में बन्द कर दी गयी, जिसे हर कोई खोल कर पीता रहा है ।"

"करु0ा ! पता नहीं कब से इस देश में ऐसा खेल होता रहा है । द्रौपदी को नंगी करने का दावेदार पति भी इस देश में धर्मावतार कहलाता रहा है करु0ा । इतना बद्दँ पाख0द्द, इतना बद्दँ धोखा द'निया¤ के किसी भी समाज में नहीं है ।"

"द्रैंपदी को तो कृष्0ा ने आकर बचा लिया था ट्टँक्द्दर । परन्त' मेरे लिए तो कोई नहीं आया । त'म आये भी तो बद्दी देर करके । तेरी ही खोज में मैं दर(दर भद्दकती हुई यहा¤¤ पहू¤ची हू¤ । मा¤ ने म'झे वह पू0ँता प्रदान कर दी जिसकी मैं प्यासी थी । पति से प्रताद्धित राधा त'म्हारे अमृतक'¤ज में आकर जी उ७ी है । अब कोई साध वाकी न रहा । अब ..."

उस नाचते ह'ए भूगोल खगोल के साथ दोनों अचेत होकर मा¤ के चर0ों में जाकर गिर पद्दे । हवा का एक झोंका आया और मा¤ के चर0ों में च९ गयी फूल (पत्तिया दोनों के शरीर पर बरसने लगे । वह'त देर के बाद जब ट्टँक्द्दर का होश लौद्दा, आ¤ख बन्द किये ही पू५ँ ।

"करु0ा"

"ह¤"

DO NOT COPY

"संसार क्या है ? कैसे होते हैं ये लोग ?"

"त'मसे मिलकर लगा कि बह'त अच्छे भी होते हैं ।"

"क्या वे नहीं जानते की संसार में सबको एक दिन चले जाना है ?"

"जानते तो हैं, लेकिन यह नहीं जानते कि पानी को म'ट्ठी में नहीं पकडना चाहिए । वे अपनी म'ट्ठी में सब क'५ पकड लेना चाहते हैं और एक दिन सारी जिन्दगी उनकी म'ट्ठी से निकल जाती है । ...... अच्छे भी जानते हैं, ब'रे भी जानते हैं । अच्छे इस दर्द को बू¤द(बू¤द इकट्ठे करते जाते हैं, ब'रे क'५ इकट्ठे नहीं कर पाते ।"

"करुण"

"उ¤"

"यह जीवन क्या है, किसको मालूम है ?"

"सपना है, एक प्रेम का सपना "

"कही यह सपना अधूरी तो नहीं रह जायेगी ?"

"नहीं दँक्दर १ मेरा सपना तो पूरा हो गया । हम दूसरे जनम में भी मिलेंगे । इसीलिए अब विदा दो दँक्दर । ..

म'भ.....अ.......से नफ....रत.....नहीं कर ना ।"

दँक्दर को क'५ समभ में नहीं आया, आ¤खें बन्द किये ही पू५ँ ।

"करुण"

"   "

"क्यों रो रही हो क्या मैंने चिट्ठी में नफरत की बात लिख दी है इसीलिए ?"

"   "

"क्यों क्या ह'आ, जवाफ नहीं देगी ?"

"   "

"क्यों म'भसे रु७ गयी क्या, इधर आ मैं त'भे मना लेता   हू¤ "

दँक्दर ने आ¤खें खोल कर उसे अपनी बाज'ओं में खीच लिया । लेकिन उसका निस्पंद शरीर देखकर आवाक रह गया । इस शरीर में कोई गती नहीं थी, कोई हरकत नहीं था । ऐसा नहीं होता था कभी । किस तरह वह व्याक'ल होकर अपने दँक्दर की गले में लिप६ लिप६ जाती थी । वह हडबडँ कर उ७ गया । गर्दन इधर उधर करके देखा, करुण तो समाप्त हो च'की थी, पखेरु उड च'के थे । ..... दूर पडी शीशी, जहर की शीशी, हाथ में पत्र । ....त'ने तो कहा था कि हम दोनों त'च्५ मिलकर एक विरा६ प्रेम की रचना करेंगे । यह कैसी प्रेम की रचना कर दँली करुण, क्या ह'आ त'म्हे ? कैसे ....? .... दूर पडी शीशी ? जहर की शीशी ? हाथ में पत्र ? वह पत्र खोलकर प९ने लगा

"दँक्दर १

अलविदा,

जीवन भर म'भे जिस चीज की तलाश थी, उससे त'ने मेंरी भोली भर दी । त'म्हारे प्यार को पाकर मैं पूर्ण हो च'की हू¤, तृप्त हो च'की हू¤ । जैसे भगवान को पाकर कोई साध बाकी नहीं रहती, किसी चीज को पाना शेष नहीं रहता उसी तरह तूभे पाकर कोई साध बाकी न रहा । हमारे पति अभी भी जिन्दा हैं । अपने पति के शराव के लिए अब मैं त'म्हारे प्यार का म'ल्य नहीं च'का सकती । दूसरा कोई रास्ता न रहा कि इसको स'रक्षित रख सकू¤ । त'म तो जानते हो उस दिन होस्६ल में आकर कितना शोरग'ल मचाया था । मैं उनसे दूर रहकर जिन्दा नहीं रह सकती । वे हर कही ५'रा लेकर मेरे पास पह'¤च जाते हैं । जीते जी मैं उनसे ५'६कारा नहीं पा सकती हू¤, यह मैं देख च'की हू¤ । त'म यह पत्र लेकर,

DO NOT COPY

म’भ्के यही ૐोडकर इस मन्दिर से निकल जाना । त’म्हारी वीवी की इस अमृतफल पर कोई आ¤च न आवे ड॑क्ष्दर । तुभ्के मेरे प्यार की कसम । म’भ्के मा¤ के कदमो में यही ૐोड देना ।”

दूसरे पत्र में लिखा था

“अपने स्वर्गारोह० की मैं ख’द जिम्मेंदार हू¤ । प’लिस इसके लिये किसी को तंग न करे ।

करु०ा”

ड॑क्ष्दर की आ¤खों से अविरल धारा बह रही है । एक बार उसने कातर नजरों से करु०ा को देखा । जहर की शीशी को, पत्र को, फिर करु०ा को कंधों पर उ७ लिया चलने को ह’आ

“त’भ्के मेंरी प्यार की कसम”

“त’भ्के मेंरी प्यार की कसम”

“त’भ्के मेंरी प्यार की कसम”

मानों मन्दिर की दीवारों से आवाज ६करा ६करा कर उसके पाव पकड लिए । उसने लाश वही रख दी, उसके पा¤व ५’ए और आ¤खों को पोंૐते ह’ए मन्दिर से बाहर निकल गया । वह धीरे धीरे ब९ता गया । करु०ा की पार्थिव शरीर उसे अपनी ओर खींच रही है । प्यार की कसम उसे होस्६ल की ओर । ब९ता गया, ब९ता गया, वह न जाने क्या सोचता गया ।

“कैसा है यह प्यार जिसमें दूष० शोष०ा, भोग सब ७७के से रह गये । जो पति के सारे हाहाकार को पीती रही वही प्यार के एक उलाहने को भी सह न सकी । नफरत शब्द को कभी भूल न सकी । जो द’निया¤ भर के हाहाकार को पीती रही वह अपने आप को मेरे प्यार के इस हाहाकार में भ्कोंक दिया ।”

दूसरे दिन च’प चाप ड॑क्ष्दर अस्पताल में उस पार्थिव शरीर का पोस्६मार्६म होते ह’ए देख रहा था । पोस्६मार्६म जिसमें उसके आ¤स’ओं की एक बू¤द भी नहीं मिली, कही भी पोस्६मार्६म यह नहीं बतला सका कि उसका जिस्म कितने मर्दो का हाहाकार पी च’का है ।

पोस्६मार्६म करके उसकी लाश को उसके पति को सौप दिया गया , जिस पति को उसका शरीर ५’ने का भी अधिकार नहीं था । द्रोपदी की लाश धर्मावतार को सौप दिया गया । उसने उस लाश पर अपना अधिकार जमा लिया । हमेंशा उसने उसकी लाश पर ही अधिकार रखा है ।

ढ

उस दिन से ड॑क्ष्दर रोज अपने कमरे में स’ब’कता था । उसके जीवन से क’५ खो गया था । उस दिन वह और भी रो पडा जिस दिन उसने स’ना की उसके फूस के ३र में आग लग गयी, वह आग से जलकर राख हो गयी है । पिता जी गा¤व से आये थे । उस देवता के चेहरे को देख कर उसने सोचा था कि अब वह बाकी प९ई अध’री ૐँड देगा । ५ महिने में सीनियरसिप पूरा हो जायेगा । पी.जी. वह नहीं करेगा । इसी बीच एक दिन जब वह रेडियो

DO NOT COPY

पर स'ना वी.वी.सी. से कि मंतीरी को विद्यार्थी ने ञद्द ३०६ तक सपरिवार ३ेर रखा तो अपने इसी कमरे में रो पट्टँ था । करु०ा के गम में नहीं । उस गम के साथ एक भयंकर गम की याद आ ज'ट्टी थी । उसे याद हो आया कि मंतीरी से द'त्कार खाकर जब ३र से आया था तो इसी कमरे में बै७कर कितना रोया था । किस तरह गिरेन्द्र जब मैंद्रिक में फेल हो गया तो उसे अपने ही साथ रख कर प९ँ रहा था । अपने स्कौलरसीप के पैसे से ही उसे भी प९ँता था । पैसे के अभाव में जब उसके इन्द्दर की परीक्षा का फार्म भरने के लिए एक हजार रुपये की जरुरत ह'ई तो उसे मंतीरी के सामने हाथ फैलाना पट्टँ था । किस तरह वह जिस ३र में रहता आया था उसमें आग लग गयी थी और वह उसी जले ह'ए ३र में रहा था । किस तरह वह मंतीरी के द'त्कार देने पर यहा¤ वहा¤ रुपयों के लिए भ६कता रहा था, पर किसी ने रुपया नहीं दिया । उस दिन से ३र लौ६ कर आने पर वह इसी कमरे में बै७ कर चाहा था कि सारी द'निया¤ और उसकी व्यवस्था में आग लगा दे । फिर वह मेंज मर सिर ढ्का कर रोने लगा था । नहीं अब वह यहा¤ नहीं रहेगा, ३र पर चला जायेगा, पैसे कमायेगा, पी.जी. नहीं करेगा ।

इन्कलाव जिन्दावाद १इन्कलाव जिन्दावाद १ निरंक'श शाही-म'र्दावाद १ पंचायीती व्यवस्था म'र्दावाद १

गजव हो गया, चमत्कार हो गया, शहर की गली(गली, म'हल्लों(म'हल्लों में नारा लग रहा है । विद्यँर्थीयों और नवय'वकों का खून खौल रहा है । रामभरोसे को क'ᴕ समभ्क में नहीं आ रहा है । बद्दे(बू९ किसी अजूवे की तरह आ¤खें फाट्ट कर तमाशा देख रहे हैं । यह सब उनके आगे हो रहा है और जहा¤ पर क¤ग्रेस शब्द स'नते ही प'लिस पकट्ट कर खीचट्टी खिलाने ले जाती थी, कम्पनी रुपया पाकि६ में पकट्ट लेती थी तो हवा खाइए, जहा¤ पर एक अ१ात दहशत का साम्राज्य था, राजा पर बम ᴕोट्टँ गया तो निस्तेज बहाद'र और कमल बाबू का सट्टक चलते गोली मार दी गयी, वहा¤ पर यह अचानक क्या हो गया, बद्दे(बू९ कहते हैं ?

परन्त' असेसर बाबू तो कहते हैं कि हमारी और राजा की गरदन एक ही ओखर में है । अरे भाई वीस वरस से राजा की गर्दन उनके ओखर में और उनकी गर्दन राजा के ओखर में रहता था, अब इन दोनों की गर्दन किसके ओखर में चला गया ?

जब पहवरीया वीरगंज में बम लेकर पकट्टँ गया तो राजा की सवारी जल्दी(जल्दी खत्म हो गयी थी । पहवरिया बेचारा कितना सेल्हा जवान था, जेल ही में मर गया । अब ये लोग अपनी अपनी गर्दन एक ही ओखर में लगाकर उसकी रक्षा कर रहे हैं । यह सब रामभरोसे कहता है । राम भरोसे को इस बात पर गरव था कि उसका जन्म द्दण्ठ साल के स'राज में ह'आ था । जन्मते ही उसने रा०ाा शाही को खत्म कर दिया था । परन्त' अब रो रो कर कहता है कि ट्टँक्द्दर ने कह दिया है कि अब हम नहीं बचेंगे लेकिन अभी तक नून भात ᴕोट्टकर क'ᴕ खाने को नहीं मिला । ञछ अगस्त के दिन फूफा के साथ दिल्ली गया तो देखा । मैं तो फफक पट्टा था, म¤'ह चोरा लेता था कि कही फूफा देख लेंगे । जाने कौन सी चीज थी जो म'भ्के रुला रही थी, मैं क्या बताउ¤ । इसी दिन के प्रभाव से नेपाल भी आजाद ह'आ था । प्रधान मंत्री का भाष०ँ श'रु ह'आ...... आज का दिन आ¤सूओं का दिन है । परन्त' भारत आ¤सुओं का देश नहीं है,वह तो मैं देख ही रहा था, आ¤खों से बह रहा था । परन्त' भारत आ¤सूओं का देश नहीं है, उन्होंने गलती कह दिया । हमारे फूफा भी नून भात खाते खाते बू९ हो गये । तो कैसे आ¤सूओं का देश नहीं है ? अब तो और इन लोगों की गर्दन एक ही ओखर में चली गयी तो पता नहीं क्या होगा ? जब तक दोनों एक दूसरे की गर्दन को अपनी अपनी ओखर में ट्टँलने की ५्राई करते रहे तब तक मार्क्स और लेलिन का ग९ँ ह'आ मजबूत ओखर उनकी गर्दन में

DO NOT COPY

पड गया । अब ये दोनों ५६प६ कर रहे हैं । करो बच्चू १ मानवता को जिला रहे हैं, मानवधिकार को मजबूत बना रहे हैं । नून भात खाकर हम मर रहे हैं और ये कहते हैं कि ये हमारी मानवता की रक्षा कर रहे हैं । वह जो रुस का राष्ट्रपिता होकर भी अपने हाथों से रोdi सेंक कर खाता था वह नहीं । फाइव(स्टार हो६ल में ७हर कर, भा६(टढ पीकर गले में कैंसर पैदा करने वाले ये लोग मानवता की रक्षा कर रहे हैं । अरे ये लोग भी भौंचक हो गये हैं कि यह क्या हो गया ।

अरे हो क्या जायेगा ? कब तक गरिबों का खून चूसते रहेंगे ?कब तक हमारी फूस पर रोdी सेकेंगे ? हमारी भी कोई हम दर्द है, द'नियाध का आधा हिस्सा । हूध्ह १ जाइए(जाइए अमेंरिका जाइए ।

छ लाख में काम चल जायेगा । नहीं चलेगा तो सारा खजाना आपका है , स्वीध्जरलैंड को प्रैंडकर ।गर्दन रहेगी तो खजाना रहेगा, जो वही नहीं तो सब क्या होगा ?

पर यह चमत्कार जिसने भी लाया,रामभरोसे उसको मिल जाये तो आरती उतारेगा ।

इन्कलाव जिन्दावाद १

आगे बढ़ें १ देखो वह कौन सी गाडी आ रही है ? पकड़ें १ ३ेर लो १ जीन्दा जला दो १

मंतीरी को क्या मालूम था कि पहली बार मंत्री बनने के बाद हेलैंडा में हमारी मरम्मत हो जायेगी । हम तो चले थे अपने जलने वालों को झ०ड़ा दिखलाने कि देखो जलनेवालों हम मंत्री हो गये हैं, हमारा झ०डा फहराता है । कितना साध्प लोdेगा उन पर । उनको क्या पता था की हेलैंड पह'ध्ते ही उनको साध्प(सूध्३ जायेगा ।

उनको साध्प(सूध्३ गया । सैकड़ें हजारों की भीड ने आकर कार को ३ेर लिया ।इधर(उधर देखते हैं, पर उतर कर नहीं भाग सकते । संतीरी गोली चलाने का औडर माध्गता है पर मंतीरी इतना बेवकूफ नहीं है । संक६ की ३डी में भी उनका दिमाग चलता है । परिवार भी साथ में हैं । अगर एक गोली चलेगी तो इतने पैरों की रौंदाई से हमारी पिचडी निकल जायेगी ।

“ऐं कौन हे वे १ मधेशिया है शाला, उतरो १ इस चनdिकर को तो हमने कभी नहीं देखा ? क्या नाम है त'म्हारा ?”

“अरे नाम(वाम से क्या मतलव, नेपाल के इन मंत्रीयों को कौन जानता है । ऐसे आये राम(गये राम का नाम याद रखा जाये तो जगह चाहिए । कोई भी हो उतर १ उतरता है कि नहीं ?”

“अरे कालर पकड कर खींच लो । देखो न देह और गोड दोनों कैसे थर(थर काध्प रहे हैं । यह कैसे उतरेगा ।”

एक आदमी ने कालर पकड कर खिंच लिया । संतीरी इन्तजार कर रहा है औडर का , तब तक मंतीरी के संतीरी का बन्दूक ध्रीन लिया गया ।

“ऐ शाला १ मंत्री त'म्हारा नाम है क्या ?”

“नाम , मेरा नाम(मंतीरी महत(((((

धव १धव १ धव १ चड्ँक १चड्ँक १ गम १गम

सैकड़ें लात, जूते, ३ूध्से जो पडे तो नाम वीच में ही अ६कर कर रह गया । मंतीरी को लगा कि अब अंतीम अवस्था आ गयी । उनका साथी उनको बचाने आया तो एक ही बेल्d में गोड पकड लिया । उसको पकड कर अलग ले जाया गया । परिवार को पकड कर अलग कमरे में बन्द कर दिया गया । मंतीरी जी को पैखाने में बन्द किया गया । मंतीरी जी जीवन

DO NOT COPY

भर प्रजातन्त्र को खत्म कर राजतन्तर की नीव मजबूत करते रहे, आज प्रजा के सामने ख'द खतम हो जायेंगे इसकी कल्पना भी नहीं की थी । क्या करे, क्या नहीं करे । सारे लाइन का६ दिये गये हैं । माइक्रोफोन रहता तो पैखाने में पदे(पदे ही प्रधानमंत्री को खबर कर देते । लेकिन माइक्रोफोन क्या होता है उसने सिर्फ स'ना था, देखा नहीं था । बह'त चाहते थे की प्रधानमंत्री से एक बार कहकर शहीद हो जाते । क्या पता कोई चमत्कार हो जाये । वे पैखाने में ही द'र्गा माता का जाप करने लगे । आज कल वे उनका पा७ करना ४ो८ दिये थे । मा¤ द'र्गा थो८ा रुष्६ हो गयी थी । पैखाने में उनकी कातर प'कार स'नकर फिर से प्रसन्न हो गयी ।

पैखाने का दरवाजा ख'ला और वे दस—बारह जूतों की सलामी खाकर बाहर निकले । तय ह'आ कि वे एक कागज पर दस्तखत कर दे जिसपर उनके द्वारा एक त्याग(पत्र भी लिखा जायेगा । हे‌ौँ८ा से आ७ कोस दूर पैदल चलकर, जह¤ ६लिफोन है, मंत्रीको प्रधानमंत्री से कहना होगा कि हम त्याग(पत्र देते हैं । आप जितने विद्यँर्थीयों को पक८ रखा है, सबको ४ो८ दें । अगर आप ऐसा नहीं करेंगे तो मैं वागियों के साथ हू¤ ।

जब बाहर की हवा लगी तो उनको क'५ ताजगी महसूस ह'ई, नहीं तो आ¤खों के आगे जोन्हीं फ'ला रहा था । आ७ कोस चलने में वे पूरे एक सौ बार बै७ और एक सैं बार बू६ों की सलामी लेते रहे । जेलों और हाजतों में वागियों ने जितना मार खाया होगा, उस सबका हिसाब वे अपने उपर झेल च'के ।

हल्लो १ हल्लो १ हल्लो १

मैं मंत्री मंतीरी महत बोल रहा हू¤ और मैं हेौँ८ँ में सारे विद्यँर्थीयों के बीच में अपनी राजी(खूशी से ख८ँ हू¤ । आप सारे विद्यँर्थीयों को ४ँ८ दें, अन्यथा मैं बागियों के साथ "नहीं" हू¤ ।

मरता क्या न करता । "नहीं" शव्द जो पैदल चलते चलते उन्होंने सोचा था कह ही दिया । चाहे इसके लिए जो क'५ भी हो । वह सब क'५ झेलने के लिये तैयार थे । उनके इस हिम्मत और अक्लमंदी की दाद देनी होगी कि प्रजातन्तर को उन्होंने ऐसे ही खतम नहीं किया । उन्होंने अपनी इस अकिल से उसमें ब८ा सहयोग दिया है ।एक आदमी नहीं के साथ ही उनके जां३ें में एक ज्ञण" का ५'८ा ३'से८ दिया । वे कराह कर गिर प८े । उधर अपकीर्ति बावू कराह की आवाज फोन पर स'नी तो स्थिति की सारी गम्भीरता समझ गये । आखिर वे प्रधानमंत्री थे ।

ब८ी म'श्किल से ज्ञद्द ३८ो की कैद से निकल कर वे बाल(बच्चों से भें६ किये । उधर अपकिर्ती वावू ने विद्यँर्थियों को ४ँ८ देने का ह'क्म दे दिया था । सारा का०८ किसी सिनेमा के अपहर०ँ का०८ जैसा समाप्त हो गया । बागियों को अपहर०ँ की रकम मिल गयी ।

परन्त' द'र्गा माता मंतीरी पर सचम'च रुष्६ हो गयी थी । जान तो उसने बक्स दिया परन्त' मंत्रीमं८ल भंग हो गया, दूसरा मंत्री म०८ल बना तो उसमें मंतीरी का नाम नहीं था । इस ३६ना के बाद से मंतीरी को विश्वास था की वे कोई बह'त ब८े मंत्री होंगे । हाला की हेौं८ँ से आकर उन्होंने कान पक८ कर कसम खायी थी । जब रे८ियो पर उन्होंने अपना नाम नहीं स'ना तो रोज रोज रक्त चाप का दौरा प८ने लगा ।

एक बार जब आला कमान इस ३६ना के बाद बाहर की हवा लेने विदेशों के दौरे पर जा रहे थे तो मंतीरी जी दौ८ कर का७मा०८ू चले गये ।

"ह'जूर १ हमने सभक्ति पूर्वक राजतन्तर की नीव मजबूत की है । जनमत संग्रह में मैं जी जान लगा दू¤गा । निर्दलिय को जिताने के लिए । रही बात क'५ बनने की तो उसकी म'झे कोई लालसा नहीं है । मैं तो सिर्फ सभक्तिपूर्वक सेवा में हाजिर था, हाजिर हू¤,

DO NOT COPY

हाजिर रहूँगा ।" हवाई अड्डे पर आला कमान को विदाई देते हुए मंतीरी ने धीरे से कह दिया ।

"नहीं(नहीं ऐसा तुम क्यों बोलते हो । अभी तुम्हे बहुत कुछ बनना है ।" आला कमान ने कहा तो मंतीरी फूलकर गोल गप्पा हो गये । पाँव जमीन पर नहीं पडते थे । जब लौटे तो हेभैंडा से होकर नहीं आये, कोई अपशकुन नहीं हो जाय । सीधे उडकर उपर(उपर हवाई जहाज से सेमरा में उतर गये ।

अब बहुदलीय, निर्दलिय का प्रचार होने लगा । दोनों दलवाले मैंदान में उतर गये । सुन(केसर, गुजर और नीले रंग आसमान में उतर आये । कौन जानता था कि आसमान में समा जाने वाले सुन केसर और गुजर आसमान से भी जीत जायेगा । वह आसमान से भी जीत गया । गजव हो गया, आसमान हार गया । गजव हो गया ।

सचमुच मंतीरी ने कोई कसर नहीं छोडा । जीतना नीचे गिरना चाहिए उतना नीचे गिर गये वे । जिससे बोलना नहीं चाहिए उससे बोला, भीख माँगा । प्रजातन्त्र को मिटने के लिए उसने अपना सब कुछ मिटा दिया । अपना अहम, अपनी इन्सानियत, अन्दर के आदमी सब कुछ उन्होंने होम कर दिया ।

लोग दंग थे । गजव हो गया । सब यही सोचते थे वह तो बहुदलीय में ही बोट दिया था, निर्दलीय कैसे जीत गया? परन्तु निर्दलीय जीत गया और मंतीरी छाती फूलाकर गाँव में आये सवने देखा, कैसे गजराज की तरह चल रहे हैं ।

जितना गजव और अचम्भा लेकर आन्दोलन आया था उतने ही अचम्भा और आश्चर्य के साच चला गया । निर्दलीय जीत गया । दहशत का साम्राज्य फिर से फैल गया । सब लोग सकते और सन्नाटे में आ गये । नागासाकी और हिरोसिमा पर ऐसे ही सन्नाटा छाया होगा । ईश्वर इसी तरह मर गया होगा । .... परन्तु यहाँ पर कहते हैं पशुपतिनाथ जीत गये । उसके बाद प्रत्येक दिन रेडियो में पशुपतिनाथ पहले आने लगे । इसके पहले लन्दन की संस्कृति ने कुछ झिझक सिखा दी थी ।

फिर मंतीरी देश के सबसे बडे मंत्री हो गये । सब मंत्री मनाते हैं की काश वे भी किसी हेभैंडँ काण्ड में पड जाते तो कितना अच्छा होता ।

रामभरोसे लोगों को पकड कर कहता है :(

"अब नून भात फैंडकर कुछ नहीं मिलेगा । दूसरे जन्म में मिलेगा कि नहीं कौन जानता है ।"

वह गीत गा(गा कर सुनाता है

"मझदार में नैया डोले तो माझी पार लगाये,
माझी जब नाव डूबाये तो उसे कौन बचाये ।"

वह असेसर परसाद को दोष देता है, गीत गाता है ।

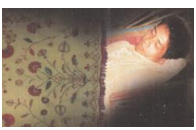

ज्ञण

DO NOT COPY

ँक्६र क५ुए जैसा सिम६ गया है, वह प९ँई बीच में ही ५ो८ कर चला आया । बह’त क’५ देख लिया था उसने । गा¤व में आकर अपना एक ५ो६ा सा क्लिनिक खोल कर पैसा कमाता और सरकारी अस्पताल में नौकरी करता । परिवार का अब सहारा हो गया । रोज(रोज की ३६नाओं पर अब वह ज्यादा गौर नहीं करता, पर ३६नायें हैं जो हो रही हैं ।

आज मिसिर जी का पात्रा उल६ गया है । बीसों आदमी ३ेर लिया है । मिसिर जी कहते हैं लच्५न ७ीक नहीं हैं । जब से खरहरा दिखलाई प८ँ है तब से गरह बदल गये हैं । नवों गरह जमा हो गये हैं । ऐसा महाभारत के समय में ह’आ था । महाभारत होगा । अभी तो खाली जीव६ परसाद मरा है । इ तो जैसे किसन जी गाय चराते(चराते भैंसासूर को मार दिया वैसे है । महाभारत तो अभी बाकी है । गा¤व में कोई निमन आदमी नहीं रहेगा । सिरिस मर गया, गोपाल बाबू को हवाई जहा¤ज में दूर३६ना हो गया । मास्६र को शराब ने पक८ लिया । आधी रात को कौवाली गाते ह’ए आते हैं ३र में । ले देकर एक ँक्६र है वह भी साध’ हो जायेगा, अजोधा जी चला जायेगा स’रधाम । योग तो यही कहता है, क्योंकि ८ाक्६र ख’द भी कहता है ।............. एक मंतीरी बच गया, उसमें म’झे क’५ स’भहा है वह अच्५ा(वोच्५ा है नहीं । अच्५े आदमी को इस गा¤व में उपर ब९ने का गरह नहीं है तो वह कैसे ब९ गया ? वह अच्५ा नहीं है, वह म६’किया गाह है , समझना म’श्किल । इसीलिए मैं कहता हू¤ कि गा¤व में एक जग कराना होगा, गरह शान्ति का, कोई उपाय नहीं ।

“जग काहे का पं८ी जी” त’लसीया ने कहा¤ “इ जो वीस(हिन्दू समलात हो रहा है, अब इ ५ो६का(मो६का से क्या होगा ? इ सब पं८ी जी का अपने खाने का रास्ता है ।”

ही ही ही हे हे हे खी खी खी

“विश्व हिन्दू समलात नहीं भाई विश्व हिन्दू सम्मेंलन बोलो ।” सत्यनाराय१ बोला, वह प९ँ लिखा राष्ट्रवादी विद्यँर्थी है, “देखा नहीं ! विश्व भर के हिन्दू लोग आ रहे हैं । राजा प्रत्यक्ष उद्३६न करने आये थे । इतना ब८ँ य! कहा¤ होगा, विश्वभर में एक ही तो हिन्दू देश है ?”

“अरे हम तो कहते हैं वीस बन्दूक सम्मेंलन” राम भरोसे बोला, “देखा नहीं वीसों मले६री बन्दूक लेकर ख८े थे । जब हम गये तो ५ँती पर रख कर कहा(“ऐ उधर जाओ, नहीं तो सू६ कर देगा, राजा का सवारी है(लगता था अंगरेजी मले६री से ५ू६कर नेपाली मले६री में भर्ती हो गया है । भाई क’५ भी कहो हम तो वीस बन्दूक सम्मेंलन कहते हैं । वीरगंज के वीस मारवा८ीयों ने मिलकर वीस बन्दूक सम्मेंलन कराया, बाकी क’५ नहीं है । जग(ओग हम नहीं मानते ।

हे हे हे हो हो हो खी खी खी

गजव ! अलवत्त बोलता है यह पे६’आ भी । जब से लीवर सिरोसिस हो गया तब से इसकी जीभ ती गजव(गजव की बात निकालती है । लीवर सिरोसिस क्या ह’आ, जीभर सिरोसिस हो गया ।

“रात भरका है मेंहमा अन्धेरा किसके रोके रुका है सवेरा” कि कह दो कोई न करे यहा¤ पयार......

म’झको यारो माफ करना मैं नशे में हू¤”

मास्६र हरेन्द्र देव वचपन से जीतनी भी फिल्में देखी थी, सबकी एक(एक पंक्ति गाते, ८गमगाते आधी रात को वीरगंज से आ रहे थे । एक हाथ में साइकिल हिचकोले लेते उनके साथ(साथ आ रही थी । पहले वे उस साईकिल के साथ शाम को ही ३र चले आते थे । जब उनके कहने पर ५ॅ६े भाई ने सस’राल का खेत नहीं बेंचा, तब से आधी रात को ३र लौ६ते हैं, पीकर । पीने की आदत तो पहले से ही थी, अब ब९ गयी है । मास्६र साहव थो८ा जरुरत

से ज्यादा संवेदनशील हो गये । ऴोदे भाई ने खेत नहीं बेंच कर अच्ष्ठा ही किया । सारी जमीन बिक च'की, जीनगी भर मास्ध्टरी में अकिल खराव किया, अब वीजीनस करेंगे । सब दारु में पी जायेंगे, सो भाई ने अच्ष्ठा ही किया । इनको लगता है भाई ने बेवफाई कर दी, उनका आदर नहीं माना । अब रात भर ऐसा ही करते हैं । राम १ राम । किस'न देख कर सडक के दूसरी ओर से निकल गया ।

तभी मास्ध्टर ने एक ऐसा राग अलापा कि पाव लदखदँ गये । स'र में साइकिल पर से दोनो हाथ ऴोद दिया । साइकिल गिरने को ह'ई तो उसको पकदने की कोशिश की । इस पकदने की कोशिश में ऐसा ह'आ कि साइकिल के साथ वे भी गिर गये और गिरने के साथ ही क'ष्ठ ऐसा ह'आ कि उनका सिर साइकिल के फ्रेम में ३'स गया । क'ष्ठ देर उसी तरह पदे रहे, फिर क्या मन में आया कि उसी तरह पदे(पदे गाना श'रु कर दिया

"म'भको यारों माफ करना मैं नशे में हूँ"

उधर से दो(चार रसिक आ रहे थे । वे मास्ध्टर साहव को पहचानते थे । गये उनके पास, एक ने कहा

"जिसका बदँ भाई हो शराबी, ऴोध्ठा पीये तो क्या खरावी ?"

दूसरे ने कहा

"मास्ध्टर साहव १ इ क्या कर रहे हैं ? ३र चलिए सभी लदके लोग ध्यूसन प९कर चले गये । अब एक भी विद्यार्थी नहीं है ।"

तीसरे ने कहा

"चलो(चलो मास्ध्टर साहव अभी नहीं जायेंगे । वे सिनेमा देख रहे हैं । बचपन से इनकी यही तो आदत है, एक भी सिनेमा नहीं ऴोदते । अब अपने साथ अपने बच्चों को भी दिखलाते हैं । .... देखिये १ देखिये १ मास्ध्टर साहव १ हम लोग चलते हैं ।"

चौथे ने एक नजर देखा और साइकिल की क'ष्ठ दूरी पर थूक फेंक कर चल दिया ।

उधर से रामभरोसे आ रहा था । देखा तो उ७ँकर लाया । पैर, हाँथ, मँ'ह फूध्ठ गये थे । ओ७ फूल गये थे । ३र से नहीं निकलते । स्कूल से आ७ दिनों की ष्ठ'ट्टी ले ली, ध्यूसन प९ाने नहीं जाते । पूष्ठा कोई तो कह देते, ध्रक से दूर३ध्ना हो गया है । ऐसा फेंका कि उतना दूर जाकर गिर गया । सब क'ष्ठ फूध्ठ गया ।

"हाँ तो रेदियो नेपाल से समाचार पुअरा भयो " राम भरोसे बोला "चलो भाई अब बीस बन्दूक सम्मेंलन देखने "

खबरदार १ जागते रहीअ हो ((((((

हम वीस बन्दूक सम्मेंलन में जा रहे हैं ।............

मास्ध्टर सब बैमान होता है, दगावाज होता है, कोई मास्ध्टर द'नियाँ में ठीक नहीं होता । मेरा भाई मास्ध्टर था, जीनगी भर पैसा देकर प९ाया, बरतन मलकर प९ँया, वह दगा देकर अलग हो गया । वीरगंज में महल बनाकर रह गया । हरेन्दर राज(रोज दारु पीकर क'लको दूवा रहा है ।चैनपूर के मास्ध्टर साहव तो जब देखो ऐसा लगता है अभी अभी भट्टी से निकल कर आ रहे हैं । सूख कर दारु के बोतल जैसे दिखलाई पदते हैं । रास्ते में दो चोर मिले, दारु के भोक में अन्ध सन्ध बोल दिया । चोरों ने चार थप्पद मारा तो बेहोश हो गये । चोर तो बदहवास होकर भाग गये, पर दूसरे दिन अस्पताल में चैनपूर के मास्ध्टर कोइरी परसाद बयान दे रहे थे... चार ही थप्पद मारा .... और कहते कहते उनके परान निकल गये । ... ऐसे होते हैं ये मास्ध्टर, क'लनाशी, बैमान, दगावाज ।

DO NOT COPY

३६ना स'नकर देवचर० सभी मास्६रों का फेहरिस्त स'ना रहे थे । जब से उनका भाई अलग हो गया, तब से वे जिल्ले भर के मास्६रों का एक फेहरिस्त बनाकर रख लिया है । समय समय पर उसी का उदाहर० देते रहते ।

देवसर०, देवचर० चारों भाईयों में खूब प६ती थी । मगर देवशर० के शादी हो च'कने के बाद उनकी वह'रीया ने ऐसा मन्तर प९ाया की रोज रोज महाभारत होता और म'हल्लेवाले अपना मनोरंजन करते थे ।

गा¤व के लोगों का सबसे ब\ँ मनोरंजन है झगड़ँ । कही पर झगड़ँ ह'आ नहीं कि गा¤व भर के लोग जमा हो गये । सब किसिम के लोगों का मनोरंजन उसमें मिलता है । कोई इधर हो गया, कोई उधर हो गया, कोई त६स्थ हो गया तो कोई खाली दर्शक बनकर देख रहा है । शहर के लोगों को सिनेमा देखकर जो आनन्द आता है, झगड़े में गा¤व के लोगों को भी वही आनन्द आता है । शहर के लोग तो खून भी हो जाय तो अपने रास्ते चले जाते हैं । रामभरोसे कहता है जब वह दिल्ली गया था तो बस पर से उतरते ही किसी ने ऐसा चा¤६ा मारा कि मैं भभक'निये गिर गया, क'५ समझ नहीं सका । उ७क देखा, तब तक वह ह¤सते ह'ए चला गया और मैं रोते ह'ए अस्पताल चला गया और कोई हमारे तरफ नहीं बोला । ...... पर गा¤व में कोई ऐसा झगड़ा नहीं जिसमें बच्चे से बू९ तक रस लेकर तमाशवीन न बनें । कोई ५ू६ जाता है तो स'नने पर कहता है(आह हम नहीं थे, हम भी रहते तो देखते ।

तो महाभारत होते(होते एक दिन ऐसी नौवत आई कि देवशर० मास्६र ने क्रोध में आकर अपना नसबन्दी करा लिया । उनको दो लड़की थी, नसबन्दी करा लू¤गा हमारा सभी धन हमारे लड़कियों को मिलेगी । भाईयों को एक रत्ती भी नहीं मिलेगा । अन्राष्ि्रय नारी वर्ष पर कानून बन गया है । .... बाद में वे सभी डँक्६रों से पू५ते फिरते थे कि नसबन्दी को फिर से जोड़ने का कोई रास्ता नहीं है ? कोई दिल्ली बतलाता, कोई भेलौर बतलाता, उस पर भी कोई गारन्६ी नहीं । रामभरोसे कहता है, "इ का कोई दरवाजा है, जब मन में आया बन्द कर दिया, जब मन में आया खोल दिया ? जब मन में आया ९क गये, जब मन में आया निकल गये ? " झख मारकर देवशर० परसाद अब वीरगंज चले गये, भाइयों से अलग होकर । उनकी बीबी को कभी(कभी गरभधार० हो जाता है । जब पे६ ब९ना श'रु होता है तो देवशर० मास्६र कहते हैं मैंने अपना नशबन्दी जोड़वा लिया है । अस्पताल जाते हैं तो इथर देने पर वीवी का पे६ फिर स'६'क जाता है । डँक्६र कहता है इनको मानसिक गरभ धार० होता है । विना बच्चा का पे६ ब९ने लगता है ।

"म'श्कैल है भाई १ बिना बच्चा का पे६ कैसे ब९ने लगता है ? इ त जैसे म'रगी(परेवा हो गया, ध'रिया अंडा दे दिया ।

"कलय'ग में यही सब होता है, यही सम्भव है ।" पंडीजी कहते है "इ का सतय'ग है कि बान मारा तो अगिन निकल गया, पानी बरस गया ? "

"हम को तो करमासा लगता ई" त'लसीया कहता है "उसकी औरत फलनवा से फ¤सी है । जब पे६ हो जाता है तब देवशर० अस्पताल में जाकर गिरवा देता है और तब कहता है कि मानसिक गरभधार० होता है" का हो सत्यनाराय०"एइसन भी कही होता है "?

"होता है त'लसी, होता है । त'म कम प९ लिखे हो, त'म नहीं समझोगे ।"

ही ही ही हे हे हे हो हो हो

DO NOT COPY

ज्ञज्ञ

“लाओ रस्सा, बान्ह बैमान को” धोवीचन्द का नाती राम चन्दर कह रहा था “बैमान, ब्रेटा भाई नहीं, द’श्मन है । म’ॿह में करिखा लगा दिया । इस पह’ॿनई, उस पह’नई जहाॿ(जहाॿ मन में आया हमारे नाम पर पैसा माॿगा और दारु में उडा दिया । कहता है भइया माॿगते हैं । ञ्हरो हम भइया से भेंध कराते हैं ।”

उसके बाद भरत लाल जाकर रासा लाया । ल५’मन जी का म’स्क’र बान्ह दिया गया । आॿख पर चाॿदगोसाईं का जोत पडँ रहा है । एक हवाई चप्पल का तकिया लगा दिया गया है । दूसरा हवाई चप्पल ल५’मन जी के म’ॿह में डाल दिया गया है । रामचन्दर जी कहते हैं :

“ल५’मन जी चप्पल खाइए । संजीवनी बूटी है । शराव बह’त खा च’के हैं, चप्पल खाने से म’ब्रा उतर जायेगा ।”

ल५’मन जी क’५ कहना चाहते हैं, पर क’नम’नाकर रह जाते हैं । म’ॿह से आवाज निकले कैसे, चप्पल ठूॿसा ह’आ है । यह तमाशा ५त’अन तर सरेआम हो रहा है जहाॿ पर हरेक लोग आते जाते हैं । कोई कहता है “बाल चच्चेदार आदमी को ऐसा नहीं करना चाहिए । उसकी ३रवाली भी ५त पर से देख रही है । पंडी जी कहते हैं :

“धोवीचन राउत ने बैलों के नाद में कभी खरी नहीं डाला । खाली भूसा डाल दिया । बचवन को प९ँया लिखाया नहीं । उसी का नतीजा भूगत रहा है । रामचन्दर को थोडा प९ँ दिया तो उन्हीं के नकसा पर चलता है । भइवन के त दू पइसा देता नहीं, विगड गया तो चप्पल खिलाता है । धोवीचन राउत अस्सी बरस के थे तो उनका सा७ बरस का एकलौता बेटा मर गया । गाॿव का गरह इनके ३र पर भी चल रहा है ।”

“खरी नहीं खिलाया तो क्या ह’आ ? ब’९उ का बेटा मरने लगा तो ढँक्दर के सामने तिज’डी खोल दिया, गोड पर गिर गये ।” सत्यनाराय० ने हॿसी किया ।

“लास ध्यम में तिज’डी खोलने से क्या होगा ? राम नाम सत्त हो गया । वेचारा एकलौता बेटा पैदा ह’आ, बू९ा हो गया पर एक पैसा कवही नहीं दिया खर्च वास्ते । वे तो दशरथ काका भले थे कि धान(ओन चोराकर कसइली का जोगाड करते थे । रामचन्दर तो सेर का सवा सेर हो गया । धान भी चोराने नहीं देता । ल५’मन जी दशरथ काका के जैसे भले आदमी कहाॿ ? दारु का चस्का लग गया अलग से । क्या करे पर पह’नई से रामेंचन्नर के नाम से पइसा लेने लगा । क्या करे ज्यादा शाशन करने से यही होता है ।”

हो १हो हो , हे हे हे ही ही ही

इस तरह जब गाॿव के सभी लोगों ने तमासा देख लिया तब ल५’मन जी को धिरे धिरे खोल दिया गया । पहले गोड खोला, फिर हाथ खोला फिर चप्पल म’ॿह में से निकाला गया । चप्पल लार से भीज गया था । ल५’मन जी बाल बच्चों को ब्रोड कर जो भागे सो बेपत्ता हो गये । फिर ३र वापस नहीं आये । उसकी औरत अब करना(कर(करके रोती है । राम चन्दर गाॿव भर के लोगों के सामने रोते हैं ।“कोई हमारे ल५’मन को ला दो, क’५ पता नहीं चलता हो भइया ।”

“क’५ पता नहीं चलता हो भइया, तो भउजइया से पूब्रिउे । जो कहती है सो मानते हैं । चपल खिलाया उसी के कहने पर । अब भइया से काहे कहते हैं, भउजइया से कहीये ।”

रामभरोसे की बात स’नकर राम चन्दर जी विगड   गये ।

DO NOT COPY

“च’प रहता है कि नहीं पेट्र दास, जथी मन में आता है तथी बोल देता है । हमारे ३व पर निमक ष्टिकता है ?” रामचन्दर आ¤ख तरेरता है ।

“निमक नहीं, निमक नहीं, चीनी ष्टिवाइये ” रामभरोसे दौ८ कर गया औार भीतर ३र से एक म’ट्ठी चीनी लाकर राम चन्नर की देह पर ¥ी६ दिया ।

हो हो हो हे हे हे ही ही ही

सबलोग ७७कर ह¤सने लगे ।

“अब तो ३व ७९ा हो गया होगा रामचन्नर भाई ? मि७ हो गया होगा ?”

हो हो हो

अलवत्त है पेट्रवा । कौन नि५त्तर में जनम ह’आ है इसका ?

दिमिक दिमिक दिम दिमिक दिमिक

“दूनू भइया रोयेले कदम तर, सिया जानकी के ले गइल चोर, विरजू परसाद के द’आर पर रामायण हो रहा है ।

दिमिक दिमिक दिम दिमिक दिमिक

रामभरोसे स’र में स’र मिलाता है

श्री राम(जानकी रोएले ५त’अन तर

ल५’मनवा के ले गइले चोर ।

ही ही ही हे हे हे हो हो हो.......

“बाबू दादा १ चलो रमैंन स’नने” रामभरोसे ने भोला राउत से कहा ।

“चलो तो चलो, अभी भगवान कह रहे हैं तो चलो”

भोला राउत जब गंगा स्नान करने पहलेजा ३६ गये तो प६ना भी चले गये थे । ६म(६मवाले कहते थे अरे बाबू, अरे दादा आजा आजा । ३र लौ६ कर इन्होने सबको अरे बाबू अरे दादा कह कर ब’लने लगे । तब से लोग इनका नाम बाबू दादा रख दिया । ब८े नेक, भलेमान’स । काम भी उतना ही करते हैं, आराम भी उतना ही करते हैं । उनको आज तक यह समझ में नहीं आया कि लोग किसी को काहिल, जाहिल, आलसी, बैमान और शैतान क्यों कहते हैं ? जब विनु हरि कृपा तृण नहीं ८ोलही, जब भगवान ही सब क’५ करते हैं तो सबलोग क्यों ऐसा कहते हैं ? जब सो जाते हैं तो उ७ कर हार जाइए नहीं उ७ेंगे, भगवान ने आज सोने के लिए कहा है इसमें हमारा क्या दोष ? काम विग८ जायेगा लेकिन वे नहीं उ७ेंगे । जो आलसी कहेगा उनको क’५ स’ना देंगे । भगवान से जाकर कहा¤, हमको क्या कहते हो, आलसी कहा तो ७ीक नहीं होगा ।.....................

वहा¤ से सभी लोग रामायण स’नने चले गये

पहले म’सलमान का भी तजेआ हिन्दू तोग रखते थे । धनेसर की मा¤ ने जीनगी भर रखा । गा¤व के लोग एक ही जगह झरकी बजाते थे । अब रामायण का भी चार पा८ी हो गया है । सभी लोग हारा(ह’¤सी से रमैंन गाते हैं । विरजू परसाद का पा८ी, जगदीश का पा८ी, दरोगा का पा८ी और कमल ॅक’र का रमैंन । गा¤व के सभी लोग अपनी(अपनी पा८ी में रमैंन स’नने जाते हैं । ५त’अन तर से सभी लोग चारों दिशाओं में ब¤६ गये । कोई विरजू के पा८ी में गया, क’५ जगदीश के, कोई दरोगा तो क’५ कमल ॅक’र के पा८ी में । चारों जगह रामचन्नर जी विराज मान होते हैं, कही क’र्मी, कही राजपूत, कही यादव तो कही ॅक’र बनकर । जाकि रही भावना जैसी ।

सबमें विरजू परसाद की रमैंन पा८ी की साख सबसे ब८ी है । जैसा मनेजर वैसी साख । विरजू परसाद अपने को संसार का सबसे ब८ा आदमी समझते हैं । मंतीरी के यहा¤

DO NOT COPY

कभी देखने भी नहीं जाते । कहते हैं उ त मंत्री अभी ह'आ है, लद्दीकाई में हम उसका भी मंत्री थे । सभी लद्दको का में७ हमी रहते थे । में७ वे आज भी हैं, रामायठ का । एक बार जब सद्दक का झगद्द ह'आ तो मंतीरी के समने ही सी.दी.ओ. ने उनका कान पकद्द कर उ७ँ दिया तो उस दिन उनको बद्दी ग्लानी ह'ई थी, भौंचक होकर देखते रह गये । .... जब जवान थे तो ९ोलक बजाबजा कर सबका दिल जीत लेते थे , चद्दखारे ले ले कर कहते हैं । एक बार जब तान ɤँदता था," आजा रे परदेशी, मैं तो कब से खद्दी इस पार" तो रोपनीहार रोपनी ɤँद कर स'नने लगती थी । ९ँलक बजाने में उनका जोद्दा नहीं है । जब ९ँलक खत्म होता तो रात को कितनी लद्दकियाⴷ दिल का दर्द मिद्दँने इनके भ'सउल में चली आती थी । इसीलिइ वे अपनी औरत के पास कभी नहीं सोते थे, भ'सउल में सोते थे । कहते हैं,"एक बार मैं जब भैंस चरा रहा था, पासवारी बद्दका भिनसरवा हो गया था तो भैंस की पी७ पर से देखा, एक लद्दकी भागी जा रही है । पानी पद्द रहा था, झीसीं जैसा । दँⴷद्द कर कहा(ऐ कौन है रे, रुक । दर के मारे य'वती रुक गयी । विरजू परसाद भैंस चराते समय ऐसे अवसरों की तलाश में रहते थे । इसीलिए बद्दे सवेरे वे भैंस खोल देते थे, पासवारी चराने । वे उतर गये । औरत दरी ह'ई थी । वे उन्हें गोदी में बै७ा लिए । औरत ने रो रो कर अपनी पी७ के दाग बतलाये । पति ने वेरहमी से मारा था । विरजू परसाद बद्दे संवेदनशील हैं । उसकी पी७ पर हाथ फेरते फेरते रो दिये । औरत भी रो दी । उसने उस औरत का लोर पोंꣳा ।फिर अपना गमꣳा उसे पहनने के लिये दिया और कमर की धोती ओ९ँकर उसे अपनी गोद में गरम किया । औरत ने जाते समय बद्दी करुठँमयी आⴷखों से उन्हें देखा, मानो कह रही हो कि आपने हमारे साथ क्यों क'५ नहीं किया, क्यों ꣳोद्द दिया । बोली क्यों आप हमारे साथ ....

"नहीं नहीं जाओ" मैंने कहा "त'म्हारे इस द'ख की ३द्दी में मैं त'म्हारे शरीर के साथ स'ख नहीं लूⴷगा । फिर कभी ।पति के द्वारा प्रताद्दित औरत सिसक पद्दी, मानो किसी ने स्वाती के बूⴷद द्दपका दिया हो । तव से वे पासवारी भैंस खोलना ɤँद दिये ।

जाते समय वह औरत अपना पता(७िकाना दे गयी । न वे उनको भूल पायी न ये उसको । जब वे नैहर में रहती है तो नैहर में चले जाते हैं, जब सस'रा में रहती है तो सस'रा में । नैहर में बतलाती है कि ये हमारे सस'रा के देवर हैं, सस'रा में बताती है कि ये हमारे नइहर के भाई हैं । विरजू को न जाने ऐसे कितने सस'राल हैं । जब जहाⴷ मन में आया चले गये और नौरतन पूगा कर चले आये ।

ऐसी कितनी ही कहानियाⴷ इनके जीवन के साथ ज'द्दी ह'ई हैं । सबलोग जानते हैं लेकिन अदव भी करते हैं । युवकों के तो ये ग'रु हैं । विवाह होने से पहले इनके यहाⴷ सि४ होना पद्दता है । युवक खुद आकर्षित होकर इनके यहाⴷ जाते हैं । कोई य'वक अगर इनसे ग'रु मन्तर नहीं ले तो वह मउगा है । शाम को इनके यहाⴷ जो चौपाल बै७ती है तो सिर्फ यही वर्ठन होता है कि किसकी वीबी किससे फⴷसी ह'ई है, किसकी बेद्दी का पⴷाव कहाⴷ जा रहा है, उसकी बहू का पⴷाव किसके चलते भारी है । जब योगिन्द्र बहू को रोज च'रइन पकद्दती है, सप्ताह में एक बार गिरधारी ओझा जाकर झाद्दते हैं तो उसका च'रइन भाग जाती है । जिस सप्ताह नहीं जाते तो फिर चुरइन पकद्द लेती है । उसका मर्द जब उसके पास सोने जाता है तो दोनों को च'रइन पकद्द लेती है । मोद्द पतलुन औरत , पातर लकलक मरद । सपनदोष का इलाज कराते कराते और भी पातर हो गया है । अपनी बहू के पास सोकर माⴷ रखवाली करती है । अपने लद्दके को खूव लौहभष्म चूरन खिलाती है । कभी(कभी जब मिरगी का दौरा पद्द जाता है तो गिरधारी ओझा उसको भी झाद्दते हैं । झाद्द कर काⴷद्दी ले जाकर तीनगꣳीयाⴷ में हला देते हैं । उस दिन बद्री बाबा काद्दी हलाते समय ही चीनी मिल की द्दयूद्दी

पर से जा रहे थे । जब वे धोती खोल कर अपनी गोजी में ६ाप्रग कर खद्रे हो गये थे तो गिरधारी ओभ्रा सिर पर पाप्रव रख भूत(भूत कहते ह'ए भागे । तब से गाप्रव भर के लोग कहते हैं तीनगाश्रीया में भूत उप६ गया । साम को उधर से लोगों ने आना(जाना बन्द कर दिया है ।

यही सब व০ंन इनके चौपाल में होती है । गाप्रव का ताजा सेक्स समाचार जानना हो तो इनके चौपाल में जाइए । राजनितिक समाचार के लिए मंत्री मंतीरी के यहाप्र । सेक्स समाचार के लिए इनके यहाप्रप्र । जो समाचार आपको मंतीरी के यहाप्र मालूम होगा, वह किसी रेद्रीयो अखवार में पता नहीं चलेगा । जो सेक्स समाचार इनके यहाप्र जानिएगा वह किसी नर(नारी, पति(पत्नी विशेषांक में नहीं मिलेगा । जब सेक्स वार्तालाप खत्म हो जाता है तब रमैंन गाने का ६ाइम हो जाता है । सब लोग बै७कर रमैंन गाने लगते हैं ।

द्रिमिक द्रिमिक द्रिम द्रिमिक द्रिमिक

अधरतिया के बाद रमैंन समाप्त ह'आ । सभी लोग परसाद खाकर अपने(अपने ३र सोने चले गये । स'वह प६वारी बाबा के द्रेरा में आ७ चोरों को म'स'क'र बाप्रध कर ले आया गया । चारों रमैंन पाद्दी के जावान उसमें थे । जब रमैंन खत्म हो गया तो सब लोग सोने चले गये । रामभरोसे कहता है

"रमैंन का चार पाद्दी, राम का चार पाद्दी, चोरों का एक पाद्दी । रामचन्नर जी से इ चोर अच्ध्रा । कैसी एकता है । वाह भाइ बाह १ त'मलोग रामचन्नर जी को भी ६प गये । इसी को मास्६र साहव कहते है

"वैर ब९ाते मन्दिर(मसजिद
मेंल कराती मध'शाला"
द्रिमिक द्रिमिक द्रिम द्रिमिक द्रिमिक
रमैंन भी कैसे गाते थे ये लोग :
"चलो एक बार फिर से राम नाम गाये हम दोनों "
द्रिमिक द्रिमिक द्रिम द्रिमिक द्रिमिक
बोलिए एक बार प्रेम से राम चोरन की(((((जै

मार एक थप्पद्र की भागे यहाप्र से पे६'आ । शिवसरन उ७कर उसके पास जाने लगा । रामभरोसे एक बार ताद्री ँंका, जब शिव सरन नजदीक आ गया तो ३र की ओर भागा । नहीं शिव सरनभाई

बोलिए प्रेम से राम चन्नर की जै(((((
हो हो हो ही ही ही

फूप्रक दीजिए तो उधिया जायेगा ऐसा रामभरोसे । ऐसा रामभरोसे जिसको लीवर सिरोसिस ने जी০ं(सी০ं कर दिया है । सबको मालूम है कि वह किसी भी दिन खून द्रकर कर मर जायेगा, ऐसा रामभरोसे । किसी भगवान को नहीं मानता, किसी पाद्दी में नहीं रहता ऐसा रामभरोसे, सब को ताद्री ७ेक ँंक कर कहुप्रचाता है । बातें ऐसी करता है कि कोई क्रोधित भी हो तो सान्त हो जाता है । नकली क्रोध बनाकर दौद्रता है, उसे मारने के लिए । कैसा है यह पे६'आ, प्रा০ं सूख गये है,पर सव में प्रा০ं का संचार करता ह'आ चलता है । जिधर से निकल जाता है उधर से हो हो हो ही ही ही की धारा फू६कर बहने लगती है ।

DO NOT COPY

ज्ञट्ट

....“हम आपका शराध खाकर मरेंगे । समभ्fे ? नहीं कसमभ्fे ? दीह पर ।

राम भरोसे का आज अन'राधा पांदे से भ्fगदँ हो रहा है । अन'राधा को यह बात खलती है कि रामभरोसे उनके दैंला का होकर यादव दैंली में क्यों उ७ता बै७ता है । मास्६र, दँक्६र और मंतीरी से क्यों मेंल(जोल रखता है ? रामभरोसे नून भात खाकर, पे६ पर हाथ फिराते ह'ए, दकारते ह'ए काम पर निकला तो अन'राधा पांदे द'आर पर थे । बातों बात में भ्fगरा हो गया ।

“मारेंगे एक थप्पद तो मर जायेगा, पे६ चकरदम, त'म जानता नहीं है म'भ्fे ?”

“जानता हप्र, अन'राधा पांदे हैं । लेकिन हम आपका शराध खाकर मरेंगे ।

“तू(((”

“हाप्र हम”

तादी ७ेकता है रामभरोसे, आगे ब९ता है

“परितीत नहीं है तो हारा(बाजी ७ेक लीजिए, मिलाइए हाथ । रामभरोसे दौदकर लाँ पादे से हाथ मिलाता है, दो तीन बार हाथ उपर नीचे भ्fकभ्fोर कर फीस से हप्रस देता है ।

“किसी को नहीं जीतने देगा इ व५ार का बे६ा” अन'राधा पादे का सारा क्रोध शान्त हो जाता है । च'रकी पकद कर बोलता है “चल हम भी वीरगंज चलते हैं ।” क'५ दूर च'रकी पकद कर लाये और फिर दोनों साथ(साथ गप करते ह'ए वीरगंज चल गये ।

अन'राधा का जन्म द्दण्ठ साल की क्रान्ति में ह'आ । जनम माने चलती, उनकी इस गाप्रव में द्दण्ठ साल की क्रान्ती में ह'ई । तब से गाप्रव में उनका एक ५त्तर राज्य था । हम किरान्तीवादी हैं, हमको कौन क्या कर लेगा । एक नम्बर का ज'आरी, पर शराब ५ूते भी नहीं । मल(मल का क'र्ता और सेनग'प्ता धोती पहनते हैं । जिसके ३र मन ह'आ, ९'क गये, बहू(बे६ी की इज्जत लू६ ली । पकदँ गये तो पकदने वाले का म'सक'र बान्ह दिये दिन भर । ऐसी पि६ाइ की कि फिर पकदने का नाम नहीं लेता । सारे चोर दँक'ओं की पंचायती इन्हीं के यहाप्र होती है । जब वीस वरस के थे तो अपने पिता जी को खराउप्र से पि६ते(पि६ते बेहोश बर दिये । तीन चार दिन में बेचारे बाप मर गये । जाते जाते सराप ऐसा दिये कि इनको बाल(बच्चा नहीं ह'आ । “तीन चार वियाह किये लेकिन किसी से मूस भी नहीं निकला” रामभरासे कहता है । परमेंसर को ३र में ३'सकर मारा और परमेंसर उसी गम में पैतीस दिन के भीतर चल बसे । दकैती, फौजदारी का म'कदमा ह'आ । पैतीस(पैतीस हजार द०द और वीस बरस कैद । पर अन'राधा पादे ज्यों का त्यों पा६ी में भर्ती हैं, सशस्त्र किरान्ती । विरजू, गेना, राम रतन, भिखारी सबको ये ६ेरेनिंग के लिए दरभंगा ले गये थे । बन्दूक भी चलाना जानते हैं । सात साल में जब सब लोग मारवादी के कपदे लू६ रहे थे, तब ये कचहरी का कागज जलाने में लगे थे । अपनी सजाय के कागज के साथ(साथ कचहरी का सारा कागज जला दिया । परमेंसर मर गये, राँ शाही खतम हो गया । अब मोगलान के जैसा नेपाल में भी स'राज आ गया । उस स'राज में क'र्मीनप'रवा गाप्रव के अन्दर अन'राधा पादे का एक ५त्तर राज्य था ।

फिर जब से सतरे साल की किरान्ती ह'ई । असेसर को जेल में बन्द कर दिया गया । भूमि स'धार लागू ह'आ तो अन'राधा पादे उसको सफल कराने में लग गये । ३ूम ३ूम कर बदैयादारों से मोही लिखवाते थे । जो दिन ग'जर जाने पर ख'द भी शान्त हो गये थे । कहते थे

DO NOT COPY

इ भूमिस'धार खाली झगड़ लगावन स'धार है । बाकी क'५ नहीं । न मालिक का न मोही का किसी का नहीं । न माया मिलती है न राम ।

“आदमी का ७सक कभी नहीं जाता” त'लसिया कहता है “अन'राधा पाdे को पकडकर लोगों ने सारे देह में लकडी की तरह खत का६ दिया, जीव६ के सिर में ग'प्ती ३'सेड दिया, राम(नाम सत्त हो गया । पर ये हैं जो मानते नहीं । इनको समझना चाहिए कि अब किरान्ती का दिन खत्म हो गया । अब जमाना ग'जर गया । अब तो ख'द असेसर परसाद राजा से मिल गये हैं ।

“कौन कहता है कि असेसर परसाद राजा से मिल गये हैं । वे अन्तर्देशिय नेता हैं । हमारी त'म्हारी औकात है उनको समझ लेने की ?” हरिओम प्रकाश कहता है ।

“हमारी औकात तो सब हमारे पे६ में है ।” रामभरोसे बोला । देख इतना बड़ पे६ असेसर को होगा ? नहीं न, फिर पाच लाख रुपया राजा से ले लिया, वह किस पे६ में गया होगा भाई । औकात(वौकात हम नहीं बूझते । नेता(तोता भी हम नहीं जानते । हम एक ही बात जानते हैं कि वे राजा से मिल गये । अन्तर्देशिय दलाल हो गये । पहले शसत्तर किरान्ती अब मेंल(मिलाप । रंग बदल दिया गिरगि६ ने । देखते नहीं कैसे लम्बे ५रहरे हैं गिरगि६ की तरह ? हमारे इन्जिनियर साहव कह रहे थे कि म'रारजी भाई गये तो वकतव दे दिये कि सिकिम को मिलाना अन'चित था । ये चले गये तो राजा से मिल गये । अरे इन लोगों की नकेल तो अमरीका में है । हिन्दूस्तान के लोग कह रहे थे कि पधानमंत्री होकर ऐसा भाष०ँ देना चाहिए ।रुस पाकिस्तान को सबक सिखाने को कह रहा था । नेपाल के लोग सिकिम लिए जाने के विरोध में ज'ल'स निकाल दिये । लेकिन उसी अमेंरीका के कहने पर असेसर परसाद जो कह रहे हैं उनसे वे ख'श हैं ।

“बन्द करो पे६'आ, अब हमारा कान फ६ जायेगा । एक अन्तर्देशिय नेता के बारे में ऐसा ज'ल'म बात करता है ? बन्द हो जायेगा जेल में ।” हरिओम प्रकाश ने कान बन्द करते ह'ए चिल्लाया ।

“हा भाई अब राजा से मिल गये हैं तो उ भी हो जायेगा । पहले तो अपने ही बन्द थे । ीक बात कहता है, हमारा म'ह बन्न ।”

जब जनमत संग्रह ह'आ तो अन'राधा पाdे क'५ दिन अपनी किरान्ती पा्दी में रहे । फिर क्या मन में आया कि जोर जोर से निर्दलीय का प्रचार करने लगे । रामभरोसे कहता है “ज'आ खेलने के लिए पैसा मागा, किरान्ती पा्दी वालों ने नहीं दिया । बोला सब असेसर बाबू की इलाज में खर्च हो गया । सो लौ६ कर आये तो निर्दलीय में ३'स गये । कहते हैं निर्दलीय में बह'त पैसा है । ख'द महारानी ने इसके लिए पैसा दिया था । क'५ कोष से क'५ संचय कोष से और क'५ स्वी६जरलै०ड से । क५' कावरा से क'५ ५ावरा से । क'५ केdिया, तपाdिया, जा्दिया से । ख'ल कर खेल ह'आ । नंगा नृत्य । जवाव तलव ह'आ तो “सब क'५ मंजूर है सब क'५ लिया है हज'र लेकिन सब जनमत संग्रह में खर्च हो गया । अब हज'र की जो मर्जी । “ह'जर की मर्जी मालूम है क'५ नहीं होगा । सत्यभामा की सिन्दूर को बचाया है ।

असेसर बाबू ने बह'दलिय का क'५ ऐसा प्रचार किया कि एक बच्चा भी दूसरे बच्चे पर नाराज होता तो कहता(भाग बह'दलीय कही का । महारानी ने सब क'५ दाव पर लगा दिया । कहती थी किसी भी हालत में निर्दलीय को जीताना होगा, यह हमारे पति का दिया ह'आ दल है । उनकी इज्जत का सवाल है । सो देश का इज्जत मिट्टी में मिल गया पर उनके पति की इज्जत बच गयी । राजा ने जनमत संग्रह का अडर देकर अपनी सूझ(बूझ का परिचय दिया । पर वी.वी.सी. कहता है, नेपाल के लोग अभी कन्सस नहीं हैं । रामभरोसे कहता है

DO NOT COPY

"यह कन्सस क्या चीज है भाई ? हम इन्जिनियर साहव से पू४ेंगे । कोई गहना है क्या ? कनफूल, कनपासा, कनफस

"कन्सस माने चेतना होता है" हरिओम प्रकाश कहता है "नेपाल के लोग में चेतना नहीं है ।"

"चेतना नहीं है तो क्या हम म'रदा है ? यह जो ह¤सते है, बोलते हैं वह क्या है ?"

"बोलता तो जानवर भी है । मा¤ (((((((,गाय, बैल भी बोलता है । रस्सी से जहा¤ बान्ह दो वही प८ँ रहता है । जब वह रस्सी त'राने लगे, पास जाओ तो सिं३ से भ्ह्ककर फेंक दे इसी को कहते हैं चेतना ।" हरिओम प्रकाश चेतना का अर्थ समझाता है ।

"ओ इसीलिए सब गरीब लोग मरखाह हो गये हैं । अब समझे चेतना का माने क्या होता है । तो ऐसा कहो कि क'क'र जब का६ने दौ८ता है तो उसे चेतना कहते हैं । तो फिर वह कूई((कूई((करके द'म हिलाता है, तलवे चा६ता है, वह क्या है ? ग८(ब८ है, चेतना क'५ जटील चीज लगती है । क'५ समझ में आती है, क'५ समझ के बाहर लगती है । इन्जिनियर साहव से पू५ना प८ेगा ।"

हो हो हो हे हे हे वाह १ वाह १ वाह १ रे पे६'आ, सबको पानी पिला दिया ।

"इस बात को मानने में थो८ी तकलीफ हो रही हे । इ ग'रुम'ख बहाद'र, गुरुसम'ख उपध्या, ६रक परसाद, अपकिर्ती बाबू इ सब का कन्सस नहीं हैं ? अपने गा¤व के मंतीरी भी कन्सस नहीं है ?" त'लसिया को क'५ समझ में नहीं आता तो पू५ता है ।

"उ लोग भी कन्सस है भाई त'लसी, वही क'त्ते की द'म हिलाने वाला कन्सस ।" हरिओम सारी बात को रिपि६ करता है ।

"अरे ओहपानी का लोग तो कहते थे कि नेपाली बोका, है । क'५ लोग कहते कि नेपाल के लोग ७ीक किये ।" राम भरासे कहता है । सत्यनारायo ँ कहता है,"क्या होगा ऐसा स'राज और ऐसी प्रजातन्तर से । हर सेकेन्८ में एक बच्चा पैदा होता है तो हर ३०६ में एक खून होता है । चारों तरफ हाहाकार मचा ह'आ है । इमान, धरम, विश्वास सब हा६बजार में विकने लगे हैं । उनके अन'सार अगर राजा के निर्दलीय(बह'दलीय का च'नाव मोगलान में होता तो भी निर्दलीय जीत जाता । राजा का पा६ी जीत जाता । इस हवा को देखकर वहा¤ के लोग भी उस समय कहते थे, भारत में राष्ट्रपति शाशन लागू होगा । अब मतारी बे६ँ का राज होगा । बे६ा राष्ट्रपति होगा और मतारी प्रधानमंत्री । फिर होते होते खाली राष्ट्रपति रह जायेगा और प्रधानमंत्री मर जायेगी । फिर दूसरा कोई प्रधान(मंत्री नहीं होगा । गा¤धी के देश में गा¤धी का राज हो जायेगा । असल स'राज यही होगा ।" रामभरोसे आगे कहता है "असल स'राज वही होता है, खून का राज । देखा नहीं , सारे तराइबासियों ने निर्दलीय को बो६ दिया । गा¤व ३र के सभी धनी मानी असेसर बाबू के भाषo से किस तरह विदक गये ? जिसका जोत उसका पोत । उनलोगों ने सोचा कि अभी तो सिर्फ मोही का हिस्सा भर था, अब तो सारे खेत ही मोहीवालों का हो जायेगा । हम बह'दलीय में बो६ नहीं देंगे । गरीव तो उन लोगों के चंग'ल में हैं । पट्टी प९ँ दिया, राजा सिसौदिया वंश के राजपूत हैं । हमारी तरह ही तराई बासी हैं, भारथबासी । हम तराई के खून को वो६ देंगे । बह'दलीय में तो सब पहा८ीया है, नेवार है, ५िम'गला ।"

"इसीलिए तो का७मा०८ँ में जब तराईवसी जाते हैं तो पहा८िया ख८ँ होकर कालर पक८ता है । मामपाखा, मधेसी, मारवा८ी, सब निर्दलीय में बो६ दिया । इन्हींलोगों ने निर्दलीय को जीताया । बाप रे लगता है कच्चा खा जायेगा ।" त'लसीया कहते ह'ए उ७कर चला गया ।

ज्ञघ

DON'T COPY

"चनिरका मिसीर का भाई म'निरका मिसिर का७मा०ड्र गये हैं । मंतीरी का द'र्गा पा७ करने । अरे १ वही म'निरका मिसिर जिनको ८कैती में वीस वरस जेल हो गया तो जमानत पर ५'६कर आये हैं । म'कदमा प६ना हाईको६ में चल रहा है ।"

"द'र्गा पा७ नहीं करायेंगे तो मंत्री कैसे रहेंगे ? स'नते हैं मंत्रीलोग पश'पतिनाथ का दर्शन करते हैं तो मंत्री रहते हैं । अपना मंतीरी द'र्गा जी का पा७ कराते हैं । पहले ख'द पा७ करते थे, बखारी पर बै७ कर स'वह(शाम । अब फ'रसत नहीं होने से म'निरका मिसिर को वहाल कर लिए हैं । पा७ करने का काम म'निरका मिसिर को । द'र्गा माई की ऐसी किरपा उन पर है कि अचरज होता है । पर साल च'नाव में साफ हार गये थे जैसे अखा६ में कोई पहलवान साफ चित्त हो जाता है उस तरह । पर लास ६ँयम में द'र्गा माई ने ऐसा चमत्कार दिखलाया कि रे८यो में स'नाई प८ँ कि वे जीत गये ।"

अ¤जोरिया रात है । गा¤व के क'५ नवय'वक लोग सावन का झूलन देखने वीरगंज जा रहे हैं । साथ में त'लसिया, सत्यनाराय०ा, रामभरोसे, भीखारी तथा क'५ य'वतिया¤ भी हैं । स'खली, फ'लिया¤, नकली, मखनी आदि । मनचले य'वक, मनचली य'वतिया¤ सावन का झूलन देखे बिना रह नहीं सकते । रास्ते में बातचीत हो रही है । गा¤व में परचलन है, जब य'वतिया¤ ऐसे अवसरों पर जाती है तो ये य'वकों के साथ ही जाती हैं। गा¤व में सब होता है, पर मेंले(७ले या झूलन आदि में वे उनका रक्षक होते हैं । अचानक य'वतियों में झगरा श'रु होने से बातचीत का क्रम बदल गया ।

"... च'प म'¤हझौंसी १ त'म्हारे ही जैसे मरद को ഽँ८कर गा¤व में रसलील्ला नहीं करती हू¤ ।" मखनी बोली "श्रीसिया बाला आया तो, रोकर चला गया । पंचायती ह'आ तो ७ँन कर बै७ गयी । उसी रात को मोतिया से पक८ँ गयी । अन'राधा पा६ ने पी७ पर कइन त'र दिया, पर बान नहीं ഽँ८ती है । दूसरे को ह¤सती है ?"

"स'खली पल६ कर वार करती है "आयहा¤य १ रे सोगनी सूप ह¤से चलनी को, अरे भतरकद्दी । त'म्ही ने नगिनवा को गरमी फैला दिया । बेचारा एक बरस इलाज किया तो ठीक ह'आ । जाने वीरगंज में बसकर, कहा¤ कहा¤ के मरदन से गर्मी का की८ा लाती है । मतारी, बेद्दी, भउजाई तीनों रात को बिरजू परसाद को ब'लाती है । वह भी तीनों के साथ एक ही बार म'¤ह काला करके चला जाता है ।"

"अरे त'म भी तो विरजू को मचान पर ब'लाती थी । रमैंन से उ७कर विरजू सीधे मकई के खेत में चला जाता है । अव पू५ता नहीं है तो............. "

फ'लिया¤ का मन आज इसमें नहीं लग रहा है । उसका मन जाने कैसा कैसा हो रहा है ।

जाने कब तक यह उदिया(ग'दिया होता । पर उसी समय रामभरोसे एक सग८ लाया और सभी लोग उस पर च९कर बीरगंज झूलन में पह'¤च गये । ३६ँ३र पर उतर गये ।

पक८ँ १ पक८ँ १ पक८ँ १

"मारो शाले को सबै७वा का है । शाला बहन बेद्दीयों की ५ाती में हाथ लगाता है ? " फूलिया उसका हाथ पक८े ह'ई है और दर्जनों आदमी उसे लात, ज'तों, ३'सों से मार रहे हैं । वह गोहार लगाता है, "नहीं माई(बाप, भाई १ हमने क'५ नहीं किया, भी८ में हाथ ७क गया ।"

"च'प चो६ँ तूने केह'नी से ह'थकाया नहीं ? मैं तो हाथ से कस कर दावी ह'ई थी । उसने केह'नी से ह'थका ह'थका कर हमारा हाथ ह६ँ दिया । फिर म'ट्ठी ब९ँ कर ....

DO NOT COPY

“फिर कितना रुपया निकाला ?” रामभरोसे आ¤ख मारता है । क’र्मिनपूरवा की इज्जत माद्दी में मिल रही है । वह फ’लिया से कहता है “अरे कहो म’ट्ठी ब९ँकर हमारे ब्लाउज की जेव से वीस रुपया निकाल लिया, नहीं तो इज्जत मिट्टी में मिल जायेगी । इस तरह लोग इसे पाकि६ मार समझेंगे ।”

“फिर म’ट्ठी ब९ाकर इसने हमारे जेव से वीस रुपया निकाल लिया । हमने लपककर ५ीन लिया, हाथ पकड लिया ।” फ’लिया जेव से वीस रुपया निकाल कर लोगों को बतलाती है । ये वीस रुपयें भिखारी ने उसे दिया था । जिस समय मखनी और स’खली का झगडँ चल रहा था उसी समय वह हाथ ब९ाकर वीस रुपया थमा दिया था ।

तडाक १ तडाक १ चट्ाक १ चट्ाक १ धम १ धम १

दर्जनों चाटें, म’क्कों, ३’स्सों और लात उसकी पी७ पर पडे । मारो शालें को, चोर १ पाकि६मार १ जेव कतरा १ क’५ देर के इस दृश्य के बाद प’लिस आयी, फ’लिया के हाथ से वीस रुपये पहले ५ीना और पाके६मार को पकड कर ले गयी । लौ६ते समय फ’लिया की ५ाती ५िल गयी थी, नकली का नकवेसर किसी ने नोंच लिया था । मखनी का ह¤सली गायव था । स’खली को क’५ नहीं ह’आ । वह औरत होकर भी मरद की तरह रहती है । किसी का मजाल नहीं जो उसको ५ू ले । हमेंशा चौकन्ना । ऐसी आ¤खे तरेरकर ३ूरती है कि मनचलों का नशा उतर जाता है ।

उसी रात को फ’लिया ने भिखारी को अपने पास ब’लाया । लौ६ते समय बातचित हो च’की थी । थोडी देर सबसे पी५े हो गये, दो मिन६ में सब क’५ तय हो गया । परन्तु आज बेचारे की यात्रा खराव थी । फ’लिया के भाई ने उसे पकड लिया । जब आह६ और खरखरारह६ ह’ई थी तो वह फ’लिया के ३र में जाने लगा । जब फ’लिया ने देखा कि अब पकडँ जाउ¤गी तो ख’द हल्ला करने लगी ।

“कौन है १ कौन है १ पकडो १ पकडो १ भइया कौनो ३र में ३’स आया है, हमारी ५ाती पकड लिया ।”

भिखारी भौंचक, होश उड गये, आ¤खों से आ¤सू निकलने लगे । हल्ला स’नकर ६ोले के लोग जमा हो गये । लात ३’स्सों, ज’ते(चप्पालों की बारिस होने लगी । अचानक भिखारी उ७कर भागा । लोग दौडे, उसे पकडने को । वह धनेसर के दोगा में ३’स गया । लोग वहा¤¤ पह’¤चे तो उसने डर के मारे पैखाना पेशाव कर दिया । धनेसर ने उसको बचाया । उनकी सब अदव मानते थे । उन्होंने कहा कि कल पंचायती होगा । पंचायती में वह कह रहा है

“मैं अपने मन से नहीं गया । इसने म’झे ब’लाया था । कल झूलन देख कर आते समय इसने ही कहा था ।”

“नहीं पंचों १ इ हमको बेइज्जत करना चाहता है । विरजू परसाद के बाद से मैंने यह सब ५ोड दिया । एक बार जो हो गया, सो हो गया । उसके बाद कान पकड लिया । अगर मैं ब’लाती तो मैं ही हल्ला क्यों करती ? अगर मैं हल्ला नहीं करती तो इ पकडाता नहीं ।”फ’लिया हिचकिया¤ लेकर रो रही है ।

पंचों ने देखा फुलिया ठीक कह रही है । भिखारी का म’डी ५िलवाया गया । म’ख पर च’ना और करिखा पोत कर ३’माया गया । आगे(आगे भिखारी, पीे५(पीे५ बच्चों का झ’०ड ।

रामभरोसे सब क’५ देख रहा है । देख रहा है यह अन्याय । ऐसे अवसरों पर वह क’५ नहीं बोलता, उदास हो जाता है । कभी रोने लगता है ।

DO NOT COPY

"आगे(आगे भिखारी, पीपे्(पीपे् बच्चों का भ्क'ाेड ।" देखो देखो आनेवाली सन्तान, होनेवाले नौजवान, खूव देखलो, सीख लो । फिर वह फ'लिया को देखता है । उसकी आखों से आसू वह रहे हैं ? फ'लिया उससे आखें नहीं मिला पाती, भागती है । पीपे्(पीपे् रामभरोसे चलता है, आज उसको ऱोडेगा नहीं ? सिर्फ उसकी आखों से जवाव मागेगा । वह म'जवानी पार करने लगी । एकान्त पाकर वह उसको डा६ कर खडा होने के लिए कहता है । फ'लिया के पाव आगे नहीं ब९ पाते, वह म'र्तिवत खडी हो जाती है , जाने उसकी ढ६ में कौन सी ताकत थी । रामभरोसे उसके पास जाता है, आखें मिलती हैं, फ'लिया आखें च'रा लेती है ।

" आखें मत च'राओ । मेरी आखों में देखो ।" फ'लिया रो पडती है ।

"थोडँ च'ना और कारिख त'म भी पोत लेती तो क्या हो जाता ?"

फ'लिया फफक कर उसके पाव पर गिर पडी

"काका म'झे माफ कर दो । मैं द'श्चरित्र हू । क'५ देर उसी तरह आस'ओं की अमृतवर्षा करते रहे । फिर दोनों अपने अपने ३र को चल दिये । उस अमृतबर्षा में सब क'५ निर्मल हो च'का था ।

जो काम पंच नहीं कर सके, वह रामभरोसे की निश्५लता ने कर दिया । उस दिन से फ'लिया के बारे में कभी ऐसा नहीं स'ना गया । पश्चताप ने उसे जिन्दगी भरके लिए निर्मल बना दिया था, भीतर से परिवर्तित कर दिया था ।

भीखारी धनेसर के यहा हलवाहे का काम करने लगा । फ'लिया उसी ३र में जाकर बै७ गयी तो लोगों ने दोनों का व्याह कर दिया ।

ज्ञद्ध

पहाडीया(मधेसीया का कैसा स'न्दर मेंल है उनके ३र में । अगर आज वे जिन्दा होते अथवा उनका धन नहीं विलाता तो आज उनके लडके दर(दर नहीं भ६कते । फिलहाल तो वे दर(दर भ६क रहे हैं ।

उनके सबसे बडे लडके कहते हैं कि नो६ उडता है, पकडने की कला चाहिए । क'५ दिन नो६ चइंई पर विऱाकर सोते थे, कड(कड । उसके बाद उनके ३र से नो६ उड गया और वे उसको पकडते पकडते का७माोडू पकड लिये । फिर भी नो६ उनसे पकडँया नहीं ।

लेकिन नो६ पकडते थे हरनाराय० बाबा । शिव नगर से क'र्मीनप'रवा आये तो लीलामणिँ की जमीन्दारी में इतना नो६ पकडँ कि क'र्मीनप'रवा गाव का सारा गोयडँ खेत अपने नाम पर कर लिया । नो६ पकडते पकडते वे एक गों९ लडकी को भी पकड लिए । जब गाव के लोग का६ने के लिए भाला(गडँसा निकाल लिए तो उस एक बच्चे की मा को इसतीरी बना लिया । अब इस मैथिल कायस्थ के ३र में ७७ भोजपूरी लडके पैदा होने लगे, पहली की देह से लडकिया ही लडकिया थी । इनको भी अच्ऱा ही ह'आ, ब'९ापे का सहारा मिल गया । लेकिन सबसे बडँ सहारा तो उस गों९ लडकी को मिला ।ऱेनसार चलाना ऱोडकर राजकाज चलाने लगी अपने नइहर में ही जमीन्दारीन हो गयी । वह ब्रह्मचारी बाबा की

DO NOT COPY

बिलटी की सखी थी । वह वेचारी तो कभी कभी जनम धरती की याद करके का¤६३६ में रोती है । परन्त' यह जनम धरती पर ही रह गयी है । द'खनी नाम क्यों है यह जवानी में समभ्र में नहीं आती थी । कितना मजा, स'ख चैन तो है हरनारायŐ बाबा के यहा¤ । परन्त' ब'९ापे में सब क'५ समभ्र में आ गया है । जब पैदा हर्' थी, तब मा¤(बाप संसार से जल्दी जल्दी रवाना हो गये थे, इसीलिए ।

लेकिन द्दण्ठ साल के बाद गा¤व का गरह हरनारायŐ बाबा के ३र में भी पकद लिया । प्रजातन्तर आ गया था, दस्त'री कम मिलता था , द्दण्ड्ढ साल के बाद तो राहू का ही प्रकोप हो गया । साक्षात राहू आकर बस गये । लीला मŐ क'र्मीनप'रवा में चले आये थे(साक्षात राहू¤ । जब भूमि(स'धार लागू हो गया तो सब भागम(भाग श'रु हो गया । क'५ लोग तो खेत मोही लिखा लिए, जो बचा उस पर लीलामOी का अधिकार था । जो क'५ बच गया उसी से हरनारायŐ बाबा ग'जारा करने लगे । लोग अब मालपोत जाकर कलेया में देते थे । कितना जमाना बदल गया । पहले लोग प्रOाम करते थे तो ये चरनोदक पिलाते थे । अब ये ही लोगों को प्रनाम करते हैं तो कोई जवाव नहीं देता । राम राम ब'९ँपे में ब'९ँउ ने सब दिन देख लिया ।

६मा६ार और दूध तो धनेसर से मा¤ग कर वे खा लेते थे, चाय पी लेते थे, परन्त' दारु ? दारु कोई कहा¤ से देगा ? वीरगंज की सारी जमीन जो उनके नाव पर थी, एक एक बोतल दारु में लोगों को श'क्री बिक्री लिखाते गये । अब वहा¤ सिर्फ एक कट्ठा जमीन है, उस पर उनके चारों लदके और शिवनारायŐ के लदके मैंनियाभ्रोंभ्र करते हैं । बीच में संजय बाबू इनके बहन के लदके इस मैंनियाभ्रोंभ्र का पूरा फायदा उ७ँ रहे हैं । वीरगंज की जमीन पर ३र बनावर ७ँ७ से रहते हैं । .... राम राम उस दिन जब तीनों आदमी हरनारायŐ, शिवनारायŐ और नरनारायO दारु पीकर आ रहे थे तो कैसा दृष्य हो गया था । नरनारायŐ ने दारु के भ्रोंक में ९ाह दिया तो ये धनेसर के गोवर के मान पर चले गये और दलदल में हाथी की तरह हलने लगे । प'स्तैनी गोवर का मान था, बह'त बदा । इसी पर किसी जमाने में गोबर के साथ साथ दूध दही और मही भी फेंकाता था । शिव नारायŐ हाथ पकद कर खीच रहे हैं और वे गोवर के मान में हलते जा रहे हैं । चश्मा भ्र६करा गया है, आ¤खों से दिखलाई नहीं पद रही है । रस्साकस्सी का खेल हो रहा है । जब गरदन तक दूव गये तो कई लोग पह'¤चकर च६खारे लेने लगे । फिर पा¤च आदमीयों ने मिलकर (क्रेन) चेन मशीन की तरह उपर तान कर ले आया । निकले तो ६ट्टी बट्टी हो गया था । पता नहीं चलता था बैलों की है कि इनकी । राम भरोसे त'रत वहा¤ पह'¤च गया

"बाबा सब लोग तो आपके खेतों में दाम देने जाते हैं । आप गोबर के मान पर दे दिया ।" जब बच्चों को ६ट्टी लगती तो आज भी कहते हैं कि चलो हरनारायŐ बाबा का दाम देने ।

तीनो आदमी का महाभारत रोज रात को लोग देखते थे । दारु पीकर लोग कैसे महाभारत करते हैं । कभी कभी प६का प६की भी हो जाती थी । लेकिन स'वह में लोग देखते तीनों आदमी म'¤ह में म'¤ह सद्दँकर एक ही साथ वीरगंज अदालत में जा रहे हैं । लोग इसके आदी हो गये थे ।

फिर जब हरनारायO कं७ का दिन पूरा हो गया तो एक दिन वे च'प चाप चले गये । किसी को बतलाये भी नहीं। बे६े लोगों को मालूम रहता तो धन दौलत के बारे में पहले ही पू५ लेते । पर क्या करें । पू५ तो दादूर जी भी नहीं सके थे, शिवनारायO का बे६ा ।शिवनारायO जव रात को दारु पीकर आये तो दादुर जी के वे६े के लिए लदू लेते आये । जब

दादूर जी के बेटे ने दरुआ का एकटींग करके उनको कह'¤चा दिया तो लट्ठ हाथ में लिए ही मारने के लिए दौडे । लट्ठ तो ९ले कि तरह इनार में चला गया और ये अपने चौकि पर धम से गिर गये । बोल भी नहीं सके, मिन्टों में काम तमाम, राम नाम सत्त हो गया, चटपट । ऐसे में कोई क्या पूछता? वैसे उनके पास क'छ था भी नहीं । जो था वह सब एक एक बोतल दारु में धीरे धीरे मारवाडीयों के नाम में चला गया था ।

अब दादूर जी दर दर की ठोँकरें खाते हैं । पा¤च भाई, हिन्दूस्तान के पा¤च जगहों पर रहते हैं । चौदह वरस के वाद गा¤व के लोगों ने उन लोगों को कभी नहीं देखा । उसके पहले देखते थे । अब खाली दादूरजी को देखते हैं लोग । एक एक करके सब खेत मंतीरी के नाम लिख दिए । जिस तरह से आया था उसी तरह से चला भी गया । जब उनका बडँ लडका दिन' पागल हो कर बेपत्ता हो गया तो एक दिन वे यहा¤ से बोरिया बिस्तर गोल कर गये । अब शिव नगर में रहते हैं । कभी कभी बची ख'ची जमीन को मंतीरी क नाम लिखाने के लिए आते हैं । कलेया में सही छँप लगाना पडता है ।

बोरिया बिस्तर तो हरनारायठँ का बेटा गिरिश परसाद भी गोल कर दिये । जब उडते ह'ए नोटों को वे नहीं पकड सके तो एक सन्यासी को पकड कर ले आये । सन्यासी कहता था हम मछली से सोना बनाते हैं । जब मछली सड जाती है, उसमें खदखद पिल'आ पड जाते हैं तो मेरा मंत्र(तंत्र से वे पील'आ सोने का ब'रादा हो जाते हैं । खूब हल'आ(पूडी खाता था । सम'न्दर जी से ज्ञण(ज्ञण मन की मछली म¤गाई गयी । दस मन से कम सोना क्या होगा ? बक'लीया में मछली को हला दिया गया और जब तीन महीना खूव हल'आ पूडी खा लिए तो एक दिन सन्यासी जी ने च'पके से बोरिया बिस्तर गोल कर दिया । ओह ! दस दस मन की मछली, खा भी लेते तो हवखे लग जाता । लेकिन अब तो उसमें खद खद पिल'आ पर गया है । उसको कौन खायेगा ?

उसके बाद गिरिश जी क'छ ज्यादा बोलने लगे । सब लोगों को पकड पकड कर नोट दिखलाते और पकडने के लिए कहते । वह देखिए नोट आ रहा है, पकडिये(पकडिये । अरे वह तो मंतीरी के ३र की ओर जा रहा है । हम उस पर चूतर रख कर सोते थे इसीलिए हमारे पास नहीं आता । अच्छा-अच्छा ! चलिए हम भी आ रहे हैं । मंतीरी से कहेंगे कि इसपर उसका कोई अधिकार नहीं । इसको आते ह'ए हमने देखा है । कई लोग रा¤ची ले जाने का ट्रँई किये लेकिन वे रा¤ची नहीं गये, का७मा०डू चले गये, वही पर एक पहडनी से शादी कर लिए । पहडनी है तो झगडँलू, कभी कभी गोरखाली रगत दौडने लगता है । पर बाल बच्चा हो गया है । दिन मजे से कट रहा है । मैंथिली, भोजप'री और पहाडी नस्ल से नेपाल की एक नयी कौम बन गयी है, जिसमें मदेसिया, पहडीया का कोई भेद(भाव नहीं है ।

भेद(भाव तो अमरिश परसाद को भी नहीं है । यह गिरिश प्रसाद का सबसे छोटा भाई है । सबसे ख'शहाल भी यही है । पिता के मरने के बाद सबसे द'ख इसी को ह'आ यतीम की तरह । पर जब का७मा०डू में गया तो ऐसी स'शील पहडनी मिल गयी कि इसका काया पलट गया । यह दिन भर रेडीयो(ट्रान्जिस्टर बनाता है और बीबी ३र में स्वेटर ब'नती है । हजारों हजार रुपये आ जाते हैं । वह नोट पकडने की बात नहीं करता था । पर बेचारा विल्क'ल बाप पर चला गया है, खाली बेटी ही बेटी । अब वह किस गोंरीन को खोज कर लायेगा ? वह जमाना ही दूसरा था ।

भेद भाव है तो बेचारी सिरीश बहू के साथ । जहा¤ जाती है वही पहाडिया लोग बेलाते हैं । हरनारायठँ की यही बहू है जो जमीन्दार ३राने से आयी है, परन्त' उधर भी जमीन्दारी का यही हाल था । जमीन्दारी का जो भी हाल हो परन्त' सिरीस बहू का हाल बडँ कडकीला था । जब सिरीश से झगरा होता था, तब उनको दिखलाकर मा¤ग का सिन्दूर पानी

DO NOT COPY

DO NOT COPY

से धो दालती थी, च'ल्ही से कोयला लाकर ऐनक के सामने जाकर अपनी माμग में लगा आती थी । यह सब जब गाμव का ब'ं४जीवी आदमी सिरिस देखता था तो पता नहीं उसके मन में क्या होता था । लेकिन जब एक दिन किसी बारात से लौ६कर कै करते करते सीरीस मर गया तो ये अपनी बदी बदी आμखों से देखती रह गयी थी । तब भी उसने सिन्दूर नहीं धोया, क'५ औरतों ने मिलकर च'दियाμ फोदी और सिन्दूर धोया ।..........

उसके बाद बेचारी नरस हो गयी । जिस अस्पताल में जाती है, पहदिया लोग बेलाते हैं । कोई सोरे बरस की लदकी थोदे है कि नहीं बेलायेंगे । सोरे बरस की तो अब उसके गरभ की लदकी है, उसको भी यह नरस बनाना चाहती है ।

लेकिन प'रीस जी बेचारे सूधे आदमी हैं । एस.के.एन. सिन्हा लंगदा दँक्६र से इलाज करा कर जब इनका ६ी.वी. ७ीक हो गया तो इनके शरीर में क'५ ताकत और जवानी नजर आने लगी । परन्त' इस ताकत और जवानी से उनकी श्रीमती का काम नहीं चलता । ये दिन को लोहा कारखाना और रात को चीनी कारखाना में काम करते हैं । अब बोलिए इनकी ताकत और जवानी कहाμ पर खर्च होगी । वैसे भी इनकी श्रीमती इनका बदा खयाल रखती है । इमरजेन्सी में काम आयेगा । अभी तो वह बदे तदके रो६ी बनाकर ६िफिन में बन्द कर इनको विदा कर देती है । रसलिल्ला दिन में भी हो सकता है । शनिबार के दिन पैसा देकर कीर्ति सिनेमा में भेज देती है(जाइए धरती मैंया लगी ह'ई है । गाμव भर की औरतें और लदकियμा गयी हैं । देखियेगा, किसी लदकी पर फिदा मत हो जाइएगा । .... मैं चली जाउμगी तो ३र में चोरी हो जायेगी ।लदके लोग तो स्कूल में होते हैं या खेलने भाग जाते हैं । आज कल दिन दहादे लोग ३र में ३'स रहे हैं । प'रीस प्रसाद निहाल होकर चले जाते हैं, कितना खयाल रखती है उनकी श्रीमती, सती सावित्री क्या होगी ? अभी दरवाजे पर भी नहीं प'गे होंगे कि भकोलवा रासा माμगने आ जाता है । ये सिनेमा देखने चले जाते हैं, वह रासा माμगने भीतर ९'क जाता है । ......रासा में वह प्रेम को इतने कस कर बाμधे ह'आ है कि प्रेम(राम कभी त'रा नहीं सकते । ७ट्ठा है त'राना । ..... इसी रासा में वह प'रीस की ज्ञद्ध वरस की बे६ी को भी बाμधना चाहता है । परन्त' प'रीस वहू उसकी माμ है, अभी तक यह खयाल उसको है । कही भकोलवा नखदँ ओखदँ दिखलाने लगे तो दर है । उसका यह खयाल भी कही नहीं चला जाय । लेकिन दरने की बात नहीं है भकोलू राम चले जायेंगे तो गंगा राम चले आयेंगे ।

"एक बोलावे, चौदह धावे ।"
रामभरोसे कहता है ।

ज्ञछ

जब सागरनाथ बाबा मर गये तो महन्थराम किरपाल दास को क'५ ऐसा प'त्रशोक ह'आ कि एक बर्ष के अन्दर वे भी परलोक सिधार गये । सागरनाथ बाबा थे ही ऐसे आदमी कि सभी लोग रोते थे । तीस बर्ष के उस य'वक सन्त ने इलाके भर के लोगों में क'५ ऐसा ५ँप

भ्रोट था, कि जो भी इस समाचार को स'नता वही अवाक रह जाता । उनको क'ष्ट भी नहीं ह'आ था, कैसे चले गये, ज'ल'म हो गया, गजव हो गया । भगवान भी क्या क्या करते हैं, लोगों को क'ष्ट समझ में नहीं आया । इस स्वर्गारोहण ने महन जी को क'ष्ट इस तरह तोड दिया था कि रोज आरती के समय लोग उन्हें रोते ह'ए देखते थे । फिर एक वर्ष के अन्दर उनको रक्त(चाप और चिन्नी की बिमारी ने क'ष्ट ऐसा ग्रसित किया कि चक्रवर्ती डाक्टर साहव को चालीस हजार रुपया देने पर भी वे ठीक नहीं ह'ए । जाते समय मोह ने उनको ग्रस लिया । मठ का उचित उत्तराधिकारी खत्म हो च'का था । उन्होंने बह'त खोजवीन किया लेकिन कोई आदमी जमचा नहीं । अन्त में वे अपने भतीजे ३नश्याम शाही को महन्थी की राजगद्दी देकर स्वर्गारोहण को चले गये ।

३नश्याम शाही अब महन्थ माधव दास हो गया । उनको लगा कि किसी ने राजगद्दी दे दी, अब खजाने की चावी वे भ्क'लाते थे । मठ के स्कूल में पढ़ने आये थे, महन्थ राम किरपाल दास ने हेडमास्टर को मठ से निकाल बाहर किया था । अब वे फिर से मठ में आ गये । परिमल दास बाबा को अब सन्यास आश्रम से विरक्ति हो गयी थी । वे महन्थ माधव दास से झगडा करके वस्ती से दूर फूस का एक अलग मठ बनवा लिए थे । रामभरोसे कहता है कि कोई भी ३र बनवाता है तो गाँव से नजदीक बनवाता है, परन्त' बाबा ने तो ऐसे जगह बनवा लिया कि वहाँ कोई नहीं पह'ँच पाता । कामदेव सताते हैं तो लोग कितने निडर हो जाते हैं । विरजू भाई जब स'खली के मचान पर दियरा में जाते थे, तो सियारिन फेकरती थी, बाथ पर के जिनाद बाबा के डर से कोई नहीं जाता था । परन्त' उनको तनिक भी डर नहीं लगता था । सिर पर म'रैठ बान्ह कर लाठी लेकर सर से निकल जाते तो कोई पहचानता भी नहीं था । बाबा परिमल के मठ से रात को रमपियरिया, लंगडी, कंचनिया आदी दो तीन औरतों को एक साथ निकलते ह'ए देखा गया । लडकियों को डर लगता था, दो, तीन मिलकर मठ पर जाती थी । बाबा बालब्रह्मचारी हैं, थोडा योगाभ्यास भी जानते हैं ।..................

"ऐ बब'आ नरेन्दर, डाक्टर साहव, अरे त'मको स्कूल में बह'त पढ़ाया है । लगता है अब हमारे ग'रु दक्षिणा का समय आ गया है ।" बाबा परिमल दास हाथ को पकडे ह'ए डाक्टर के क्लिनिक में पह'ँचे । वे चन्दन अब भी लगाते हैं, पर लंगोट पहनना छोड दिए हैं । धोती पहनते हैं ।

"क्यों बाबा क्या ह'आ ? ग'रुदक्षिणा देने के लिए तो हम तैयार बैठे हैं ।" डाक्टर ने दन्डवत करते ह'ए कहा । अन्दर दो(तीन आदमी के साथ रामभरोसे भी बैठा था ।

"अरे क्या ह'आ होगा, कही बैल(वैल पटक दिया होगा । देखो कही हड्डी(वड्डी ...... हाथ तो पकडे ह'ए हैं । शादी कर लिए लेकिन अभी तक लोग बाबा कहते हैं, दण्डवत करते हैं ।"

"अरे पेटू तो जाके अपने बाप से पूछो कि अभी तक दण्डवत काहें करते हैं । दस बरस से पैसा लिए हैं, जोडो तो ज्ञछ(द्दण हजार रुपये हो जायेंगे । रुपये तो धनेसर भी लिए हैं । सोचा कि बेटा डाक्टर हो गया है, किसी दिन काम आ जायेगा । रही पैसे की बात तो अब डाक्टर कमा कर दे देगा । कहो तो बेटा भला सरकार ने भूमि स'धार लगा दिया । सब लोग मोही लिखाने लगे । अब मैं अपना खेत बचाउँ कि बाबा गिरी बचाउँ ? अब तो सब क्रिस्तान हो गया । अब कौन साध' महतमा रहेगा भला ?

"हा बाबा, इ तो उसी दिन म'झे मालूम हो गया था जिस दिन पिपरा बाली आपसे बातचीत कर रही थी । ऐसा मटक(मटक कर, आँखे चमका(चमका कर मठ में बात किया जाता है ? उसी दिन मैंने कहा था कि अब देरी नहीं है । तीन महीने के बाद स'ना की बाबा

DO NOT COPY

अब म७ ⅵो८कर गाव में ३र बना लिए हैं । पत्नी(पत्नी को अब सरेह में ८र लगता था, चोर ८ँक'ओं का जमाना है । फिर उसका भाई भी लाᕲी लेकर ३ूमता था । सो बाबा ने सोचा की अब गाव में रहेंगे । दो चार आदमी बचाने बाले हो ही जायेंगे । बाकी .... जब मिया बीबी राजी तब क्या करेगा गाव का काजी ?"

"देखते हो बे६ा म'फ्को कितना बेइज्जत करता है । असली बात यह है बे६ँ कि भूमि स'धार लागू हो गया । स'ना कि अब किसी का खेत किसी को नहीं रहेगा । भूमी स'धार के बाद धीरे(धीरे कमनिष्६ आ जायेगा । हम तो जानते हैं बे६ा कि कमनिष्६ में सबको काम करना प८ता है । साध', महातमा कोई नहीं रहेगा, सो मैंने सोचा कि आज जमीन ग'ᕲी को चली जायेगी कल कमनिष्६ को, सो क्यों नहीं,......."सो क्यों नहीं कमनिष्६ का ६राई कर लिया जाय ।

ओ १ अब हम समफ्ने कि बाबा पहले ही से कमनिष्६ बनने का अभ्यास कर रहे हैं । हम ब'रबक आदमी क्या जाने? .... अच्ⅵा बाबा ⅵो८िये, बाल(बच्चे का हालचाल कहिए । कितने बाल(बच्चे हो गये ? उस दिन देखा रिक्सा पर जाते ह'ए । द०८वत किये तो आपने नहीं स'ना । कौन औरत के साथ तीन चार ᕲे बाल गोपाल .... ३र पर सास को ब'ला लेते तो कम से कम सिनेमा में उतने बच्चे ८िस्६रव नहीं करते ।....... पूⅵा तो एक आदमी ने कहा कि बाबा कश्मीर की कली देखने जा रहे हैं ।" तीसरे आदमी सत्यनाराय० ने कहा ।

"अरे तो क्या आपके भरोसे हैं, सास ३र पर रहती है तो औरतिया और औरतिया ३र में रहती है तो सास को सिनेमा देखा आते हैं । वाह बाबा क्या बीबी च'नी है ....करीया भ'चेंग । बाबा को लग रहा था कि जवानी बित रही है, कही विहान होते–होते खत्म नहीं हो जाय,ओस जैसा । ऐतना ह८ब८ी हो गया था बाबा ? अरे हमलोगों से कहते ? रामभरोसे ने कहा

हो हो हो,ही ही ही

"देखते हो ८ँक्६र, यह कितना मजाक कर रहा है । जिधर जाते हैं, उधर लोग खाली यही कहते हैं । रोज(रोज सिनेमा देखता हू कि कम से कम तीन ३६ा तो लोगों की बात नहीं स'नेंगे । बे६ा १ शादी क्या कर लिया, लगता है कोई पाप कर लिया । त'म्ही बतलाओ बे६ँ, हमारे ऋषि महर्षि सब शादी नहीं किये थे ?

"शादी तो किये थे बाबा, लेकिन रिक्सा पर बै७ कर सिनेमा नहीं देखते थे ।" ८ँक्६र को इस बातचीत में रस आने लगा था । उसने बाबा के हाथ को देखते ह'ए कहा

"और बाबा स'नते हैं, महन्थ माधव दास अब ३र पर ३ास का६ते हैं ?"

"अरे बे६ँ, उसकी बात नहीं करो । उ तो एक नम्बर का लंगा था । हम मना करते थे, हरीशलाल मना करते थे । परन्त' उसने हमको भी भगा दिया म७ पर से । हरीस लाल को भी भगा दिया । हम तो बे६ँ १ नष्६ ह'ए वहा से भागने के बाद । नहीं तो हमी और हरीश लाल तो म७ पर बच गये थे । गरीव दास बाबा किसी तरह जी रहे थे । कोᕲँरी बाबा , किसी कोᕲँरिन से पक८ँते थे, तो फ्नक दास आधी रात को परसाद बा६ते थे । हे८मास्६र अब चिउरावाली को ख'लेआम उपर कोᕲँ पर ले जाता था । बे६ा १ जब वह नृसिंह भगवान के सामने से ग'जर कर उपर जाती थी तभी मैंने कह दिया कि अब म७ ध्वस्त हो गया । बाबा माधव दास को अच्ⅵे(अच्ⅵे प'राने श'भ चिन्तक लोगों से नाता ६ू६ गया । हे८मास्६र और बाबुलाल के फेर में पर गये । बाबुलाल ने म७ का सारा हदवन्दी से वहीक खेत अपने नाम लिखवा लिया । और अब को९ी हो गया है । हदबन्दी वाला स्वारथ दास लिखवा लिए । हे८मास्६र और बाबा को एक दिन ऐसी पि६ाई ह'ई कि वे लोग म७ ⅵो८ कर भाग गये । अब

DO NOT COPY

३र पर ३स का६ते हैं ।...... बाप रे बाप । बाबा होकर ␍ीस्ढीलरी का दारु पीता था और चीकनी से ल␍की बोलाता था । इतना भयानक अन्याय कही ......"

"नहीं बाबा १ऐसा नहीं करना चाहीये । करिए तो ख'ले आम, आपके जैसा, नहीं तो नहीं । देखा देखी आपको भी लग गया क्या बाबा ? "

हो हो हो ही ही ही हे हे हे

अच्ω तो बाबा । आपके हाथ की ह␍्␍ी ␍ू६ गयी है । एक्स रे कराना होगा । यह एक्स रे करवा कर लाइए । मैं पलास्६र कर दूΩगा, पैसा मैं नहीं लूΩगा । आप....."

"अरे बे६ा १ पैसे की फिकिर मत करो । वह धनेसर से भी नहीं माΩगता । इतना जिल्लत सह कर तो ग'ठी संस्थान से जमीन बचाया । अब धनेसर से क्या माΩगना ?"

"लेकिन बाबा यह कैसे ␍ू६ गया? लगता है इसे जवरदस्ती तो␍ा गया है ?"

"अरे बे६ँ क्या बताउΩ ? वैल के नाद में सानी चला रहा था । सानी चलाकर जैसे ही पी५ म'␍ा कि सिरा बैलवा ने सींग लगाकर ६ँΩग लिया । हाΩ हाΩ हाΩ करते ही हैं कि उपर से धवाक १ इतना ही नहीं बब'आ प६क कर मेंल्हने लगा । उ तो छ(ज्ञण आदमी दौ␍ कर.....

हो हो हो हे हे हे ही ही ही

लेकिन बाबा १ पहले तो आप वैसे वैसे बैल को भी प५ँ␍ प५ँ␍ कर पी६ते थे । अखा␍े पर जव नागा बाबा का भाला निकलता था तब किसी का मजाल है कि म७ पर आता । कितने लोग म७ पर च९ाई किये और पों५ ल'का कर भाग गये । .....अब कितने द'वले हो गये हैं, ओह १ भगवान भी ब␍ा अन्यायी है । उससे किसी की स'ख शान्ति, शादी वियाह देखा नहीं जाता ।"

हो हो हो हे हे हे ही ही ही...................

हो बब'आ नरेन्दर, अरे ई स'नेंगे, हΩसते हΩसते पे६ फूल गया कहते ह'ए बाबा सूरधाम पह'च गये । रामभरोसे ने कहा कि अब लिजिए वे गये तो ये आ गये । वे बाबा परिमल दास के ग'रु भाई हैं ।

"क्या बाबा ? द০␍वत ।"

"अरे ख'श रहो, अरे केव६वा से पूω कि हो केव६ तू क्यों अपने प'त्तर को हमेंशा अपने ही साथ रखते हो । जानते हो क्या बोला ?"

"क्या बोला बाबा ?"

"अरे १ उसने कहा कि ठीक करते हैं । अरे हΩसते हΩसते पे६ में बा३ लग गया है । अपने साथ दारु पीलाता है और कहता है कि ठीक करते हैं । मैंने कहा कि राΩची ले जाने से ठीक नहीं ह'आ, वह कंठी वाला भी हमेंशा अपने साथ रखता था, अब त'म अपने साथ रखते हो, दारु पीलाते हो और कहते हो ठीक करते हो ..... अरे बब'आ हम तो कहते हैं अपना फल भोग रहा है ।"

"सो कैसे बाबा ?"

"अरे एक तू है जिसको फΩसाने के बाद भी क'५ नहीं ह'आ । बे६ँ जब त'म्हारा हाथ ␍ू६ गया था तो भैंसवारी में से भैंस ५ँ␍ कर, गम५ँ में लपे६ कर लाद कर त'म्हें ३र पर ले आया था । ह␍्␍ी ␍ू६ गया था, उसी दिन बोला था कि हमारा बे६ा ह␍्␍ी का ␍ँक्६र बनेगा । सो बन गया, देखिये ।"

"असल बात बताइए न बाबा, क्या बात है ।" राम भरोसे ने उनकी ओर देख कर कहा ।

DO NOT COPY

"अरे बऱ्ँर का बेढा । बात क'ऱो नहीं है । फिर **ढँक्दर की ओर म'८** कर कहा

"बेढँ १ आज कल ब८ी कमजोरी हो गयी है । वह दैंनिक दिया था ? अलवत्त तागद किया । एक और……."

"तो सीधे कहिए न बाबा" रामभरोसे ने वीच में ही बात का६ कर कहा "अब हन'मानग९ी का ल८्८' ऍं८कर यही दैंनिक खाते हैं । क्यों एक ही बच्चा हआ तो इतनी कमजोरी हो गयी । ओह बाबा १"

हो हो हो ही ही ही हे हे हे

बाबा सुरधाम दास, पहले लोग बदरीया कहते थे, धनेसर की भैंस चराते थे । बचपन में माँ(बाप हैजे का शिकार हो गये । धनेसर से भी पहले वे स्वारथ की भैंस चराते थे । एक बार बखारी में से धान च'राकर बेंच दिये तो स्वारथदास ग९ँ खोदकर इन्हे उसी में हला दिये, गर्दन से उपर ऱो८ दिया । बाबा ख८े(ख८े उसी में साँस लेते थे और और ६'क'र(६'क'र ताकते थे । दिन भर उसी में रहे । शाम को ग९ँ में से निकाला गया तो वे उनकी भैंस ऍं८कर धनेसर की भैंस चराने लगे । वहाँ ब८ी इमान्दारी के साथ काम किये । ग९े वाली बात हमेंशा याद रहती थी । एक बार क'ऱ लोगों ने उकसा दिया तो भैंसबारी में से भाग कर बलेक का गाँजा लेकर ३नश्याम बहाद'र के साथ फैजावाद रवाना हो गये । तब से आज तक बाबा गाँजा पीते हैं ।

पक८ो १ पक८ो १ ७ाय ७ाय

खवरदार कोइ भागा तो

सिकरहना के पूल पर दोनों ओर से प'लिस ने ३ेर लिया । अब ये लोग कहाँ जाये ? सभी लोग पक८ँ गये । परन्त' भीखारी राउत पूल पर से ही नदी में कूद गये । उनको व्रम्हचारी बाबा ने बह'त दूध पिलाया था । दूसरे दिन भाग कर आ गये तो कहते थे बाल(बच्चों का म'ँह देख लिया । विश्वास नहीं था । बदरिया गाँजा लादने चला गया । उनको क'ऱ महीने की जेल हो गयी । ऱ महीनों के बाद जब बदरीया ऱ'६ कर अजोधा जी आया तो स्वारथ दास के गाँव का समझ कर वे परिमल दास के ग'रु के चेला हो गये । परिमल दास बाबा ने उनको धोखा दे दिया था । बदरिया अब स'रधाम दास हो गये । हन'मानगढी का ल८्८ू खाकर और हन'मान अखा८े में क'स्ती ल८कर जब पुरा नागा पहलवान हो गये, क'ऱ चौपाई आने लगी तो उनको जनम धरती की याद सताने लगी । क'ऱ मसोदिया चमारीन का भी ।

वे पहली बार जब गाँव में उत्तरे तो लोग ऱक प८ गये । स्वारथ दास और धनेसर अब उनको रोज द०८वत करते थे । वे रोज अखा८े में जाकर य'वकों को ल८ँने लगे, कहने लगे कि अब केव६ को भी ल८ँ दूँगा । लेकिन बाबा को जनम धरती का क'ऱ ऐसा मोह पक८ लिया जिसको आजकल होम सिकनेस कहा जाता है । सो स'रधाम दास को होम सिकनेस पक८ लिया । क'ऱ दिन तो ब८ी हँसी(ख'शी में ग'जर गये । पर अब लोग उनको गाँव से चले जाने का स'झाव देने लगे । धनेसर और स्वारथ दास ख'श थे कि उनका दिन पल६ गया । उनको ग'रु ने खबर भीजवाया था कि लगता है इ भी परिमलवे जैसे हो जायेगा ।

जब धान का दिन खतम हो गया और य'वक लोग दूध पह'ँचाना ऍं८ दिए तो बाबा सूखने लगे । तभी बाबा को हन'मानगढी का ल८्८ू याद आया और एक दिन चुपके से अजोधा जी चले गये । लेकिन अब बाबा वहाँ का खाया ३र पर निकलना श'रु कर दिया । एक बार बाबा जब पूरे एक बरस रह गये तो लोगों ने सोचा कि अब बाबा नहीं जायेंगे । एक दिन लोगों ने देखा कि एक ल८की, सोरे बरस की ,बाबा के ३र में आ गयी है । कुऱ लोग मारने दौ८े तो ल८की ने कहा कि मेरे पिता जी ने इनसे मेरा वियाह कर दिया है । अब बाबा

DO NOT COPY

को एक बच्ची भी हो गयी है । मंतीरी ने चीनीमिल में काम दिलवा दिया । अब फिर वे भैंस का ३ॿस का६ते हैं और चीनीमील में चौकीदारी करते हैं ।

अब वे कभी अजोधा जी नहीं जाते । जायेंगे तो पकदँ जायेंगे । वे अपने ग'रु चाचा को ३र में मिट्टीतेल ध्रिदक कर जला आये हैं । साथ आते वक्त जो क'५ लाया, उससे जमीन खरिदा, ३र बनवाया और एक लदकी भी खरीद ली । चन्दन और गाॿजा नहीं ध्रॅदे हैं । जब एक बार कसकर गाॿजे का दम लगाते हैं तो कहते हैं

"रामराज स'ख सेज विलासा"

अरे हम तो सध'अई से सब क'५ पा लिया । अरे उ बदरिया क्या पाया । एक और वदरीया नाम का ही इनके कारखाने में चौकीदार है । माॿस(म५ली नहीं खाता, कं७ी बाॿधता है, हो६ल में कभी नहीं खाता, चीनीमील में बाब'ओं की पार्टी होती है तो सुरधाम दास के कहने पर नहीं जाता । साधार०ँ गृहस्थ है । कोई बाल(बच्चा नहीं । उसी को सुरधाम दास कहते हैं ।

"अरे उ बदरीया क्या पाया जो हमारे सामने उसकी बदाई करते हो । हमने सध'अई से सब क'५ पा लिया । पहले हम नोकर थे, अब नोकर रखेंगे । खेती बारी खरीद लिया, बाल(बच्चा पा लिया । हमने सध'अई से सब क'५ पा लिया । इ सब अजोधा जी के रामचन्दर जी की किरपा है ।

"रामराज स'ख सेज विलासा "

जब अमिकवा से झगदँ हो गया तो ऐसा लात सरीया के मारे कि वह काॿय से करके बै७ गया, आॿखों में जोन्हीं फ'लाने लगा । वह मंतीरी को गाली दे रहा था । बाबा स'रधाम दास इस तरह की ३६ना होती है, कोई मंतीरी को गाली दे, कोई अपने खून को गाली दे दे तो बर्दास नहीं करते हैं । क'५ देर तो अमिकवा उसी तरह से बै७ रहा । फिर अचानक एक इॿ६ा उ७कर ऐसा मारा कि क्रोध की शक्ति से उसमें दुगुना बल समा गया था ।

७ॅॿय !

बाबा के कपार पर लगा और बाबा जी गश खाकर गिर पदे । गिरते(गिरते हे राम म'ॿह से निकल गया । धनेसर कहने लगे कि स'रधाम दास लेकिन बना लिए थे, अन्तिम समय में हे राम किसी के म'ॿह से नहीं निकलता है । बाबा, और चाहे जो क'५ हो, राम नाम का सत्त जान लिए थे । बाबा को अस्पताल में भर्ती किया गया तो चार ३ं६े में वे होश में आ गये । वे वेहोशी के समय में भी कहते रहे

"राम नाम स'ख सेज विलासा"

जब चार दिन, चार ३ं६े, चार मिन६ और चार सेकेन्द में वे अस्पताल से दीसचारज हो कर आये तो रामभरोसे बात की बात में कह देता था "भूल गये बाबा ! इधर(उधर कीजिएगा तो राम राज स'ख सेज विलासा दिखला देंगे । समझे, नहीं समझे, ओ नदलिया पहाद ।

बाबा चार महीने तक परहमपट्टी लगवाते रहे थे ।

सध'इया की मा¤ १ ओ सध'ईया की मा¤ १ धनेसर कहा¤ गये हैं, ए सध'ईया की मा¤ ? अरे कोई ३र में नहीं है? हम आये हैं, पंद्दित राम लाल ।"

"पाव लागी ने पंदी जी, बैीये न, अरे पर्वतिया दौद कर चद्दी ले आओ, पंदी जी आये हैं ।"

"अरे नहीं नहीं रहने दो सध'ईया की मा¤, ख'श रहो । हम चैनपूर से आये हैं, ३र जाने में देर हो जायेगी । त'म तो जान्ती ही हो, अब उ समय नहीं रहा । रात वि५लहर है, कही गिर(पर जाउ¤गा । इतना पानी महन जी के खेत में है, हेलना पदता है ।"

"मैं कल ही से महाराज जी का रास्ता देख रही हू¤ कि कब आयेंगे । खरिहानी रखा ह'आ है, पू५ लू¤ एकारसी कब है ?"

"हो हो हो ओ हा¤ एकारसी तो कल साध' लोगों के लिए और परसों तोहनी के । लेकिन सध'ईया की मा¤ १ त'म तो खाली एतवार करती थी, इ एकारसी कब से श'रु कर दिया । हम तो नहीं जानते थे, इसीलिए नहीं आये ।"

"उसी कोर पो५'आ के लिए पंदी जी । एतवार को बैउँ दिया अगहन में, दूसरा उउँ भी लिया बैसाख में । अब एकारसी करती हू¤ । एक उसी कोरपों५आ का इ¤जियरी में हो जायेगा तो भगवान की बदी किरपा होगी । सब बेदे लोग प९ लिए, वह नहीं प९गा तो कइसे होगा । सो इसलिए एकारसी करती हू¤, निर्जला एकारसी । …….. महाराज जी आज बदका मो६री लिए हुए हैं ?"

"अरे हा¤ १ कल तो मैं कही गया नहीं । आज वद्दसरा के यहा¤ कथा था । त'म तो जानती ही हो जाना पदँ, लोग कहते हैं जब तक रामलाल पंदी जी साध'बनिया का हाल चाल नहीं स'नायेंगे, तब तक कथा क्या स'नना । अरे वही हींग हरदी, तइपात, मरीच, मसला……….

हो हो हो हे हे हे ही ही ही

"तो यहा¤ भी सतनाराय० भगवान की कथा श'रु है ? पाव लागीने पंदी जी ।" रामभरोसे ह¤सता ह'आ पह'¤च गया ।

"अरे जीय पे६दास १ आव बैे १ चन्दलाल कैसे है ?"

"अरे पंदी जी, जीय खाली क्या कहते हैं ? पे६ लेकर जी रहा हू¤ । अरे कहिए आनन्द रह, ख'श रह ।"

"अरे त'म तो ख'द दूसरे को आनन्द और ख'श रखते हो । त'मको क्या कहना आनन्द रह, ख'श रह ?"

हो हो हो ही ही ही हे हे हे
पंदी जी पंदी जी पाव लागी ने
नन्हीं मो६रिया ले भागीने ।
हो हो हो ही ही ही हे हे हे

बच्चों का एक ज'ल'स उधर से भागते ह'ए निकल गया ।

"हो हो हो अरे देखो, सब एक ५ँ¤६ के बचवन हैं । सब धनेसर, स'केसर,स्वारथ के ३र के हैं, एक ५ा¤६ के ।" पंदी जी भी हो हो कर रहे हैं ।

"अरे पर्वतीया(((पर्वतीया(((अरे पंदी जी का खरिहानी ले आओ, पंदी जी को रात हो रही है । पर्वतीया(((ओ वही बाकस पर रखा ह'आ है । दगरँ में ।" पर्वतिया की मा¤ हा¤क लगाती है ।

"अरे रहने दो जजमान, कल ले जायेंगे । त'म तो जानती हो, जब जवान था तो इसी चैनप'र से दू बोरा धान का मो६री बान्हकर, कान्ह पर ल६काये सबको एकारसी तेरस बतलाते(बतलाते ३र पर जाता था । अब वह समय कहा¤ रहा । चौथापन में चाम भूल गया । ब६ेसरा आज इतना मो६री दे दिया है कि चलती नहीं है ।

"चलती नहीं है तो हम पह'¤चा देंगे पंडी जी" राम भरोसे उनकी मो६री पर हाथ रखता है ।

"अरे त'म क्या पह'¤चाओगे पे६ू दास । त'म्हारा पे६ इस मो६री से कम है क्या ? एक मो६री पे६ में, दूसरा मो६री कान्ह पर लेकर चलेगा ?"

"पंडी जी १ कान्ह पर तो हम आपको भी ले जायेंगे, इ त मो६री है ।"

"ले जाना बे६ा, ले जाना, कान्ह पर म'झे ही ले जाना । भगवान म'झको जल्दी उ७ा ले और त'म म'झको कान्ह पर ले जाओ ।" पंडित रामलाल आ¤खों से आ¤सू पों५ने लगे "जब खून उगलने लगता है तो कहता हू¤, क्या हे भगवान इस बू९ को बचाये ह'ए हो, और इस नौजवान को .... " पंडी जी रामभरोसे के सर पर हाथ फेरते हैं ।

"नहीं पंडी जी भगवान को अब निन्द आ गयी है । वह हमारा नहीं स'नता है । कितना इलाज करके हार गये, ¥ँड दिया कि अब भगवान को निन्द आ गयी है ।"

"क्या करु¤ बे६ँ १ कितना जन्तर ६ँ६का तो हमने भी किया । जो त'मने नहीं कहा वह भी हमने अपने ही मन से किया । परन्त' क'५ नहीं ह'आ , हमारे काबू से बाहर की चीज है ।"

"सबके काबू से बाहर की चीज है पंडी जी १ भगवान अब हमको क'५ करने के लिए जिलाते हैं । अपनी भूदी के लिए जमीन, ३र................"

"राखलजाव पंडी जी १ खरिहानी ।" पर्वतिया बीच में ही आ जाती है ।

"खरिहानी बिना त'म लोग अब नहीं जाने दोगे । त'म्हारी मा¤ जानती है, अरे एक दिन ऐसा था कि कि ग¤ाव भर का खरिहानी एक ही दिन लेकर चल देता था" पंडी जी मो६री में खरिहानी रखते ह'ए बोले "अच्५ा बबी १ आज साग खों६ कर रखी है कि नहीं ? उसको भी ला ।

"पंडित रामलाल रोज पर्वतिया से खो६वा कर गेन्हरी का साग खाते थे । रहिला,गेन्हरी का साग उनको बह'त पसन्द था । स्नेह से पर्वतीया के भाई ट्टँक्दर को वे सध'ईया कहते थे । किसको पता है कि किस प्रभाव से आज ट्टँक्दर सचम'च साध' होने की बात करता है ।

"पर्वतिया के बाबू जी ३र पर नहीं हैं क्या ? अभी तक देखा नहीं ? पंडित जी अब पर्वतिया की मा¤ से पू५ते है ।

"नहीं पंडी जी, उ त अरेराज गये हैं, सलेमपूर पंडित दीनानाथ जी के यहा¤ । कहते थे कि गिरेन्दर कोरपो५आ के लिए पत्रा दिखाउ¤गा । सग'न कि इस बार इंजियरी में होगा कि नहीं । एक जगह और जाने को कहते थे । जहा¤ पर गा¤व वाले गये तो उसने सबका नाम लिखकर दे दिया कि फलाना(फलाना सुखराम काका का गहना चोरा लिए हैं ? सब पंडी जी लोग कहते हैं कि इस बार भी उसका इंजियरी में खरावे योग है ।"

"अरे हा¤ उ त हमने भी पत्रा देखाये थे । अच्५ा ७ीक है सलेमप'र के पंडी जी बह'त अच्९ पंडित हैं, देखलेंगे तो क्या कहते हैं ।" ...."

DO NOT COPY

"अरे पंदित जी, पंदित जी लोग क्या कहेंगे ? चाकरी करते(करते तो गिरेन्दर का गोट खिया गया । इधर धनेसर काका है कि कर्जा लेते हैं , बच्चों को प९ाते हैं, पात्रा दिखाते हैं, मा¤ निर्जला एकारसी करती है, उधर गिरेन्दर चाकरी करते(करते चिन्ता से द'वला गया है । नेता लोग हवाई जहाज से दिल्ली(का७मा०डू किये रहते हैं । उनको क्या मालूम कि इधर एक गरीव के ३र में क्या हो रहा है ? उनको क्या मालूम कि धनेसर काका का खेत करजा में लिखा रहे हैं ? " रामभरोसे ने बदा उद्वीग्न होकर कहा ।

"सो तो हम देख रहे हैं बेध्रा । धनेसर अपना सभी खेत, भाई की दवाई और बचवन कि प९ाई में खर्च कर दिये । ऐसा बाप और ऐसा भाई कि मत पू৩ो । संसार में मिलना म'श्किल ।"

"प्र०ााम पंदी जी । क्या मिलना म'श्किल हो गाया । इतना खरिहानी तो ले जा रहे हैं ।अब क्या मिलना चाहिए?"दाक्ध्र कही से आकर बै७ते ह'ए प्र०ाँम करता है ।

"ख'श रहो बब'आ, ओ नहीं जब आप हैं तो क्या मिलना म'श्किल होगा । धन्य ऐसा भाई कि मिलना म'श्किल । गिरेन्दर के लिए क्या नहीं करता । गिरेन्दर का क'५ खवर आया ? क्या ह'आ इंजियरी का ?"

"नहीं पंदी जी कोई खवर नहीं आया । हम परसो दिल्ली जा रहे हैं, देखिये क्या होता है ।"

"हा¤ १ हा¤ बब'आ दिल्ली त'म्ही जाओ नहीं तो जोग बदँ खराव है, बदा मेहनत लिखा है । और का७मा०डू गये थे तो क्या ह'आ ?"

"का७मा०डू क्या होगा पंदी जी ? च'नाव का चक्कर था तो गोपीनाथ बाबू और भंदारी जी ख'द दरवाजे पर आये कि हम आपके भाई को इन्जिनियरिंग में करा देंगे रुस में, आप हमारी मदद कीजिए । हमको तो विन मा¤गे म'राद मिल गया । परसाल का¤ग्रसवालों ने नहीं किया तो क्या ह'आ, कम्यूनिष्ध् ही कर दे । परन्त' पी৫ गोपीनाथ बाबू ने शिकारिया से छण हजार ३ूस लेकर बै७ गये और अपना बो६ उन्हीं को दिलवा दिया । अब हमारे बो६ से उनको कोई मतलव नहीं था । द्द्छ हजार भंदारी जी भी खा लिए । जब हम भंदारी जी के पास फोन करने जाते तो ये कहते थे कि उनका फोन ही नहीं मिलता, कन्दैक्ध् ही नहीं होता । एक्सचेन्ज आफिस वाले जानबूझकर फोन नहीं मिलाने देते । उनके कम्यूनिष्धों पर नजर रखना है । जब दस दिनों तक फोन नहीं मिला तो मैंने सोचा कि गोपीनाथ बाबू कहा¤ के स्ध्रालिन और लेनिन हो गये कि एक्सचेंज वाले इनको नम्बर नहीं देते हैं । एक दिन मैं ख'द ही गोपीनाथ बाबू के नाम से ६्रंक कौल किया तो भंदारी जी फोन पर मिल गये । बस सारा मामला म'झे समझ में आ गया । मैंने कहा

"मैं गोपीनाथ जी बोल रहा हू¤ । उस लदके का इन्जिनियरिंग का काम... बहुत बार आता है ।"

"अरे अब इन्जिनियरिंग फीन्जिनियरिंग का क्या काम ? वह पचास हजार ले लिया, अपना काम हो गया । अब क्या आपको च'नाव जीतना है । कह दीजिए कि अब सारा सेलेक्सन हो गया । दस दिनों से कोई खवर नहीं आया तो हम क्या करें ?"

"बाप रे बाप १ ऐसा पिकेध्गिबाजी बेध्रा १" पंदित जी ने कहा ।

"हा¤ पंदी जी १ दूसरे दिन मैंने अपने नाम से फोन किया तो उन्होने कहा कि सारे सी६ के सेलेक्सन हो गये दँक्ध्र साहव, अब हम द':खी हैं, क'५ नहीं कर सकते ।"

"द'खी तो हम हैं भंदारी जी । क्या आप एक फोन से गोपीनाथ बाबू को खवर नहीं कर सकते थे । क्या आप नहीं जानते थे कि यह किसी की जिन्दगी का सवाल है ? नेपाल के

DO NOT COPY

एक य'वक के भविष्य का सवाल है ? क्या आपको मालूम नहीं कि च'नाव अभी बीत नहीं गया है ?"

"हमारे लिए तो च'नाव बीत गया ट्टँक्ष्र । अब त'म कही भी बोध्द दो, हम क'ष्ठ नहीं कहेंगे ।"

"लेकिन हमको आपसे बह'त क'ष्ठ कहना है । हम अव का७मा०ड्ढ आ रहे हैं, जरा आपका चेहरा देखना चाहते हैं । कि लेनिन, स्ढालिन और मार्क्स के कितने बड्ढे फौलोवर हैं ? भंड्ढारी जी अगर फोन पर गोली चल सकती तो अभी किसी लेनिन की गोली सीधे आपके म'ह और कानों में उतार देता । क्या आपको मालूम है कि कम्यूनिष्ढों में ऐसी ग'नाहों की सजा सीने में गोली उतार देना है ?............ आप नेपाल का कम्यूनिष्ढ बने हैं ?"

पंड्ढी जी इसके बाद मैं का७मा०ड्ढ गया, उस भाई के साथ जिसके भविष्य के साथ इस देश के सारे राजनेताओं ने मजाक किया है ।

"का७मा०ड्ढ जाकर क्या ह'आ बेढ्ढा ?"

"होगा क्या पंड्ढी जी, मैं तो उनका चेहरा देखने गया था । परन्त' वेशर्मो को शरम कहाँ है ? बै७कखाने में ब'लाया, चाय पीने के लिये भी नहीं पूछा । बड्ढे(बड्ढे नेता किसी को इस शिष्ढँचार का परिचय नहीं देते । उनका बेढ्ढा, बैठा था, वे एक दूसरे आदमी को ब'ला लाये थे । "

"देखिये १ पूछिये इनसे की सारा सीढ्ढ भर गया है कि नहीं ? अब आगे साल........."

"आगे साल की बात छोड्ढिये भंड्ढारी जी, हम तो इस साल"

"इस साल तो नहीं हो सकता । और हाँ आपके भाई का तो नम्बर कम है । यहाँ तो ठछ५ (डण५ वाले भरे पड्ढे है ।" दूसरे ब्यक्ति जो उनके साथ था बोला ।

"ठछ५ (डण५ कभी जीवन में देखा है आपने ? क्या आपने कभी लाया है ? क्या आपको मालूम है कि ठछ५ (डण५ मार्क्स को ड्डिस्ढिंकसन कहते हैं ? कभी स'ना है ड्डिस्ढिंकसन क्या होता है ? हिन्दूस्तान में विरले ही कोई लाता है । आपको नेपाल में सब लोग ठछ५ (डण५ वाले भरे पड्ढे हैं । लगता है नेपाल के सभी लोग न्यूढ्ढन आइस्ढिन के नाती हो गये हैं ।" मैंने पलढ्ढ कर उन पर वार किया, क्योंकि मैं उनलोगों के साथ यही करने गया ही था ।

"आप तो ऐसी बात करते हैं जैसे इनलोगों के हाथ में है । मैं भंड्ढारी जी का बड्ढँ लड्ढका हूँ वे म'झे क्या नहीं करा देते ?" भंड्ढँरी जी के लड्ढके ने कहाँ ।

"फिर हाथ में मत बोलिए । रही बात आपको कराने की तो वे आपको करा देंगे तो फिर हमारा काम कौन करायेगा ? भंड्ढँरी जी कौन बनेगा ? आप यहाँ पर बै७ कर भंड्ढँरी जी से कम हैं क्या ? आप.........

"अच्छा छोड्ढिये, चलिए, आज मैं आपको रुस के राजदूत से मिलवाउँगा । कही वही आपका काम कर दे । पाँच बजे आ जाइएगा ।" भंड्ढारी जी ने बीच में ही ढोक दिया ।

मैं सोचता रह गया कि रुस के राजदूत से क्या मिलना है । वे लोग क्या हमारी बात स'नेंगे ?उनलोगों के आँख और कान तो आप हैं । फिर भी मन में क'ष्ठ सोचकर, क'ष्ठ ७ँनकर पाँच बजे सांस्कृतिक केन्द्र में गया । देखा एक पतले गोरे, म'स्क'राते ह'ए राजदूत को, रुस के राजदूत को जिसे ये लोग किस तरह ७ग रहे थे । रुस के टण वे राष्ढ्रिय दिवस पर वे बोल रहे थे ।

त'रन(त'रुन तीन त'रिये, लेनिनग्राद तीन त'रिये, तुरुन(त'रुन, उनके पतले होठें से फूलझड्ढी ष्ठ'ढ्ढ रही थी, मिठास का बून्नी बरस रहा था । बीच में ही रोक कर भंड्ढँरी जी ने उनको मेरा परिचय कराया मानों उन्होंने एक और कम्यूनिष्ढ को खोजकर उनसे मिलाया है ।

DO NOT COPY

DO NOT COPY

“यह है टँक्दर नरेन्द्र देव, वीरगंज में रहते हैं । हमारे सि४ान्तों का खूव प्रचार करते हैं । इनकी बस ५’६ रही है अब ये जाना चाहते हैं ।

त’रुन त’रुन त’रिये .....

एक दूभाषिये ने उनको राजदूत को उनके प्रचार के बारे में बतलाया ।

त’रुन त’रुन त’रिये .....

राजदूत साहव ने म’भ्फसे हाथ मिलाते ह’ए अमृत उद्देल दिया त’रुन त’रुन त’रिये .....

दूभाषिये ने बतलाया कि आपका अभिबादन करता हू¤, मैं आपकी सेवा में क्या कर सकता हू¤ । म’भ्फे ख’शी है आप उस जगह के हैं जहा¤ पर हमारा वीरगंज चीनी कारखाना और कृषि औजार कारखाना बना है । हम आपकी सेवा करने में हमेंशा तत्पर हैं ।

त’रुन त’रुन त’रिये .....

अच्५ा जैसे भंदारी जी ने बतलाया, अगर आपको ले६ हो रहा है तो हम आपका श’भयात्रा के साथ विदा करते हैं । अपने लोगों को हमारे रुसका संदेश कहीयेगा ।...”

स’नकर मेरे आ¤खों में आ¤सू ५ल५ला आये । राजदूत से हाथ मिलाया और वापस चला आया, कमरे से बाहर निकल आया, यह सोचते ह’ए कि भंदारी जी मेरा काम ह’आ अथवा नहीं लेकिन आपने अपना काम निकाल ही लिया । इसीलिए सोचता था कि इतने भ्फगदे के बावजूद भी आप म’भ्फे राजदूत से क्यों मिलवाने ले जा रहे हैं । .... मेरा ग’स्सा का जवाव तो असल में आप ही ने दिया । सोचा था कि राजदूत से इसी अवसर पर क’५ बातें कर लू¤गा परन्त’ आपने कहा कि बह’त जल्दी है, बस ५’६ रही है । कमाल है, जोदँ नहीं है । आखिर आप देश के इतने बदे आदमी जो हैं ।

“और वह जो का७मा०दू में परीक्षा दिया था ? ”पंदित रामलाल ने इस सवाल को भी पू५ ही दँला ।

“परीक्षा दिया था ?” याद करते ह’ए टँक्दर ने कहा “ओ हा¤ वह परीक्षँ, रु९की वाला ? अरे पंदी जी वह परीक्षँ तो वैसे ही दे दिया, उसमें तो पहले ही उसको आशा नहीं थी कि होगा । यो ही बै७ गया । सबसे पहले तो परीक्षँ देने की अन’मति मा¤गी मंतीरी से तो मंतीरी ने साफ इन्कार कर   दिया । वे उसको हेँ्दँ के फरेस्६र में नाम लिखा लेने को कहते रहे थे । परन्त’ गिरेन्दर यह कह कर का७मा०दू से वापस चला आया कि मैं प९ू¤गा या नहीं पर अब से उनके यहा¤ नहीं जाउ¤गा । फिर जब रु९की की परीक्षा आयी तो जाकर परीक्षँ दे आया । पास भी हो गया, पर मौखिक में उसकी ५¤६नी हो गयी । पचास लदकों में से सिर्फ दो मधेसिया लदके को रु९की में भेजा गया, इसीलिए कि कहने को मिल जाय कि हम योग्य मधेसिया लदकों को भी भेजा । पंदी जी यह तो हिन्दूस्तान के राजदूतावास की किरपा है कि मैं अथवा मेरे जैसे लदके टँक्दरी प९ लिए सफलतापूर्वक नहीं तो हम लोग नेपाल के आइस्६न,न्यू६न लोगों के सामने क’५ थोदे ही हैं । हम तो ७हरे हिन्दूस्तान का प९ँ ह’आ, पचहत्तर(अस्सी सैकदे नम्बर तो आता नहीं, उपर से सैकदे दस नम्बर का६ लिया जाता है । अतः पंदी जी वहा¤ तो हमलोगों को कोई आशा ही नहीं थी । दरवार के दरवारियों से ही वहा¤ फ’रसत नहीं है । मंत्री के कितने लदके(लदकिया¤ ब९ गये हैं वह तो आप जानते ही हैं । जब कभी पंचभेला होता है तो देखिये जाकर । लगता है नेपाल में सभी लोग भूतपूर्व मंत्री रह च’के हैं । भूतपूर्व गोरखा मले६री जैसे । इन भूतपूर्वों के बीच में हमारे गिरेन्दर का काम हो जायेगा तो जानते हैं यह नेपाल का सबसे अभूतपूर्व कार्य होगा । सो हमने आशा ўँद दी थी । एक दिन गोरखापत्र में मात्र चार सी६ देख कर हमलोग गये भी तो पता चला कि समाचार तो

सेलेक्सन हो जाने के बाद निकलता था । हम लोग मनमार कर चले आये । वह तो रु९की में सभी लदकों के चले जाने के बाद चार आदमियों के लिए स्पेसल आदर जारी किया गया था । अतः हमलोग लौ६ गये । अब परसो दिल्ली जा रहा हू¤ ।"

"अच्५ा बब'आ, अब दिल्ली जाओ, भगवान जो करना होगा, करेगा । जोग तो बदँ खराव है । बदी मेंहनत लिखा है ।

दँक्दर दो महीने की ५'ट्टी लेकर दिल्ली गया । करजा ग()श से लिया । और पैसे अमरेन्द्र बाबू और गिरेन्दर को वह भेज च'का था । दिल्ली पह'¤चते ही अमरेन्दर बाबू उवल पदे :(

"आप क्या करने लिल्ली चले आये जब कि मैं यहा¤ काम कर ही रहा हू¤ ? अगर आपका कोई एम.पी. है तो सोर्स लगाईए " उनको दँक्दर पर सन्देह हो गया कि शायद दँक्दर हम पर अविश्वास करके आया है, किसी दूसरे से भी काम करा रहा है । "हम तो इससे अधिक क'५ नहीं कर सकते । हमारे हाथ में नहीं है, हम भी किसी से करवाते ही है । हम कल जा रहे हैं, इतने दिन देश से बाहर रहना क्या ीक है ? लोग कहेंगे कि दिल्ली में बै७ हैं । गिरेन्दर का इतना कम नम्बर है । हमारे हाथ में तो क'५ नहीं है ?"

"हाथ में, हाथ में आपके इतना है कि अपने भतीजा को छ्ण५ से कम नम्बर पर ही भर्ती करवा दिया । परन्त' जब कालेज ने वापस लौ६ा दिया तो आपको पता चला कि छ्ण५ से कम नम्बरवालों का भर्ती नहीं लेना,इनदियन मेदिकल काउन्सिल में है । हाथ में तो आप लोगों के इतना है कि घछ्५ नम्बर वाले त्रिभ'ज सिंह का बेद्द, हमारे साथ मेंदिकल में प९ता था । ज्ञछ बरस में दँक्दर वनकर निकला । हाथ में तो इतना है कि संजीव जो नेपाल का नागरिक नहीं है, वहा¤ का नागरिकता लेकर दँक्दरी प९ता है । हाथ में तो इतना है कि माधो बाबू का सारा परिवार दँक्दरी प९ गया और रोते हैं कि नेपाली का¤गेस में रह कर बरबाद हो गये । अरे बर्बाद आपलोग नहीं हो गये हम जनता हो गयी । हाथ में, हाथ में तो इतना है कि का७मा०दू और दिल्ली हवाई जहा¤ज से एक किये रहते हैं और हम गरीब कर्जा लेकर यहा पह'¤चते हैं तो आपको अविश्वास हो गया कि हम आप पर विश्वास नहीं कर रहे हैं । हाथ में तो इतना है कि कोई दृण रुपये पैके६ का सिगरे६ पिता है तो कोई भा६(टढ का बोतल तोदता है । हाथ में तो इतना है कि आप लोग ख२र पहन कर पंचसितारा हो६ल में रुकते हैं और आपके सामने शराव, सिगरे६ और स'न्दरिया¤ पेश होती हैं । .... आप लोग कहते हैं कि हाथ में क्या है ? सारे देश की तो नहीं, राज्य और प्रशासन की तो नहीं पर हमारे जैसी गरीव जनता की नकेल आपलोगों के हाथ में है । हम बेवक'फ हैं नेता जी कि हमने आप पर इतना भरोसा किया । मेरा मोहभंग हो गया है । आप जाने का ६िक६ ले च'के हैं, क्या ि७काना इस बार भी मेरे भाई का सेलेक्सन होगा कि नहीं ।....... अगर हाथ में नहीं तो च'नाव प्रचार के लिए आपने क्यों मा¤गा था ? अगर हाथ में नहीं था तो क्यों गारं६ी दी थी कि मैं गारन्६ी के साथ उसका एदमीसन करवाउ¤गा ? अगर हाथ में नहीं था तो क्यों दूसरी बार भी आपने यही प्रक्रिया द'हराई और मैं क्यों मान गया ? अगर हाथ में नहीं था तो क्यों दो वर्षो तक उसे बिना पैसे का अपना नौकर बनाये रखा ? अगर हाथ में नहीं था तो क्यों आपने हमें उल्लू बनाया ? हम उल्लू बन गये, हाथ में...... अगर मेरे हाथ में होता तो अभी इस वक्त आपकी गर्दन मरोद देता ।" यह सब क'५ सोच दला दँक्दर लेकिन ज'वान से क'५ भी नहीं बोला, च'प रह गया । बोला

"अच्५ा नेता जी, मैं आपको कैसे विश्वास दिला सकता हू¤ कि मैं किसी और का सोर्स लेकर नहीं आया हू¤ ? मैंने प६ना में आपसे कहा था कि पैसा ३६ जायेगा तो फिर

DO NOT COPY

भिजवा दूँगा । मेरा मन माना नहीं, चला आया । आया तो देखा गिरेन्दर को मलेरिया हो गया है । दवाई दी तो ठीक ह'आ है ।"

परन्त' नेता जी चले आये । उनको उनका किसी दोस्त ने फोन किया था कि का७मा०द्द ३ूमा लायें । इनके ३ूमने के साथ(साथ गिरेन्दर का भविष्य ३ूमता है । धनेसर पंचाग दिखलाते हैं तो पंदी जी कहते हैं कि गिरेन्दर का ग्रह ३ूमता है ।

जाते समय नेता जी किसी एक एम.पी साहव के पास खयाल रखने के लिए एक चिट्ठी लिख दिए ।

अब एम.पी. साहव के पास चिट्ठी लेकर दोनों भाई ३ूमते हैं । एम.पी. साहव कहाँ से ३ूमते ह'ए यहाँ पर चले आये हैं, यह बात दँक्६र के दिमाग में ३ूमती है । लगता है किसी ने गलती से इनको एम.पी. बना दिया है, नहीं तो इनको किसी भट्ठी के अगल(बगल में ३ूमना चाहिए । हमेंशा बेहोश, खोये से दिखलाई पदते हैं । जिस दिन लोक दल ६ूं६ गया उस दिन इनको अस्पताल में भर्ती होना पदँ । जब दँक्६र गया तो दरवाजे पर से वापस लौ६ा दिया गया, उनकी बीबी ने पान की गिलौरी दवाते ह'ए पीक से करके बोला था । दँक्६र के क'५ अहं को ठेस लगी, क'५ द'खी ह'आ और क'५ भाव'कता में वह गया । उसी समय वह अपने एक दूसरे मित्र के पास पत्र ९ँदा और वहाँ से जल्दी से एक तीसरे मित्र के पास पह'ँचना चहा । पत्र यों था ।

"परम आदर०ँयि बगावत बाबू

सादर प्र०ँम ।

मैं आपकी क'शलता के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ । मैं इसलिए यह पत्र आपके पास लिख रहा हूँ कि आप नेपाल के एक सांसद ही नहीं, हमारा खून और हमारी कौम भी है । मैं इसलिए यह पत्र आपके पास लिख रहा हूँ कि आपने संक६ के उस समय में म'भ्के उवारा है । जब मेरा भविष्य अन्धेरा हो गया था । मैं इसीलिए यह पत्र आपके पास लिख रहा हूँ कि मैं उस ऐहसान के बदले कभी आपसे ग३ारी नहीं की और मैं जीवन भर उसका बदला च'काता रहूँगा । मैं अपने प्रति आपके उसी स्नेह का वास्ता देकर कह रहा हूँ कि मेरी विक६ आर्थिक परिस्थिति में आपलोग मेरे भाई का इंजिनियरिंग में आरक्ष०ँ करवा दें । इस तरह अपनी जमीन से बेदखल किसान का बे६ँ इंजिनियर तो हो जायेगा । मैं इसलिए यह पत्र आपके पास लिख रहा हूँ कि मैं इस तरह किसी दूसरे के पास नहीं लिख सकता ।

नहीं तो मेरा भाई कहता है कि अगर इस बार मेरा नहीं ह'आ तो वह दिल्ली से वापस नहीं आयेगा, कही भी चला जाउँगा।क्या मुह लेकर मैं उस गाँव में जाउँगा? जहाँ पर हम उसके लिए इतना कु५ करते हैं जिन्होंने मेरे लिए क'५ भी नहीं किया । दो बर्षो तक मैंने नेता जी की सेवा में कोई कसर नहीं उ७ँयी है । दो बर्षो तक मैंने आगे की प९ँई भी बन्द कर रखी थी नहीं तो अभी तक मैं बी.एस.सी. कर च'का होता । अपनी महात्वाकां५ा की अपार लालच में दो वर्षो तक उनकी सेवा करता रहा कि किसी दिन तो ग'रु की कृपा होगी । अगर यही नहीं ह'आ तो मैं कही भी क्या म'ँह लेकर जाउँगा ?

मैं इसलिए यह पत्र आपके पास लिख रहा हूँ कि नेपाल का, आपके देश का ही नहीं आपके खून और आपकी कौम का भी, एक ब'४जीवी परिवार जो अभी तक एक फूस के ३र में अपना दम चला रहा है कही ६ू६ नहीं जाय, कही विखर नहीं जाय, कही उसकी मौत नहीं हो जाय । मैं इसलिए यह पत्र आपके पास लिख रहा हूँ कि जीवन के किसी मोद पर मैं भी आपके काम आ जाउँ । मैं इसलिए यह पत्र आपके पास लिख रहा हूँ कि अगर मैंने

DO NOT COPY

अपने बच्चों के लिए क'ष्ट नहीं किया तो बह'त जल्दी हमारे बच्चे सडकों पर भीख माँगते ह'ए नजर आयेंगे ।

नेता जी दिल्ली से वापस चले गये हैं, उसी आदमी को परसाल भी काम सौंपा गया था । हम उनके यहा जाते हैं । वे कभी विमारी का बहाना करते हैं, कभी दो दिन के बाद आने के लिए कहते हैं । हम दरवाजे पर रहते हैं, वे भीतर से ही खवर भिजवा देते हैं । हम वापस चले आते हैं यह सोचते ह'ए कि क्या हम इतने नीचे गिर गये हैं कि दरवाजे पर से ही हमको विलविला दिया जाता है कि भीख नहीं है, वापस लौट जाओ ।

इसके वास्ते अमरेन्द्र बाबू को और आपको दिल्ली आने के सिवा दूसरा कोई रास्ता नहीं है । क्या मैं आशा करुँ कि इस बार हम निराश नहीं होंगे ? भादो बीत गया, बारीस नहीं ह'ई । लोगों से कर्जा लेकर दिल्ली का खर्चा ९ँ रहा हूँ जिसका दिल्ली में कोई महत्व नहीं है । हम उसी खर्चे के बगैर ३र में भूखों मर रहे हैं । अगर मैं सिर्फ गिरेन्दर के बास्ते लिए गये कर्जों को च'काउँ तो उनको च'काने में दो वर्ष लग जायेंगे । क्या ऐसी परिस्थितियों में मेरे भाई का काम नहीं होगा ? क्या ऐसी परिस्थितियों में उसका आरक्ष॑ँ नहीं हो सकता ? क्या हम इस बार भी निराश ही रह जायेंगे ?

आपका
अपना ही

इस तरह पत्र ⁄ोड कर वह दिल्ली ⁄ोड दिया । स्टेसन तक पह'ँचाने गिरेन्दर आया । ट्रेन ख'लने पर देखा कि गिरेन्दर रो रहा है । उसका कलेजा दो टूक हो गया । आज मेरा भाई रो रहा है । जिसकी आँखों में कभी मैंने आँसू नहीं

॥॥देखे वही भाई आज रो रहा है । ट्रेन चली जा रही है और देखा उसका भाई फूट(फूट कर रोने लगा है ।

रेलगाडी पर ही डँक्टर को एक चेहरा याद आया । उस चेहरे को उसने तीन महीने शर॑ँ दी थी । जब मोगलान की प'लिस उसको खोज रही थी, और नेपाल की प'लिस की मीलीभगत हो रही थी, डँक्टर ने जान पर खेल कर तीन महीने तक उसे अपने यहा रखा था । प्रचार कर दिया कि अगर कोई भी मेरे ३र पर आकर क'ष्ट किया तो गोली से उडा दूँगा । श्यामनाथ मामा, यही है उसका नाम, पर सब लोग मामा कहते हैं । चारों ओर वह मामा के नाम से ही प्रसि४ है । मोतीहारी के जानपूल चौक का दादा । मजाल नहीं जो कोई चूँ से बोल दे । मारवाडीयों से पैसा झपट कर खाना वह अपना धर्म समझता है । रोगियों, गरिवों की सहायता करना उसका कर्तव्य है, च'नावों में बुथ कैप्चर करना उसका पेशा है । जिस विधायक की ओर वह है मोतीहारी का एक भी बोट दूसरे में नहीं पडेगा । परन्त' इन सबसे अनभि१ डँक्टर ने उसे तीन महीने शर॑ँ दिया, सिर्फ शर॑ँगत की रक्षा के लिए । शर॑ँगत कौन है, क्या है क'ष्ट नहीं मालूम । बस मैं इतना ही जानता हूँ कि वह भी एक इन्सान ही होगा । प'लिस उसके पी⁄े पडी है, तब तो वह खराव आदमी हो ही नहीं सकता, यह डँक्टर का अन'भव था । डँक्टर रास्ते में मोतीहारी में ही उतर गया, रात गहरा गई थी ।

"मामा १ मामा १ मामा १"

"कौन है वे ? इतनी रात गये मामा मामा, मामा बहू कौन है वे ? त'मको मालूम नहीं कि मामा इस समय स'त जाता है ? ऐ १ विस'वा इसको गर्दनियाँ देकर सडकर पर पह'ँचा आओ ।"

"मामा १ मैं हूँ डँक्टर नरेन्द्र देव"

"ऐं १ डँक्टर साहव १ इतनी रात को ?"

पलक झपकते ही दरवाजा ख'ल गया और मामा ट्टक्क्र के पैरों पर ।

"अरे मामा ९ क्या कर रहे हैं आप ?"

"अरे ट्टक्क्र साहव ९ हम मामा हैं सबके लेकिन आप हमारे भी मामा हैं । क्या सब क'५ भूल जाउ¤गा मैं ? क्या बात है इतनी रात को ?...?"

"हा¤ मामा ९ आपने कहा था किसी समय में हमको याद करियेगा, अगर मैं आपके काम आ सकू¤ । आज याद करने आया हू¤ । दिल्ली से वापस लौ६ा हू¤ ।"

"दिल्ली से ? क्यों ? क्या बात है ? दिल्ली में कोई काम ? गिरेन्दर का ह'आ कि नहीं ?"

"हा¤ मामा ९ गिरेन्दर का लगता है इस बार भी नहीं होगा । मैं अब आपके पास आया हू¤ । क'५ करीये ।"

"तो मैंनें परसाल भी कहा था लेकिन आपको विश्वास नहीं ह'आ । म'झे पहले उस नेता का पता दीजिए जो हमारे गिरेन्दर भाई का जीवन बर्बाद कर दिया । एक बार मामा का हाथ पड़ेगा तो सिट्टी पिट्टी ग'म हो जायेगी । अरे इन नेता लोगों को हम जानते नहीं हैं ? हमारे सामने आकर हाथ जोड़ते हैं बो६ में । मैं कहता हू¤ कि पा¤व पर पड़ो तो काम होगा । जब वे पा¤व पर पड़ते हैं, तब काम करता हू¤,बुथ कैप्चर करता हू¤ । वे जब तक पा¤व पर नहीं पड़ते तब तक मैं किसी का बूथ कैप्चर नहीं करता । यह हमारे पेशे का असूल है । ये नेता हरामी का पिल्ला...........

"नहीं मामा" ट्टक्क्र बीच में ही उनको ðँक दिया । उसे लगा कि संसार का सबसे भला आदमी अगर कोई है तो वह मामा के रुप में उसके सामने खड़ा है । मामा उसे हाथ पकड़ कर भीतर ले गया और बिठँया । लो६ा में पानी लाकर हाथ पा¤व धोने को दिया । च६प६ उसी समय खाना बनाने का ह'क्म दिया औरतों को । शरणँगत की रक्षा करने का सारा मोल मिल च'का ट्टक्क्र को ।

"नहीं मामा ९ अब नाम पता पू५कर क्या होगा । अब समय नहीं है । पा¤च दिन में काम हो जायेगा । जल्दी करीये ।"

"तो इसमें क्या है, कल ही हम दिल्ली जाते हैं । दामोदर पा०डे से रे तो करके काम करवा आते हैं ।"

वे दामोदर पा०डे के यहा¤ गये । लेकिन तब तक काम हो च'का था । वे वापस लौ६ आये । गिरेन्द्र वापस नहीं आया । बह'त दिनों के बाद एक दैनिक में उसका फो६ो ५पा था । ट्टक्क्र अपनी आ¤स'ओं से उस फो६ो का शिनाख्त कर रहा था । निर्जलाब्रत करती ह'ई उसकी मा¤ और सलेमप'र गये उसके पिता जी के बारे में क्या कहा जाय ?

ज्ञठ

"ट्टक्क्र लगता है हमको कै होगा । हमको ले चलो होस्पी६ल में भरती कर दो, हमारा नदीं खसखासा रही है । द'रगन्ध आ रहा है । जहा¤ भी ऐसा होता है हम बूझ जाते हैं कि अब कै होगा ।"

"चलो जब तक मैं हू¤ तब तक त'म चिन्ता मत करना । इसी तरह अपनी विमारी के बारे में सावधान रहोगे तो क'५ नहीं होगा ।"

रामभरोसे ह¤सता है । ƨँक्ϊर उसकी आ¤खों में आ¤खें मिला पाने में असमर्थ है । अन्दर का सत्य जो ह¤सी बनकर उसके चेहरे पर आता है, मानों कह रहा है कि ƨँक्ϊर त'म कितने भोले हो । रामभरोसे जब से वैलोर से लौϊकर आया है तब से मन ही मन ϊϊ च'का है । इसलिए ƨँक्ϊर की स'रक्षा में वह अपने आप को क'५ दिन ३सिϊ लेना चाहता है । यह खरिद दिया, वह खरिद दिया । अपनी भूϊी के लिए दस कट्ठा जमीन तो खरिद दिया, अब एक ३र बनवा देना चाहता हू¤ ।

आज कल वह रोज रिक्सा पर ƨँक्ϊर के साथ(साथ ही वीरगंज काम पर जाता है । ƨँक्ϊर अस्पताल में ,वह श्रीप'र उतर कर अपने काम पर चला जाता । रिक्सा पर बै७ ही उसने कहा

"ƨँक्ϊर दस वर्षों से मेंरी विमारी है, तभी से लेगों ने म'झे बताया है कि बेलवर इसका आपरेशन होता है । दस हजार रुपये लगेंगे ।

"लेकिन त'म ऐसे ही क्यों लौϊ आया ? आपरेशन क्यों नहीं कराया । त'म भी किनने बेवक'फ हो अरे आपरेशन करा लेता तो कम से कम खून तो नहीं उगलता , ज्ञण(ज्ञछ वरस मजे से कϊ जाते ।"

"ƨँक्ϊर १ यह दस हजार रुपये मेरे पास दस वरस में ह'ए । वह भी मंतीरी की किरपा से । जब वेलवर गया तो ƨँक्ϊर ने जो क'५ कहा उससे मैं अपरेशन नहीं कराने का ही निश्चय कर लिया । अब त'म म'झे बेवक'फ कहो अथवा जो क'५ भी कहो । ƨँक्ϊर कहता था, परोϊीन नहीं खाना होगा, मैंने कहा कि मैं पाउरोϊी तो रोज खाता हू¤ । एक बार तो ƨक्ϊर भी ह¤स दिया, फिर एक ऐसी सूची बतलाई कि मेरा माथा चक्कर खा गया । शायद हमलोगों को जो क'५ भी मिलता है, उसमें से क'५ भी नहीं खाना होगा । ƨँक्ϊर त'म तो जानते ही हो रोज नून भात खाकर, पैदल काम पर जाता हू¤ । फलों का रस और उस फेहरिस्त का सामान कहा¤ से लाउ¤गा ? इन्जिनियर मेरे दयाल' थे । जब मैं जाता तो पसीज जाते थे और म'झे च'प(चाप बै७ रहने के लिए कहते थे । ϊ्रक्ϊर का ƨराइवर, मैं ϊ्रक्ϊर कैसे चला सकता हू¤ । कभी मन होता तो एक गिलास पानी मा¤ग लेते थे, या कोको कोला मा¤ग लेते । नहीं ऐसे ही बै७(बै७ म'झे तनख्वाह खिलाये । जब(जब खून कै करके मैं अस्पताल में भरती होता था, वे जरुर हमारे पास आते थे । विना मा¤गे ह'ए पैसा दे जाते थे, खून का बन्दोवस्त कर जाते थे । जब तक ७ीक नहीं होता, तब तक वे रोज आते, फोन पर ƨँक्ϊरों से बातें करते थे । सच पू५ो ƨँक्ϊर १ मेरे लिए देवता थे । जब से उनका सरुवा हो गया है तब से म'झे ऐसा लगता है कि अब अन्तिम ३ƨी आ रही है । यह कैसे काम कर सकता है । इसको हϊँना होगा । प'राने इन्जिनियर साहव को हϊँकर यह आया है । अब उस इन्जिनियर साहव के जितने भी हमदर्द कर्मचारी हैं, उनको भी हϊँना चाहता है, आते ही म'झे ϊ्रक्ϊर चलाने को कहा । उसी दिन म'झे खून का कै ह'आ । अस्पताल में भर्ती ह'आ तो वह आया भी नहीं, पू५ा भी नहीं । प'राने इन्जिनियर साहव चले गये, लेकिन तब तक त'म ƨँक्ϊरी प९कर चले आये ।यही आशा थी । पर त'म्हारा भी सरुवा हो गया है। अफिस में तो काम करना ही पƨता है । ϊ्रक्ϊर का चलाना मेरा शरिर कैसे बरदास करेगा ?……… अच्५ँ ƨाक्ϊर एक बात बतलाओ, सचम'च यह रोग दारु पीने से होता है ?"

"हा¤ दारु पीने से भी होता है, लेकिन……."

DO NOT COPY

"इसी को कहत हैं कि कलवार का लड़का भूख से मरे तो भी लोग कहेगा कि दारु पी लिया है । मैं जहाँ भी गया सब म'झे यही कहते थे कि क्या त'म दारु पीते हो ? दारु पीने से यह रोग होता है । लगता है त'म बह'त दारु पी लिया है । मैं जहाँ भी गया सब म'झे यही कहते थे कि क्या त'म दारु पीया है । मैंने क्या कहूँ, एकबार तो झल्लाकर मैंने कह दिया कि अगर पूर्व जनम के दारु पीने से यह रोग होता है तो मैंने दारु पीया है । मैं पूर्व जनम का दरुआ हूँ ।तो डँक्टर च'प हो गया ।"

"तो त'मने अपरेशन इसलिए नहीं कराया कि डँक्टर ने त'म्हे दरुआ कह दिया ?"

"नहीं १ डँक्टर ने कहा कि बह'त सम्भावना है कि त'म टेब'ल पर ही पर जाओगे । रोग बह'त प'राना हो गया है ।"

"नहीं डँक्टर ऐसा नहीं कहा होगा । उसने कहा होगा कि हो सकता है कि त'म टेब'ल पर ही.........."

"हो सकता है नहीं डँक्टर १ वह तो सबको कहा जाता है । इसी हो सकता है के लिए तो रोगी के गार्डियन का सही कराया जाता है । मैंने भी सही कर दिया था । परन्त' डँक्टर ने हो सकता है नहीं कहा, कहा बह'त संभावना है ।.......... अपरेशन का दिन आया, वेमारी का अपरेशन श'रु होनेवाला था । म'झे कभी गाँव याद आता था, कभी त'म याद आते और सबसे बढ़कर मेंरी भुदी याद आती । म'झे कोई बाल(बच्चा भी नहीं है । डँक्टर कहता है सिरोसिस ने एसपरम फरमेंसन में भी बाधा डँल दिया है । अगर मैं मर जाउँगा तो भूदी रोते रोते मर जायेगी । हरेन्दर भाई रोक रहे थे । लेकिन मैंने अपरेशन का पोशाक उतार कर फेंक दिया और अपना कपड़ा लगाकर वहाँ से चम्पत हो गया । दो हजार खर्च हो गया था । जो बचा उससे सीधे आकर भूदी के लिए दस कट्ठा जमीन खरिद लिया । मंतीरी विगड़ होगा, पैसा लिया इलाज करने के लिए और मैंने जग्गा खरिद लिया । डँक्टर १ मंतीरी यही न कहता होगा कि मैं कितना बैमान हूँ । जब गाँव आया तो म'झसे बोलते नहीं थे । अच्छा कोई नहीं बोलेगा तो मैं क्या करुँगा । एक दिन तो मैं ख'द ही किसी से नहीं बोलूँगा । त'म सब चाहोगे म'झसे बोलने के लिए और मैं च'प(चाप सोया रहूँगा(पचाठी पर । देखना मैं भी उनको बोट नहीं दूँगा, एक बोट कम हो जायेगा उनका ।

"अच्छा(अच्छा रहने दो, बस" डँक्टर ने रुमाल से आँखों के कोर पोंछ लिए ।

डँक्टर ने उसे अस्पताल में भरती करके दो दिनों के बाद छ'ट्टी दे दिया । आज कल जब भी ऐसा होता है, लक्षँण देखकर डँक्टर उसे चटपट अस्पताल में भर्ती कर देता है ।

एक वर्ष बाद

"भूदी १ भूदी १ देखो मैं कितना ठीक हो गया हूँ । हींग(जवाइन खाकर मैं विल्क'ल ठीक हो गया हूँ । कितना ग'ण है हींग(जवाइन में ? बेलवर का डँक्टर कहता था कि ठीक नहीं होंगे । हूँ १ भारत का सबसे बड़ा डँक्टर बनकर बैठे हैं ।"

"अच्छा रहने दो, बह'त ठीक हो गये हैं । जामा निकाल लेते है तो लगता है, म'रगी हैं ।"

"सीक जैसा हाथ गोड़, ढँलक जैसा पेट"

उसने आज पति से च'हल की । भूदी को लगता था कि उसके पति ठीक हो च'के हैं । जो काम डँक्टर नहीं कर सका, वह काम हिंग(जावाइन ने कर दिया । खरभूसिया दवाइयों में अभी भी कितना ग'ण है । परन्त' रामभरोसे जब तक चार गोली लैसिक्स का नहीं खाता तब तक पेशाब ही नहीं होता ।.....................

DO NOT COPY

“टँक्टर १ मैं जब भी कहता हू¤ त’म ٤ँल जाते हो । क्या त’म मेरे द’श्मन हो गये हो ? दो ७े प’र्जी बना दो, मैं संचयकोष से पैसा निकालने का७मा०ड़ू जाउ¤गा ।” रामभरोसे ने नाराज होकर कहा ।

“हा¤ १ मैं आपका द’श्मन ही तो हो गया हू¤ । का७मा०ड़ू हिमालय पर है । हिमालय पर क्या स्वर्गारोह०ँ करने जाइएगा । जानते नहीं हैं बस पर कितना एक्जरसन होता है ? ऐसे ही आदमी को कै होने लगता है । आप का७मा०ड़ू नहीं जा सकते हैं ।” टँक्टर ने हिदायत दी ।

“वैसे सरगारोह०ँ का भाग कहा¤ है भाई , कलिय’ग में । वे पा०डव लोग ही कर सकते थे, किसन जी के परताप से । हमा पर तो त’म्हारा भी परताप नहीं है । कहते हैं भूदी के लिए दस कठ्ठा जमीन खरिद दिया, अब उसके लिए एक ३र भी बनवा दू¤, तो त’म मानते ही नहीं । प’र्जी भी नहीं बनाते हो । सब कोई आजकल बदल गया है ।”अब रामभरोस रु७ गया ।

“तो लीजिए यह सरग की प’कर्जी ” टँक्टर ने उसे प’र्जी बनाकर दे दिया । “आप जिसके लिए इतना मर मि٤ते हैं, उतना आपके लिए कोई मर मि٤ता है ? अरे भोले त’मको बाल(बच्चा नहीं है । त’म्हारे मर जाने पर वह औरत दूसरी शादी भी तो कर सकती है, जिसके लिए त’म खेत खरीद देने और ३र बनवा देने में लगे ह’ए हो । यह प’र्जी ले जाइए और जो मन में आये सो करीये ।”

रामभरोसे प’र्जी थामते ह’ए थहरा कर बै७ गया । एक बार उसे लगा कि किसी ने उसे भरपूर तमाचा जड दिया हो । आ¤खों का लोर पों५ते ह’ए विसुरने लगा । ..... तो क्या जिसके लिए वह सब क’५ कर रहा है, वह दूसरी शादी कर लेगी ? कर तो सकती है, कोई बाल(बच्चा नहीं है, नव य’वती है । उसकी सत्यता से वह इनकार नहीं कर सकता था । दश वर्षो तक जिस आशा पर वह जिये जा रहा था, वह आशा उसकी बेलौर में ٤ू٤ गयी । परन्त’ टँक्टर ने उसकी रही सही आशा भी तोड दी । स्नेह में ही टँक्टर उसके साथ बह’त बडा अन्याय कर बै७ा था । ऐसा अन्याय जिसको वह सह सकने में असमर्थ था । वह भरभरायी ह’ई आवाज में बोला

“टँक्टर १ अब मैं जी ही कहा¤ रहा हू¤ । अगर मैं उसके रास्ते से ह٤कर उसको ऐसा भी करने में सहयोग करु¤ तो ७ीक ही होगा । अल्हड नवय’वती से गौना किया, वियाह का नेम प’राता रहा, एक बच्चा भी नहीं दे सका मैं उसको । जवानी की अल्हडता क्या होती है, मैंने नहीं जाना । न मैंने जाना और न उसे अपनी बीबी को बा¤٤ ही सका । अगर वह ऐसा भी कर लेगी तो म’भ्रे धरम ही होगा । अभी जीकर ही मैं उसके साथ अन्याय कर रहा हू¤, पाप कर रहा हू¤ ।”

टँक्टर को लगा जैसे कलेजा बाहर हो जायेगा, क्यों उसने ऐसी बात कही ? ऐसा महामानव उसने कही नहीं देखा था । जब से उसने होश सम्भाला, बडे(बडे लोगों के सम्पर्क में रहा परन्त’ वे सब इस एक अदना, अनप९, ग¤वार आदमी के सामने बिल्क’ल त’च्५ थे, चर०ँधूली में भी नहीं । उसने ३ु٤ने ٤ेक दी इस महानता के सामने । भर्राये ह’ए गले से गले मिलने को आगे ब९ा । दोनों दोस्त रोते ह’ए, गले से गले मिले ह’ए थे । एक दूसरे के आ¤सू ٤पक(٤पक कर एक दूसरे की पी७ पर गिर रहे थे ।

DO NOT COPY

DO NOT COPY

ज्ञड

"हाय बाप, हाय दादा, हाय नरेन्दर बब'आ, हमारे स'गना को देखिये, वहा¤ रिक्सा पर है, फिर खून कै कर रहा है । इस बार सबसे बेसी है । रास्ते पर से किसी तरह यहा¤ तक आया है ।"

स'नकर दँक्द्दर हदवदँया ह'आ, सात नम्बर कमरे से निकल कर बाहर अस्पताल के गेद्द पर आया । गेद्द पर रिक्सा में बैठ रामभरोसे का चेहरा देखकर उसके पैरों तले से जमीन खिसक गयी । रामभरोसे ने म'स्क'राकर जो क'छ भी कहा उसने दँक्द्दर के सारे धैर्य को तिरोहित कर दिया ।

"दँक्द्दर १ क्या देख रहे हो ? इतने उदास क्यों हो ? मैं हू¤ राजा सहदेव, राजा रामबालक सहदेव, पा०दव, ।काठमा०दू गया था सरगारोहण में , हिमालय से लुढ्ककर यहा¤ पह'¤चा हू¤ और अब.......",

"बस, बस," दँक्द्दर उसके म'ख पर हाथ रख दिया । जल्दी से भर्ती कराकर बेद पर ले गया । दवाइया¤ चालू हो गयी । इस बार खून बह'त अधिक गिर च'का था ।

रामभरोसे माना नहीं । काठमा०दू संचयकोष का रुपया निकालने चला ही गया । जब संचयकोष का रुपया लेकर चला तो सारे पैसे उसके जेव में थे । आधे रास्ते तक वह ठीक था । उसके बाद पहादों के उवद(खावद रास्ते ने अपना असर दिखाना श'रु कर दिया । सारी देह झकझोरा गयी थी । उसका मन मितलाने लगा , आशंका तो उसको हो गया, परन्त' अपने को किसी तरह रोकते ह'ए भी भैसीया में आकर उसको खून का कै होने ही लगा । द्राइवर देखकर ३वदाया और जल्दी(जल्दी बस हा¤कने लगा । एक बार लोगों ने चाहा कि हेठैंदँ में उसको भरती कर दिया जाय, परन्त' उसे वीरगंज के ही अस्पताल पर विश्वास था । वहा¤ खून भी मिलता है । दँक्द्दर कार्की ने इस तरह उसे दो(चार बार ठीक भी कर च'के हैं । तब तक उसका कै शान्त हो च'का था । अपने ग¤ाव के पास ग०दक पर आकर वह उतरा । उसके पिता काशी की दूकान पर बैठ थे । उसने लपक कर पिता के चरण छू लिए । वर्षो से जिस पिता से वह अलग हो गया था और जिस पिता से बोलता नहीं था, उनके प¤ाव छू लिये । वर्षो का सोया ह'आ पितृत्व यह आदर पाकर गद्(गद् हो गया । उसने हाथ बढँकर प'त्र के सर पर रखा और आशिर्वाद देने लगा । परन्त' रामभरोसे पिता के पैरों पर ही ल'ढक गया । वहा¤ फिर कै श'रु हो गया ।......

उसके पिता वह'त ३बदँये, वह समझ गये । पहले ही उसका चेहरा देखकर वे समझ च'के थे । जल्दी से एक रिक्सा मगवा¤कर और उसे बिठाकर अस्पताल को चल दिये । दँक्द्दर के ३र के पास आकर रामभरोसे बोला कि मैं यहा¤ पर उतरकर थोदा बैठू¤गा, पानी पीउ¤गा ।" अब उसकी शक्ति जवाव दे च'की थी । चन्दलाल पानी के लिए लोढा लाने भीतर चले गये और वह उसी जगह पर बैठ गया । बेचैनी बढ रही थी, सो गया । दँक्द्दर की पत्नी और देढ वरस की उसकी लदकी सरिता, बाहर निकली । सरिता को देखकर वह म'स्क'राया, परन्त' आज वह उसको कंधो पर उठँकर नहीं चल सकता था । सोये ही सोये जेव से ग'दपाक

निकालकर उसे अपने पास ब'लाया । सरिता के लिए वह काठमाण्डू का ग'दपाक लाना नहीं भूला था ।

"आ बेदी १ यह सनेस ले लो । आज मैं त'भ्रे अपने कंधों पर उठकर नहीं नचा सकता हूँ ।"

ढक्कर की पत्नी रो पडी, लपक कर सरिता ने ग'दपाक ले लिया, "क्यों काका, ग'दपाक, काका ग'दपाक, काका, नचाव, ३'माव, ना काहे ।" इतना ही बोलना वह जानती थी । तभी रामभरोसे ने एक बार फिर कै किया, दौड कर लोढा में पानी लिए चन्दलाल आये । और उसकी ५ाती मलने लगे । सरिता यह देखकर सहम गयी । उसका नन्हा मन क'५ भी समझा हो या नहीं, पर उसके म'ँह का ग'दपाक कै किये ह'ए खून में गिर गया । वह अवाक रह गयी । उसके आँखों से आँसू बहने लगे । वह ओठ बाहर निकाल कर बिल'खाने लगी । अगर उसके मन ने क'५ भी नहीं समझा तो ऐसा क्यों ? उसका मन सब क'५ समझ गया । वह अपनी माँ की पल्लू में म'ँह ५िपाकर आँखें फाडकर देखने लगी, भगवान के इस क्रूर लीला को ।

उसके बाद वह अस्पताल में आया । अब भर्ती होकर इलाज होने लगा । खून देना सबसे जरुरी था । खून उसके भाई का मिलता था, परन्त' उसने देने से इन्कार कर दिया । हरबार वह बिना झिझक दे देता था । क'५ दिनों से दोनों भाइयों में बह'त झगडा चल रहा है । फिर वह खून देते(देते हार गया है, कितना खून दे । उसकी माँ भी नहीं चाहती थी । ढक्कर ने सोचा वैज्ञानिक इतने परिश्रम से इतनी जानें बचाकर बह'त बूरा करते हैं । द'नियाँ वाले तो अन्दर ही अन्दर सबको मरने की द'आ करते हैं । पहले जब हैजा, प्लेग आकर जिस तरह से मानवता का सफाया करते थे, वही ठीक था । इसी बहाने मानव का मानवों के प्रति सहान'भूति का एहसास तो बना रहता था । अब तो मौत के समय भी सब बदल जाते हैं । यह अन्दर ही अन्दर उनको मौत के लिए द'आ ही तो है ।

इस बार सब बदले ह'ए थे । सब कहते थे कि यह तो इसी तरह ठीक होकर चला जायेगा । इसको तो बार(बार ऐसा ही होता है । ढक्कर भी इसी वहम में पड गया कि इसको हर बार ठीक ही हो जाता है । इस बार भी संयोग से वीरगंज अस्पताल में आ ही गया है । खून के लिए पैसे नहीं थे । जो पैसा लेकर वह चला था उसे किसी ने रास्ते में ही निकाल लिया था । किसने निकाला था, किसी को नहीं मालूम । बेचैनी, रेस्टलेसनेस से वेहोश रामभरोसे को क'५ भी पता नहीं था ।

जब सप्लीमेंन्ट थिरैपी अच्छी तरह से नहीं हो सका तो एक बार स'बह ही उसको फिर पैखाना से खून आया, म'ँह से खून आया । इस बार अधिक क्या ह'आ कि उसके पेशाब में भी खून आ गया । जब पिशाव से खून आ गया और पैखाना करके उठ तो उसको चक्कर आ गया । वह गिरने ही वाला था कि उसके भाई ने लपक कर उसको सम्भाल लिया ।

"अब कोई उमेंद नहीं है शिवनाथ । म'झे विस्तर पर ले चलो । अब सरगारोहण हो रहा है । ढक्कर अभी तक नहीं आया । अन्तिम ३डी में उससे भेंट नहीं ह'ई । आये तो राम(राम बोल देना । अब बस चलते हैं ।"

भाई के हाथों में सम्भले ह'ए ही रामभरोसे ने कहा । उसके बाद उसने आँखें म'ँद ली । उसकी औरत रोने लगी । सब ढक्कर का इन्तजार करने लगे जैसे ढक्कर आकर सभी सम्भाल लेगा । इसी वहम में पडा ह'आ कि रामभरोसे इस बार भी ठीक ही हो जायेगा, ढक्कर जब नौ बजे अस्पताल में आया तो उसके होश उड गये । रामभरोसे हिपेटिक कोमा में जा च'का था । हिपेटिक कोमा से कोई लौट कर वापस नहीं आता, वह जानता था । फिर भी वह दौड कर सिभील सर्जन के पास गया ।

DO NOT COPY

"सर १ वह रोगी वेहोश हो गया है ।"

"हा मैंने देख लिया है । वह हिपेद्दिक कोमा में जा च'का है, अब क'५ नहीं हो सकता है । आप तो जानते हैं ।" सिभील सर्जन सभी प्रश्नों के उत्तर बद्दे ही निरपेक्ष भाव से एक ही बार दे दिया और फिर चाय कि च'स्की लेने लगे । जैसे उस रोगी को अब सा¤स चलते ही जला दिया जाय तो कोई हर्ज नहीं ।

दँक्द्दर दौद्ध कर फिर उसके पास आया, ३र भागा ,तो मो६र साइकिल के अन्दर एक मेमना आ गया और उसके साथ(साथ ख'द मरते(मरते बचा । दँक्द्दर ने उस जीव की हत्या कर दी थी । जो रामभरोसे के तरह ही नीरीह था । दँक्द्दर निरीह जीवों की ही हत्या करते हैं । उसके ३र पर समाचार स'नाकर उसके लिए खून का जल्दी से जल्दी बन्दोवस्त करने के लिए कहा गया । त'रत एक बोतल खून च९ने लगा । पर उससे क्या होगा । दँक्द्दर अन्तिम समय में उससे क'५ बोल लेना चाहता है । इसलिए वह राम भरोसे(राम भरोसे चिल्ला(चिल्ला कर ब'ला रहा है कि कही वह बोल दे तो अन्तिम समय की बात याद रहेगी । परन्त' रामभरोसे किसी की बातों का जवाव नहीं देता । हाथ पैर प६क रहा है, म'¤ह नोच रहा है, हिपेद्दीक कोमा का अन्तिम स्द्देज आ रहा है । खून चल रहा है, सा¤स चल रही है, हिपेद्दिक कोमा का अन्तिम स्द्देज चल रहा है । स'वह से श'रु होकर जीवन मृत्य' की यह लीला आधी रात तक दँक्द्दर के सामने चलती रही । दँक्द्दर थक गया । अब देख नहीं सकता था, इस क्रूर लीला को, इस भयानक सत्य को । उसने कहा

शिवनाथ १ अब मैं अपने क्वा६र में चलता हू¤ । खून बन्द हो जाय तो खवर करना, मैं बोतल निकाल दू¤गा ।"

दँक्द्दर का सरुवा हो गया था, परन्त' अभी भी वह इसी चक्कर में था कि उसका सरुवा रुक जाये । इसीलिए वह अस्पताल से ५'ट्टी ले रखा था, और वह अभी भी उसी क्वार्द्दर में था । दँक्द्दर क्वा६र में गया । आ¤खों में निन्द कहा¤, बह'त सी बातें सोचने लगा । क्या है जीवन और मृत्य' ? कहा¤ से आता है आदमी ? कहा¤ चला जाता है वह ?

.... अन्तिम समय में बातें नहीं कर सका । क्यों मैं इस वहम में पद्दँ रहा कि हर बार की तरह वह इस बार भी ठीक ही हो जायेगा ? पहले तो वह इसी अस्पताल से कई बार ठीक हो कर चला गया । क्या ह'आ था, खून ही तो गिरा था ? परन्त' दँक्द्दर कार्की दिन रात एक किये ह'ए रहते थे । यह सिभील सर्जन तो एक बार केवल राउ०द्ध में ही जाता था । दँक्द्दर से उसकी प६ती नहीं थी, इसीलिए ।वह सी.द्धी.ओ. अंचलाधीश आता है तो स्पेशल रुम खोल कर दे देता है, रामभरोसे को एक ३द्दँ फर्श पर ही रख दिया । विना स्द्द्रेचर का वैसे ही दो(चार आदमी उठँकर उसको उपर ले गये ।

..... क्यों मैंने ख'द के पैसे से पहले ही खून नहीं च९वा दिया ? क्यों मैं इस बहम में पद्दँ रहा कि इस बार भी वह ठीक हो जायेगा ? दँक्द्दर को ख'द से अपने प्रति तथा अपने पेशे की इस नकली पन से ३ृठाँहो कगयी । कौन कहता है कि दँक्द्दर हर मरीज से सहान'भूति रखता है ? दाक्द्दर हर मरीज से उतना ही सहानुभिति रखता है जितना उसके जेव में पैसा होता है अथवा जितने उसके पद(प्रतिष्ठँ का रौव रहता है । तभी शिवनाथ दौद्धता ह'आ आया ।

"दँक्द्दर साहव १ चलिए भैया ६६ चूके । बोतल का खून तो नहीं खतम ह'आ, स¤सरी खतम हो गयी ।"

दँक्द्दर धीरे(धीरे अंधेरे में कदम ब९ते ह'ए अस्पताल में गया । उसको कोई ३वराह६ नहीं थी । वहा¤ पह'¤च कर उसने उसके पल्स देखा, ५ाती में स्द्देथो लगाया, कही भी जीवन नहीं था तो द्दर्च लेकर प'पिल्स के कोने में जलाया जैसे कही जीवन इसी कोने में ፟ि५पी ह'ई हो । परन्त' जीवन और मृत्य' के सं३र्ष में जीवन स्वाहा हो च'का था । बच्चा जैसे खिलौना नहीं

DO NOT COPY

मिलने पर रो पड़ता है, उसी तरह ढ्क्‍ढर जीवन नहीं मिलने पर फफक(फफक कर रो पड़ा । वह अपने आपको रोक नहीं सका, उसे जीवन कही भी नहीं मिला था । उसने एक वार अपने दोनों हाथों से उसके पैरों को ५'कर माथे से लगाया और उस अस्पताल की चादर से उसकी निस्पन्द चादर को ९क दिया ।.....

रामभरोसे ६ृ६ च'का था । पहली बार उसे वेलौर ने तोढ़, दूसरी बार उस सत्य ने जिसका उद्‌३६न ढ्क्‍ढर ने उसकी जब बीबी के बारे में कहा था, तथा तीसरी बार मौत ने सदा के लिए उसे तोढ दिया । ढ्क्‍ढर आ¤सू पों५ते ह'ए सी९ीया उतरने लगा । रामभरोसे जा च'का था, स्वर्गारोह० में, ढ्क्‍ढर नीचे उतर रहा था, मर्त्य में .... "रामभरोसे त'म तो अपनी बजन के बराबर लाॐ लेकर म'झे गा¤व के बाहर तक पह'¤चाने गया था । मैं क्या लेकर त'म्हे कहा¤ तक पह'¤चाने जाउ¤, क'५ भी तो नहीं मालूम ?

क'५ देर के बाद एक चिता धू¤ धू¤ करके जल रही थी । ढ्क्‍ढर उसे अपने कंधों पर वहा¤ तक पह¤'चा आया था । लपढें उपर आकाश की ओर च९ रही थी । स्वर्गारोह० हो रहा था ।

मंतीरी का एक बो६ कम हो च'का था । किसको पता है कि दूसरे जन्म में उसको नून भात ही मिलेगा या और क'५ ?

ज्ञढ

जिस दिन मास्ढर हरेन्दर ने कह दिया कि "मोढर साइकिल मैंने नहीं उढ़ई, एक बी३ा जमीन बेंचकर सढक पर जमीन मैंने नहीं खरिदी, सढक पर पढी जमीन के पैसे से महल हमने नहीं बनाया "तो ढ्क्‍ढर भौंचक होकर अपने बढे भाई का म'¤ह ताकता रह गया । सारी बातें उसकी आ¤खों के सामने ३ूम गयी । किस तरह सस'राल की जमीन नहीं बेंचने पर गलतफहमी पैदा ह'ई और भाई ३र को देखना ५ोढ दिये । किस तरह शराव की मात्रा अधिक ब९ गयी । जब कर्ज अधिक हो गया तो किस तरह ढ्क्‍ढर प९ई अधूरी ५ैढकर ३र आया । किस तरह अपने हाथों से रोढ पर के ३र को, जिसको ये महल कहते है, अपने हाथों से साफ किया और सिर्फ एक क'र्सी ६ेब'ल रख कर प्रैक्‍ढीस श'रु कर दिया । भगवान ने वरक्कत दी, पैसा आने लगा । ३र का काम सम्भल गया, खेतों में अच्ॐी फसल ह'ई । किस तरह वह अस्पताल में कभी रिक्सा, कभी पैदल जाने पर वह हमेंशा ले६ पह¤'चता रहा, जिससे सिभील सर्जन से झगढ़ हो गया । अपने बदले में बाहर के एक ढ्क्‍ढर को लिफ्‌६ देने पर सर्जन से झगढा हो गया और किस तरह एक दिन सब लोगों ने मिलकर उसका तवादला करा दिया । उस दिन ढ्क्‍ढर खून का ३ू¤६ पीकर रह गया था क्योंकि उनलोगों ने उसके बनी(बनायी प्रेक्‍ढिस पर पानी फेर दिया था । किस तरह गरीवी की वह प्रक्रिया श'रु हो गयी थी और आज इस तरह की बातें हो रही हैं । मंतीरी उन्हीं लोगों का साथ दिया था, दे रहा है । किस तरह पैसा

DO NOT COPY

कमाकर अभी अभी एक प'रानी मो६र साइकिल लिया था, ताकि अस्पताल जाने में स'विधा हो । ८ँक्६र को मो६रसाइकिल कितनी जरुरी होती है, यह विलासिता नहीं आवश्यकता होती है । उसे ब८े भाई कह रहे हैं कि मो६र साईकिल मैंने नहीं उ८ँई । पिता जी ने सब क'५ सह कर एक ३र बनवा दिया था ताकि मेरा बे६ँ आकर इसी में क्लिनिक खोलेगा । उसी को ये महल कह रहे हैं । ८ँक्६र को लगा कि अब यहा¤ रहना भी ठीक नहीं ।

जिस भाई ने सब क'५ किया, प९ँया, लिखाया वही आज इतना बदल क्यों गया है ? ताज्ज'व होती है , पर मैं तो नहीं बदला हू¤ । मैंनें तो कोई अन'चित काम नहीं किया । सस'राल का खेत इसीलिए बिक्री नहीं की क्योंकि सारे खेत तो बिक हू चुके हैं । चार बर्षो से इन्तजार करता रहा कि वे अब स'धर जायेंगे । उस दिन आमोद जी उनकी ओर से दलिल देने आये थे कि दर असल मास्६र साहव अपनी एक ६्यूसन प९ने वाली ल८की पर आशिक हो गये हैं । हरिओम प्रकाश कह रहा था कि शराव पी लेने पर उनको कु५ विशेष स्दीम'लेशन होता है, कोई क'५ भी कहेगा वे मानेंगे नहीं । जब शराव पीकर ८गमगाते ह'ए आते हैं तो आते ही दरवाजा बन्द हो जाता है और कभी मिया तो कभी बीबी की खिलखिलीह६ स'नाई प८ता है । हरिओम प्रकाश कह रहा था थो८ँ(थो८ा वह भी पीती है ।देखिये न कैसे फूल गयी है । सस'राल का खेत नहीं बेंचने का तो वह बहाना करते हैं । शराव को अच्५ा कहने के लिए कैसी(कैसी दलीले खोज लेता है आदमी । उस दिन कह रहे थे, नेवार लोग तो अपने भाई(बहन, मा¤(बाप, बच्चे सभी लोगों के साथ ही पीते हैं तो क्या हो जाता है ? जब गिरेन्दर और रामभरोसे ने कहा था कि रं८ी तो अपने मा¤(बाप, भाई(वहन के साथ नाचती है तो क्या आप भी नाचियेगा ? तो वे क'५ जवाव नहीं दे पाये थे । उस दिन पिता जी से कह रहे थे कि हमको पूर्व जनम की बात दिखलाई प८ती है । गीता की बात दिखलाई प८ती है, कृष्ण भगवान उनको संदेश देते है । शरावखोरी की पागलपन की अवस्था तक पह'¤च च'के हैं । जिसको गीता दिखलाई प८ती है, वह इतना काहिल, जाहील इन्सान होगा ? .... म'झको लिखते हैं कि मैं थका ह'आ इन्सान हू¤ । ये थके ह'ए इन्सान हैं, बू९े बाप सत्तर वरस का होकर अभी भी थका नहीं है, दिन भर बैलों की तरह ख६ता है । थका ह'आ इन्सान रोज शराव पीता है और ८गमगाते हुए आता है । जब नगिनवा बहू स'क'ट्टी बना रही होती है तो ये कचोरा भेजकर थो८ँ उसमें से म¤गवा लेते हैं । फिर स'क'टी के उस रस के साथ ही अपनी अंग्रजी के एम.ए. का भी रस चूसते हैं । सेक्सपियर के रोमियो(जूलिय६ और स'क'टी दोनों का रस एक ही साथ उनके हलक के नीचे उतरता है । वाह १ हाय रे इन्सान । क्या बात है ।

नहीं अब ८ँक्६र एक में नहीं रहेगा । चार वर्षों तक इन्तजार कर लिया । ८ँक्६री अधूरी ५ो८कर आये, चार बरस हो गये । उनसे अलग हो जायेगा । उनको संदेह है कि मेरे सस'राल का हिस्सा उनको नहीं मिलेगा । उनको सस'राल का खेत मिल जायेगा, लेकिन एक में नहीं रहेगा । अलग हो जायेगा और ख'द एक दिन इस ३र से निकल जायेगा । पर इससे अधिक एक दुसरी ही वात पर ८ाक्६र का ध्यान चला जाता था जव रामभरोसि ने यह वात कही तव ८ाक्६र ने उसे इस तरह ८ा¤६ा था जैसे कैकेयी ने मंथरा को ८ा¤६ा होगा । रामभरोसे ने कहा था कि हमको क्या हम आज नहीं तो कल मर जायेंगे पर एक अनर्थ जिससे तुम विल्कुल अनजान हो ,उसे वतलाना हमारा धरम है, सो वतला दिया ।हम रोज मास्६र साहव के वीरगंज आते जाते हैं । मास्६र साहव को हमसे अधिक कोई नहीं जानता । फिर उसने धीरे से कान में कहा कि यह सव तो ना६क है, पीते तो हैं, देशी ७र्रा दो रुपये का, सारा पैसा वे वैंक में जमा बकरते हैं। पता नहीं क्यों इसमें ८ाक्६र को तनिक भी संदेह नजर नहीं आया ।रामभरोसे जो कु५ कहता है ,अगर वह सच है । तो भाइ भाइ का रिस्ता क्या ६६ नहीं जाता?अगर एक ओर ३र में आग लगती है, दुसरी ओर पैसा बैंक में जमा होता है तो भाइ क्या

Draft Copy

भाइ रह गया?वे बैंक में पैसा जमा करें सुख करें । मैं अपने वच्चे को भुख से विलविलाने दु¤गा ।फिर उनकी विलविलाह६ से उनकी भुख और गरीवी की आह से उनका सारा सुख सेज क्या खतम नहीं हो जायगा ?

बच्चा सयान हो गया है, अब क्या ? जहा¤ दिल के ६’क८े(६’क८े कर दिये ज¤ाय, वहा¤ रह के क्या होगा ? सब मिथ्या है । संसार, भाई(भतिजे, रिस्ते नाते सब भ्क्रू७ हैं । पैसे, लालच, और संदेह में लोग क्या(क्या हो जाते हैं ? बिरक्ति हो गयी ट्टँक्द्दर को । आज कैसे(कैसे दिन देखे उसने, श्याम चन्दर, करु०ा, गिरेन्दर, रामभरोसे सब के सव रोग(शोक और भोक के शिकार हो गये । फिर भी इन्सान आ¤खें बन्द किये वह सब क’५ करता है जिससे संसार में त्राहि त्राहि मचा ह’आ है । आज विल्क’ल बिरक्ति हो गयी उसे ।सोच लिया उसने कि अव अलग भी क्या होना ।त्याग दो इस जगत को ।

और एक दिन ट्टँक्द्दर रात को ध’ए¤ से भरे कीचेन ३र में सोया था । अ¤धेरी रात, पत्नी और बच्चे गहरी निन्द में सोये ह’ए थे । ट्टँक्द्दर च’पचाप उ७, एक नजर उनपर ٍ८ाला । पत्नी को देखकर उसे बाप की एकलौती बे८ी के साथ रिस्ता करने का सारा दृश्य आखों के सामने ३ूम गया । सवने मिलकर आज ट्टँक्द्दर को इतना विरक्त बना दिया है । बच्चों को देखकर आखों में आ¤सू ५ल५ला आये । पर उनका चुम्वन लेकर ८ाक्द्दर जल्दी से दरवाजे के बाहर हो गया । बाहर सन्ना६ा था । क’त्ते और सियारों की बोलियों के अलावा सारा गा¤व सो रहा था । क’५ देर बाद वह गा¤व के बाहर पग८ं८ी पर चलने लगा । माईस्थान आया, जो हिन्दूदेश के हर गावों में होता है, फिर सरेह , खेत बाग , बगीचे सव ५ु६ते चले गये । वह फिर लौ६कर वापस नहीं आया ।

कोई कहता है ट्टँक्द्दर साध’ हो गया, कोई कहता है सन्यासी हो गया । कोई कहता है योगी हो गया, कोई कहता है ब’४, गा¤धी हो गया । कोई कहता है अजो४ा जी में मिले थे, कोई कहता है राज३६ में दिखे थे ।

ट्टँक्द्दर कभी(कभी इन जगहों पर ३ूम आता है ।

❁ <u>समाप्त</u> ❁

Copyright @ 2022 by Dr Shiva Shanker Yadava

All rights reserved. No part of this

book may be reproduced or used in any manner

DO NOT COPY

without permission of the copyright owner except for the use of quotations in a book review.

DO NOT COPY